श्री गुलाब वीर ग्रन्थमाला रत्न पञ्चमम्






श्री वीतरागाय नमः

# प्राकृत-पाठमाला

कर्त्ता

शतावधानी पं०मुनि श्रीरत्नचंदजी स्वामी

प्रकाशक—

भैरोंदान जेठमल सेठिया

बीकानेर

वीर संवत् २४५४ विक्रम सं० १९८४ ई० स० १९२७

प्रथमावृत्ति ५०० न्योछावर रू १।)

लागत ५०० प्रति की

५०४) छपाई ४२ फार्मा

१६५) कागज रीम ११

१६८) संशोधन

६२॥) सिलाई व कच्ची जिल्द बधाई =) प्रति

---

कुल रु० ८९९॥)

पुस्तक मिलने का पता—

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया

जैन लाइब्रेरी (शास्त्रभण्डार)

मोहल्ला मरोटियों का

बीकानेर (राजपूताना)

# शुद्धिपत्र

| | पृष्ठ, | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| उपोद्घात | २ | ३ | प्रकृतभाषा | प्राकृतभाषा |
| | ३ | १५ | हैमचेन्द्राचार्ये | हेमचन्द्राचार्ये |
| | ४ | १७ | सस्कृत | सास्कृत |
| | ८ | १८ | रुप | रूप |
| | ११ | १२ | प्रदशोनी | प्रदेशोनी |
| | १२ | १६ | तै | ते |
| | १४ | २१ | अध्यायामा | अध्यायोमा |
| | १५ | २ | जेनोने | जैनोने |
| | १५ | ५ | कइक | कइक |
| | १८ | १४ | प्राकृतरुपान्तार | प्राकृतरूपान्तार |
| | १९ | २ | आगावामा | आपवामा |
| | २२ | १६ | —रुपे | -रूपे |
| | " | २३ | " | " |
| | २३ | १ | भाषाना | भाषाओ |
| | २७ | १ | रुपो | रूपो |
| | " | २ | " | " |
| | ३५ | १५ | गणा'यो | गणान्यो |
| | ४१ | २१ | करता | करता |
| | ४८ | ३ | रुपो | रूपो |
| पाठमाळा | १ | ६ | थोच्छ | थोच्छ |
| | १ | ६ | ताथ | तथा |
| | २ | २० | पद्दहर | पर्दहर |
| | २ | २४ | गोरिहर | गोरीहर |
| | ३ | २ | नेभितक | निमित्तक |
| | ३ | १८ | गुरल्लापा | गुरुल्लापा |
| | ८ | ८ | पूर्व | पुव |
| | ११ | ६ | मदन | मद्न |
| | " | २१ | कइ | कई |
| | १६ | १८ | तिग्मम | तिग्मम् |
| | | २२ | ररसी | रस्सी |

| पृष्ठ, | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध, |
| --- | --- | --- | --- |
| २१ | ६ | हरिसण | हरिसण |
| २५ | २४ | ग थाउ | गाथाउ |
| ३० | १८ | प्रकार | प्रकार |
| ३८ | ४ | मयउमग | उगत |
| ४१ | १० | कपडा | कपडु |
| ४२ | २१ | पयमवल्लिग्र | पयमपलिग |
| ४८ | २० | उत्तरा भयण | उत्तरज्भयण |
| " | २२ | मुतरगने | मुतरूणो |
| ४८ | ८ | हियम | हियग्र |
| " | १२ | उत्तराज्म- | उत्तरज्भ |
| ४६ | १५ | माणइ | आसाणइ |
| ४७ | २२ | सम्मनगा | सदूनमा |
| ४८ | १९ | रुपा | रूपा |
| ५० | [illegible] | जागया | जागया |
| " | ८ | मात्र | मात्र |
| " | १५ | नवकारवाला | नवकारवाली |
| ५१ | ३ | सद | सद(शद्) |
| [illegible] | १३ | उत्तराज्झयणम्मि | उत्तरज्भयणम्मि |
| ५३ | २४ | (स्याध्याय) | (स्वाध्याय) |
| ५४ | १३ | साग | सिग |
| ५५ | ५ | " |  |
| " | ८ |  | " |
| [illegible] | १० | , | , |
| ५७ | २० | मक्कारारा | क्कारमा |
| ५८ | ११ | रुपा | रूपा |
| " | १२ | गणिज | गणिग्र |
| ५९ | ८ | थाह | थाइ |
| ६० | १८ | मोदितरा | दाढिमरा, खीकसेर |
| [illegible] | ३ | घरामा | घरा मा |
| " | १३ | गच्छई | गच्छइ |
| " | १६ | प्रजत्ति | प्रज्ञप्ति |
| ६७ | १२ | (स्वज) | (स्वज्) |
|  |  | धाय ते | थाय छे |

| पृ॰सं॰ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ६६ | १० | हुकुम | हुकम |
| ७० | ११ | दाईण गोसु | दाईण मणोसु |
| ७२ | १९ | पढज्जइ | पढिज्जइ |
| ७३ | ८ | (कार्यते इत्यर्थ ) | (कायते इत्यर्थ ) |
| ७५ | ३ | सारु | सार |
| ७७ | ४ | सस्स | जस्स |
| ,, | ७ | सिम | सिम् |
| ,, | १७ | कोस्सा | किस्सा |
| ७९ | १० | घफइ | वयइ |
| ८३ | २४ | वभजघाणा | वैभवशाला |
| ८५ | ४ | पम्हुच्छ | पम्हुट्ठ |
| ,, | ७ | कदोह | फदोह |
| ८८ | ८ | धणशब्दवत् | धेणशब्दवत् |
| ८८ | १६ | जींदगी | जन्म |
| ९० | २० | घम | धर्म |
| ९८ | १६ | पट्ठि | पट्ठि |
| ९९ | ६ | पातर | पातर |
| ,, | २१ | मज्भ(मध्य) | मज्भे (मध्ये) |
| १०० | २० | माहुण | साहुण |
| १०१ | १० | जगाना | जगाना |
| १०४ | ७ | सावज्भ | सावज्ज |
| १०७ | ८ | अम्हहिस | अम्हहिंस |
| १०८ | ४० | हिमि का | हिमि, मका |
| ११० | १२ | धनमस्यातीति | धनमस्यास्तीति |
| ११२ | ६ | पिअरमेत्र | पिअरमेव |
| ११८ | ३ | एताना मात्रम् | एताव मात्रम् |
| १२७ | ६ | सीमाइ | सीयाइ |
| १२७ | १८ | दोवारिअ | दावारिअ |
| १२८ | ८ | पिपतति | पिपतति |
| १२६ | १८ | (शिस्त ग्रतिक) | (शिक्षाप्रतिक) |
| १३० | २ | समुप्पज्जित्था | समुप्पज्जित्था; |
| ,, | १४ | वयासी | वयासी |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १३३ | ४ | कम्म | कनम |
| ,, | १३ | निप्पश्र | विप्पश्र् |
| १४३ | २५ | पुधग | पुधग |
| १५५ | २३ | पितुपति | पितुवती |
| १५७ | २८ | निन्दुरा | सखिन्दरा |
| , | २५ | एतश्रद्द | ए-श्रद्द |
| १५१ | ८ | सीलक | सीलको |
| ,, | २१ | शुद्दसलम् | शद्दसलम् |
| १५३ | ८ | पिठर | पिठर |
| १५५ | २८ | सम्मडिश्रा | सम्मडिआ |
| १५७ | २ | उत्थारा | उत्थाहो |
| ७५ | १५ | शार्ङ्गम | शाङ्गम् |
| १८६ | १७ | (स्थामन) | (स्थामन्) |
| २०१ | १० | तामोतरा | तामोतरा |
| २०३ | २३ | नियमापालिना | नियमापलिनी |
| २०७ | ११ | सयुक्त | सयुक्त |
| २२६ | ११ | (पाणहद) | (पाणद्द) |
| २३२ | १९ | पोहों | थाहा |
| २६८ | १८ | पे | प |
| २८५ | १० | कल्लाण | कल्लाणि |
| | १३ | णिरिणिरणश्राणि | णिरिक्खिश्राणि |
| ,, | २० | पोहइ | वीहइ |
| २८७ | ८ | प्रधम्मकज्जाणि | अ धम्मकज्जाणि |
| २५५ | ८ | देखे | दसाय |
| २६१ | ८ | श्रामाथी | श्रामार्था |



Rajasthan

# उपोद्‌घात

प्राचीन आर्य पुरुषोनो अनुभव जे भाषाना गर्भमा

भाषाना प्रकार

व्यवस्थित थया छे अने हजारो वर्ष व्यतीत थया छता टकी रह्यो छे, ते भाषानु स्वरूप जाणवाने जिज्ञासु के मुमुक्षु वर्गने इच्छा थाय ए स्वाभाविक छे भारतवर्षना आर्यनरत्नोने वहन करनारी मुख्यत्वे बे भाषा छे, संस्कृत अने प्राकृत अनुयोगद्वार सूत्रमा कह्यु छे के "सक्कया पागया चेव पसत्था इसि भासिया" षड्भाषाचन्द्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के "भाषा द्विधा संस्कृता च प्राकृती चेति भेदत." । संस्कृत भाषाना बे प्रकार छे, वैदिक संस्कृत अने लौकिक संस्कृत, अथवा प्राचीन

संस्कृतभाषा

संस्कृत अने अर्वाचीन संस्कृत ऋग्वेदादिनी भाषा वैदिक अथवा प्राचीन संस्कृत अने भारत रामायणादिनी भाषा लौकिक संस्कृत अथवा अर्वाचीन संस्कृत छे खासकरीने कौमार अने पाणिनीय आदि व्याकरणो रची भाषाने संस्कार पमाडी नियमबद्ध करी त्यारथी संस्कृतनाम प्रसिद्धिमा आव्यु होय अने वैदिकभाषाने ते विशेषण पाछलथी लगाडवामा आव्यु होय ए वधारे संभवित लागे छे अने ए रीते संस्कृत शब्दना अर्थनी बराबर उपपत्ति थाय छे रूपक परिभाषामा कह्यु छे के—

'कौमारपाणिनीयादि संस्कृता संस्कृता मता'' संस्कृत भाषा मुख्यत्वे साहित्यमाज वपराएली होवाथी तेमां विशेष फेरफार न थतां ... रही तेथी तेना अवान्तर

पड्या किन्तु वैदिक अने लौकिक ए बे भेदमाज अटकी रही सम्कृत सह चारिणी बीजी भाषानु नाम प्राकृत भाषाछे

प्राकृतभाषा प्राकृतशब्द प्रकृतिशब्दने तद्धित प्रत्यय अण् लगाडवाथी बन्यो छे प्रकृतिशब्दनो अर्थ स्वभाव या निसर्ग थाय छे तेथी प्राकृतशब्दनो शब्दार्थ स्वाभाविक अथवा नैसर्गिक थाय छे शब्दार्थ प्रमाणे प्राकृत भाषानो अर्थ स्वाभाविक भाषा या नैसर्गिकभाषा थाय छे अर्थात जे भाषा ने काप कूप करी सस्कारित न बनावी होय किन्तु जे प्रमाणे साधारण लोकोमा बोलाती होय ते प्रमाणे जेनु स्वरूप कायम रह्यु होय ते प्राकृतभाषा प्राकृतशब्दनो साधारण अथवा असस्कृत अर्थ पण कोषमा बताववामा आव्यो छे आ उपरथी सस्कार पाम्या वगरनी साधारण लोकोनी बोलाती जे भाषा ते प्राकृत भाषा एवो फलितार्थ थाय छे आ एक मत छे आ मत प्रमाणे प्राकृतभाषा सस्कृतभाषा नी पुत्री नही पण माता छे अर्थात् प्राकृत भाषा सस्कृत मा थी जन्म पामी नथी पण सस्कृत भाषा ( वैदिक भाषा शिवायनी अर्वाची न सस्कृत भाषा ) प्राकृत भाषामांथी सस्कार पामी उत्पन्न थइ छे उपर जणाव्या प्रमाणे सस्कृत नाम जो पाछळ नु होय तो वैदिक भाषा पण वेदना समय नी बोलाती भाषा होवी जोइए अने तेने 'सस्कृत ए विशे षण लगाडता प्राकृत ए विशेषण लगाडवु वधारे उचित भासे छे अर्थात् वेदनीभाषा ने प्राचीन सस्कृत कहेवा करता प्राचीन प्राकृत कहीए तो वधारे बन्धबेसतु थाय तेथी अर्वाचीन प्राकृत नी माता पण होइ शके आ बाबतमां युष्मद् शब्दना प्रथमा बहुवचनना रूपो आपवु वधारे

ध्यान खेचे छे वैदिक युष्मे अने अस्मे रूपो प्राकृतनां तुम्हे अने अम्हे नी साथे गाढ सम्बन्ध दर्शावे छे ज्यारे संस्कृतना युष्म अने वय तद्दन अलग पडी जाय छे

मतान्तर आ मतनी सामे एक बीजो मत उपस्थित थाय छे ते एम कहे छे के "प्रकृतिः संस्कृत तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्" प्रकृति एटले संस्कृत, तेमा उत्पन्न थएल के तेमाथी उतरी आवेल ते प्राकृत अर्थात् संस्कृत भाषामांज थोडो थोडो विकार थतां प्राकृत भाषा बनी आवी अर्थ करी प्राकृत भाषाने संस्कृतभाषानी पुत्री तरी के मानी लेना प्राकृतिक के नैसर्गिक अर्थने उडावी दे छे म्होटे भागे ब्राह्मण पंडित समाजमा आ मत वधारे प्रचलित छे, तेनु कारण ते समाजनु संस्कृत भाषा प्रत्येनु मान छे हिंदुधर्मना घणाखरा पुस्तको संस्कृत भाषामा ज होवाथी तेमनी संस्कृत भाषा तरफ वधारे मानवृत्ति रहे ते स्वाभाविक छे। पण सवाल ए थाय छे के हेमचन्द्राचार्ये आ मतना केम आदर कर्यो? तेणे पोताना व्याकरणमा प्राकृत भाषाने संस्कृत भाषामा थी उत्पन्न थएली मानी तेनु शु कारण? आ प्रश्ननो जवाब एम आपी शकाय के हेमचन्द्रना समय पहेला केटलाक वखतथी जमानानु वलण संस्कृत भाषा तरफ वली चुक्यु हतु तेनी असर जैनसमाज उपर पण पुरे पुरी थइ हती अत एव जैन आचार्योए सूत्र उपरनी टीकाओ बौद्धना धर्मघोषनी माफक मूल आगमनी भाषामा न लखता संस्कृत भाषामा लखी सूत्रो उपर भाष्य अने निर्युक्ति स्चाइ त्या सुधी प्राकृत भाषानो आदर रह्यो पण चूर्णि अने टीकाना समयमा वलण बदलायु हेमचन्द्रना

समयमां अने त्यार पछी आजसुधी पण हजो ते वलण केटलेक अंशे चालु छे ए असमर्थीज हेमचंद्रे पोताना सिद्धहेम व्याकरणमां मुख्य स्थान संस्कृतने आप्युं सात अध्यायो संस्कृत भाषा माटे अने एक ज अध्याय प्राकृत भाषा माटे राखवामां आव्यो जो हेमचंद्राचार्यने संस्कृत भाषा जेटलुं प्राकृत भाषा माटे मान के वलण होत तो सामान्य प्राकृत अथवा आर्ष प्राकृतनुं संस्कृतानुगत नहीं पण स्वतंत्र व्याकरण रच्या विना रहेत नहीं संस्कृतना पठन पाठने लोकोनुं वलण संस्कृत तरफ थयेलुं हतुं आनी असर एटले सुधी थई के प्रकृतिशब्दना अर्थ संस्कृत भाषा कोई पण कोषमां न होवा छतां उक्त महाशयोए प्रकृति शब्दनो अर्थ संस्कृत स्वीकार्यो एटलुं तो कहेवुं जोईए के प्रकृति शब्दना शक्यार्थ स्वभाव निसर्ग वगेरेने कोराणे मुकी लाक्षणिक अर्थ करवो ए प्राकृत भाषाने अन्याय आपवा बराबर छे आवा करतां प्रकृति शब्दने बदले संस्कृत भाषा वाची संस्कृत शब्द ज राख्यो होत अने तेने तद्धित प्रत्यय लगाडी 'संस्कृते भव तत आगत वा सांस्कृत' एम संस्कृत शब्द बीजी भाषा माटे वापर्यो होत तो शुं खोटुं हतुं? प्रचलित प्राकृत शब्दने नवीन संस्कृत शब्दमांथी याद न करी शकाय तो प्रचलित प्रकृति शब्दना अर्थने नवीन कल्पित अर्थमांथी केम याद करी शकाय ए विचार संस्कृत तरफना पक्षपातने दूर करी न्याय बुद्धिथी करीए तोज प्राकृतशब्दने खरो इन्साफ आपी शकाय प्राकृत भाषा संस्कृतमांथी उत्पन्न थयेली छे एवा अभिप्राय बंधावानुं कारण ए छे के प्राकृत व्याकरण रचनाराओ

रहेलाइनी खातर संस्कृतशब्दो लइने तेना प्राकृतरूपो बताव्या तेमां जे फेरफार जणायो तेज मात्र नियमोथी सिद्ध कर्यो थाकीने माटे संस्कृतवत— कही प्राकृतनी भलामण आपी एटले प्राकृत व्याकरणने सदाय संस्कृत व्याकरणने आधीन रहेवु पड्यु अने तेथी प्राकृत भाषा संस्कृतजन्य छे ए अभिप्राय वधारेने वधारे मजबूत थतो गयो प्राकृत पाठमालामां पण तेज पद्धतिनु अनुसरण कर्यु छे, ते एट लामाटे के भाषानु ज्ञान मेलववा उपरान्त व्याकरणानी तु लना करवामा कोइने गुचवण उभी न थाय अर्द्धमागधी- आर्षभाषानु व्याकरण के जे नवीन तैयार करवामा आव्यु छे, तेमा उक्त पद्धतिनु अनुसरण न करता प्राकृतभाषानी स्वतन्त्रता बतावावाने स्वतन्त्रपणे प्राकृत रूपोनी सिद्धि करीछे।

लोकभाषा-प्राकृत भाषाने साहित्यमा स्थान मलवाना

प्राकृतभाषा ना प्रयाग

युग महावीर स्वामी अने गौतम बुद्धना समयथी शरू थाय छे बन्ने नी जन्म भूमि मगध देश अने मातृभाषा मागधी हती परन्तु उप देश भाषा महावीर स्वामिनी अर्द्धमागधी अने गौतमबु द्धनी पाली हती अर्द्धमागधी मगध अने शूरसेन देशनी सरहद उपर ते वखते जे भाषा चालती तेनु नाम अर्द्धमागधी ,मगधदे शनो अर्द्ध भाग ते भाषाए रोक्यो हतो माटे तेनु नाम अर्द्ध- मागधी पड्यु हाय ए एतिहासिक दृष्टिए ठीक लाग छे केटलाक एवो अर्थ करे छे के अर्द्ध शब्दो मागधी भाषाना अने अर्द्ध शब्दो बीजी भाषाना म ल्या तेथी तेनु नाम अर्द्धमागधी,परन्तु जैन साहित्य तपा- सता ए प्रमाणे शब्दो मली शकता नथी—मतलब

आ हिसाबे अकारान्तशब्दोना प्रथमाविभक्तिना एकवचन माटे मात्र मेळववा जेवीज सा मर्यादा थये, केमके प्रथमाना एकवचनमां महाराष्ट्री अने शौरसेनी भाषामां ओकार थाय छे अने मागधी भाषामां एकार थाय छे.

जैन आगममां ओकार वाळा प्रयोगो अने एकार वाळा प्रयोगो लगभग अर्धा अर्ध होवाथी समज्यो छे ते उपरथी प्राकृत नामनी रचना करेल तो थइ शके छे "शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्द्धमागधी" "राक्षसी श्रेष्ठिचेटानुकस्यार्द्धमागधी" ए भरत कहेली अर्द्धमागधी ते साधनाटकमां ज वपराएली अर्द्धमागधी प्राकृत अर्द्धमागधी था तद्दन भिन्न छे ते तेना आ एक प्रयोग उपरथी समजी शकाशे 'अज्जवि णो सामिणीए हिलिसदाशीएण पुत्त उवणामदि'

प्राकृत भाषाना आज विभाग पाली नामथी प्रसिद्धिमां आव्या पाली शब्दना मूल अर्थ पंक्ति श्रेणि पाली भाषा इत्यादि थाय छे. बौद्ध साहित्यमां धर्मशास्त्रना कोई पण वचन उद्धृत करता वखते तेने समजावती वखत आचार्यो ते वचन पंक्तिना माटे पाली शब्दनो प्रयोग करता हता तेमज मूलग्रन्थना अर्थमां पण ते शब्दनो उपयोग करता तेथी धीरे धीरे पाली समयमां ते धर्मशास्त्रोनी भाषा पाली नामे ओळखावा लागी आनुं बीजुं नाम मागधी पण छे ते नाम देशना नाम उपर थी पड्युं छे एथी स्पष्ट थाय छे के ते भाषा मगधदेशमां चालती हती नाटकोमां मागधी समान जे प्राकृतभाषा आवे छे ते अर्द्धमागधी अने पालीथी तद्दन भिन्न छे तेमां र ना ल अने स ना श

थाय छे जे उपरनी त्र भाषा मा नथी थतु—जेम संस्कृत निर्झर शब्द पाली अने अर्द्धमागधीमां निज्झर अने नाटकनी मागधीमा निज्झल थाय छे आ भेदने लइने कोइ ? जैन साहित्यनी भाषा ने जैन मागधी, बौद्ध साहित्यनी भाषा ने पाली मागधी अने नाटकनी मागधीने प्राकृत मागधी पण कहे छे प्राकृत भाषाना आ साहित्य प्रवेशयुगने मागधी युग कहीए तो ते खोटु नथी कारण के मगधदेशमांज तेने प्राथमिक साहित्य स्थान प्राप्त थयु छे उपरनी त्रे प्राचीन भाषामानी अर्द्धमागधी भाषानु कोई खास व्याकरण उपलब्ध नथी जो के चडनु प्राकृत लक्षण थोडेक अशे ते भाषानो स्पर्श करे छे अने हेमचद्रे कोई कोई स्थले पोताना प्राकृत व्याकरणमा आर्षभाषा तरीके तेनी नोंध लीधी छे पण पूर्ण व्याकरण एके नथी पाली भाषा ना त्रण व्याकरण मुख्य छे कच्चायन, मोग्गलायन अने सद्दनीति कच्चायनने आधारे रूपसिद्धि, महानिरुत्ति, चूलनिरुत्ति, निरुत्तिपिटक तथा बालावतार वगेरे व्याकरणो रचाया छे मोग्गलायनने आधारे पयोगसिद्धि,मोग्गल्लानवुत्ति, सुसद्दसिद्धि तथा पदसाधनी वगेरे ग्रथो रचाया छे अने सद्दनीतिने आधारे एक चुल्लसद्दनीति नामे ग्रथ रचायो छे आ बधामा कच्चायन प्राचीन छे तथापि तेना करता रूपसिद्धि मोग्गल्लानवुत्ति, पदसाधनी तथा पयोगसिद्धि वधारे उपयोगी छे सद्दनीति ए पूर्वोक्त बधा करतां श्रेष्ठ छे रूपसिद्धि व्याकरण म्होटु नही तेम न्हानु नही त्रता बधा विषयोनो तेमा समावेश करवामा आव्यो छे एटले विशेष उपयोगी छे एम कहेवाय छे के कच्चायन बुद्धना समकालीन

हता अने ते कच्चायन थेरे कच्चायन व्याकरण रच्यु तेना उपर घणी टीकाओ अनुटीकाओ थई छे रूपसिद्धि अने बालावतार पण कच्चायनना ग्रन्थो लईने रचाया छे बालावतार सिंहलमा साधारण रीते प्रचलित छे

पाली भाषामा बुद्धना हीनयानपथनां महावंश जातका वगेरे धर्म पुस्तको उपरान्त अशोकना शिलालेखो लखाया छे हिमालय थी सिन्धु अने सिन्धुना किनाराथी गंगाना मुखसुधी अशोकना समयमा प्राये आ भाषा बोलाती हती एम शिलालेखो उपरथी साबित थाय छे इ स पूर्व त्रीजीशताब्दीथी मांडीने इ स नी बीजी शताब्दीसुधीना शिलालेखो घणे भागे उपर कहेल भाषामा छे ।

शिलालेखो

अर्द्धमागधी अने पाली साहित्य रचना पछी प्राकृतना मध्य युग नो प्रारम्भ थाय छे आ मध्य युगमा महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश वगेरे भाषाओ प्रादुर्भाव पामे छे जे भाषा बोलाती न होय किन्तु केवल साहित्यमा वपराता होय ते भाषामाथी बीजी भाषा न जन्मे अर्थात तेनु परिवर्तन न थता एकने एक रूप रहे एटले अवान्तर प्रकारो न थाय तेमज जे भाषा बोलाती होय पण साहित्य बद्ध थई न होय तेमा परिवर्तन थाय छता अवान्तर प्रकारो न थाय कारण के परिवर्तन थवाने पूर्वे रूपो नष्ट थया होय छे एटले जुनी भाषानो लोप अने नवी भाषा नी उत्पत्ति थाय छे जे भाषा बोलाती होय अने साहित्यबद्ध थई होय तेना अवान्तर प्रकारो समये कालना प्रवाह साथे बोलाती भाषानु कालभेदे अने देशभेदे परिवर्तन थता तेमां नवीनता आवे छे,

मध्यप्राकृतयुग

अने साहित्यमा एने ग रूपे रहे छे वधारे फेरफार थतां बोलाती भाषा साहित्यनी भाषाथी जुदी पडे छे आ नियम प्रमाणे बोलाती प्राकृत भाषा साहित्य निबद्ध थया पछी तेना प्रकारो पडवा माडया अने जुदा जुदां नामो धारण करवा माड्या

महाराष्ट्री मध्यमयुगनी प्राकृतभाषामा महाराष्ट्री प्राकृत मुख्य छे शौरसेनी वगेरे बीजी प्राकृत भाषा करता आ वधारे प्रसिद्धिमा आवी, ते एटले सुधी के बीजी-भाषाओ ज्यारे पोत पोताना विशेषणोथी ओलखावा लागी। जेम शौरसेनीप्राकृत मागधीप्राकृत इत्यादि, त्यारे महाराष्ट्री प्राकृत महाराष्ट्री विशेषण विना शुद्ध प्राकृत शब्दथी ओलखावा लगी काव्यादर्श--१–३५ मा दडी कहे छे के "महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृष्टप्राकृतविदुः" आजसुधी पण प्राकृत भाषा तरीके महाराष्ट्री प्राकृतनोज व्यवहार थाय छे प्राकृत व्याकरणकारोए मुख्यपणे महाराष्ट्री प्राकृतभाषानाज नियमो रच्या छे शौरसेनी आदि बीजी भाषाओना सामान्य नियमो माटे महाराष्ट्री प्राकृत भाषानी भलामण आपी छे बीजी भाषाओना मात्र विशेष नियमोज बताव्या छे महाराष्ट्री प्राकृतनीज सामान्य भाषा तरीके गणना करी छे महाराष्ट्री भाषा पण अर्द्धमागधी अने पाली भाषानी पेठे बोलाती अने साहित्यनी भाषा हती मध्ययुगमा गोदावरीना विशाल प्रदेश उपर महाराष्ट्र देशमा ते भाषा बोलाती हती अकारान्त नामने छेडे प्रथमा एकवचनमा एकार नही पण ओकारज आवे ए महाराष्ट्रीनु खास लक्षण छे अने ते अर्द्धमागधीथी जुदी पडे छे. बे स्वर वचे

आवता असयुक्तव्यजनानो लाप करवामा बीजी घणी भाषाओ करता आ भाषा आगल वधेली छे. अर्द्ध मागधी अने पालीमा नकारनो णकार विकल्पे थतो ते महाराष्ट्रीमा नित्य थया एटले नकारनो सर्वथ अभाव थया अर्वाचीन मराठी भाषा आ भाषा उप थी उतरी हाय एम सभव छे महाराष्ट्री प्राकृतमा रचा यला काव्यो महाराष्ट्रीनी स्वार पण घणा वखणाता हता सेतुबधकाव्य गउडवहोकाव्य वगेरे महाराष्ट्री प्राकृतमा रचा एला छे कालिदास आदिना सस्कृत नाटकोमा पण महारा ष्ट्रीनो उपयोग थया छे ते नाटकोमा स्त्रीपात्रो शौरसेनी प्राकृत बोले छे छता तेमना गीतो महाराष्ट्री प्राकृतमा होय छे

महाराष्ट्री प्राकृतनो ब्राह्मण ग्रन्थकारो करता जैनश्वे ताम्बर ग्रन्थकारोए वधारे आश्रय लीधो छ सुरसुन्दरीच

जैनमहाराष्ट्री रिय, पउमचरिय, कुमारपालचरिय, कुमारपा लप्रबन्ध, समराइच्चकहा, सुपासनाहचरिय वगेरे अनेक ग्रन्थो महाराष्ट्री प्राकृतमा रचाया छे, पण आ ग्रन्थोनी भाषामा जैन आगमनी भाषानी छाया पड्या विना रही नथी—एटले के अर्द्धमागधी नी माफक नकारनो क्वचित् णकार अने क्वचित् नकारनो नकारज रह्यो छे के जे महाराष्ट्री प्राकृत ने समत नथी, उद्वृत्त अकारनी यकार श्रुति पण महाराष्ट्री प्राकृतमा नथी छता उपरना जैन ग्रथोमा यकारश्रुति छे आ बाबत वररुचि अने हेमचन्द्रना व्याकरणनी तुलनामा स्पष्ट पणे दर्शावी छे खास करीने आ बे बाबतमा जैनमहाराष्ट्रीप्राकृत महाराष्ट्रीप्राकृतथी जुदी पडे छे.

"शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते"

शौरसेना मध्ययुगनी महाराष्ट्री समकालीन बीजी प्राकृत भाषा शौरसेनीना नामथी प्रसिद्ध थइ हती मथुरानी आसपासना प्रदेशो जे शूरसेन नामथी ओळखाता,ते प्रदेशमा आ भाषा बोलाती शूरसेनप्रदेशना नाम उपरथी भाषानु नाम शौरसेनी पड्यु दिगम्बरोनु धर्मसाहित्य शौरसेनी भाषामा रचायु छे कालीदासना संस्कृतनाटकोमा विदूषको तथा स्त्रीपात्रो आ भाषा बोले छे राजशेखरकविनी कर्पूरमंजरी नाटिकामा तो खुद राजा पण आ प्राकृत बोले छे

"मगधोत्पन्नभाषा तां मागधीं सम्प्रचक्षते"

पूर्व तरफना प्रदेशोनी भाषा मागधी प्राकृत हती पूर्वोक्त पाली अने अर्द्धमागधीथी आ मागधी भिन्न

मागधी छे आ मागधी कोई धर्मसाहित्यमा निबद्ध थएली नथी पण संस्कृत नाटकना हलका पात्रोमा बोलाती भाषा छे रनो ल सनो श अने प्रथमाना एक वचनमा अकारान्त नामने छेडे आवतो एकार आ भाषाना खास लक्षणो छे मागधी प्राकृतमा दकार कायम रहे छे अने ज ने स्थाने य थाय छे मृच्छकटिकमा शकार जे भाषा बोले छे ते शुद्ध मागधी छे मागधीनु मूल शौरसेनी छे एटले तेमा शौरसेनी शब्दो तो आवे छे, परन्तु ते उपरांत केटलेक स्थले महाराष्ट्री शब्दो पण आवे छे अभिज्ञानशाकुंतलमां रक्षिपुरुष तथा धीवरनी भाषा मागधी छे वेणीसंहार तथा उदात्तराघवमाना राक्षसनी भाषा पण मागधी छे मुद्राराक्षस वगेरेमां एनो उपयोग थयो छे

**पैशाची**

'पिशाचदेशनियत पैशाचीद्वितय भवेत' मध्ययुगनी चोथी भाषा पैशाची छे. पाण्ड्य आदि देशो पिशाचना नामथी प्रसिद्ध छे. ते आ प्रमाणे—

पाण्ड्यकेकयबाह्लीकसिंहनेपालकुन्तलाः ।
सुदेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजनास्तथा ॥
एते पिशाचदेशाः स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत् ॥

आ देशोमा बोलाती भाषानी पैशाची सज्ञा छे. आ भाषामा पण साहित्य रचना थई हती. गुणाढ्यकविनी बृहत्कथा पैशाची भाषामा रचाई हती. बृहत्कथा आजे लुप्त थई छे तथापि तेनो सार लई क्षेमेन्द्रकविए बृहत्कथामञ्जरी रूपे तेनो संस्कृत अनुवाद कर्यो, ते विद्यमान छे ते पण संक्षिप्त होवाथी सोम देवभट्टे तेनो बीजोवार अनुवाद करी विस्तारथी कथासरित्सागरनामा ग्रन्थनी रचना करी जे हाल मोजुद छे. महाराष्ट्रीमा नकारनो सर्वत्र णकार थई गया हतो तेथी विपरीत णकारनो नकार आ भाषामा पुनरुज्जीवित थयो. गुजराती भाषामा ल ने स्थाने ळ वपराय छे ते पैशाचीमाथी आव्यो होय एम जणाय छे.

**चूलिका पैशाची**

मध्ययुगनी पाचमी भाषा चूलिका पैशाची छे. वर्गना त्रीजा अक्षरने स्थाने प्रथमाक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीयाक्षर बनाववामा आ भाषा पैशाचीथी जुदी पडे छे. बीजी बधी बाबतमा पैशाचीने मळती आवे छे. एटलामाटे वररुचि आदि केटलाक व्याकरणकारोए आने पैशाचीमा अन्तर्गत करी तेने जुदी गणत्रीमा नथी लीधी अने तेना खास नियमो जुदा दर्शाव्या नथी. आ भाषानु साहित्य पण हाल उपलब्ध जणातु नथी.

आभीरादिगिर' काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः ।
शास्त्रेषु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितमिति ॥ दण्डी

मध्ययुगनी छठी, भाषा अपभ्रंश छे संस्कृत नाटकमां आहिर आदिनी भाषा अपभ्रंश छे दंडिना

अपभ्रंशभाषा

मत प्रमाणे संस्कृत शिवायनी बधी भाषाओ अपभ्रंश छे पण ते व्याजबी नथी संस्कृतनी माफक बीजी भाषाओमां पण साहित्यरचना थइ छे व्याकरणो पण थया छे खास जुदां २ नामो धारण कर्यां छे ते बधी भाषाओने अपभ्रंश केम कही शकाय? अपभ्रंश भाषा ए प्राकृत भाषा नो अवान्तर विभाग छे परन्तु खरू के बोलानी भाषामां विकार थवाना वधारे संभव छे तेथी ते साहित्य शृंखलाथी छुटी पडीने अपभ्रंश नाम धारण करी जुदी भाषा तरीके ओलखाइ हाय अने तेथी अर्वाचीनयुगनी अपभ्रंशना अनेक भेद थया हाय ते संभवित छे तथापि मध्यमयुगनी अपभ्रंश भाषा के जेने व्याकरणकारो ए छठी भाषा तरीके नियमबद्ध करेली छे ते एकज प्रकारनी छे तेमां साहित्यरचना पण थई छे मार्कंडेयना व्याकरणमां नागर, व्राचड अने उपनागर एम त्रण भेद अपभ्रंशना जणाव्या छे ते पण मुख्य त्रण भेद, बाकी नरभेदनो जेटला देश तेटला छे पण आ भेदो अर्वाचीन युगनी अपभ्रंशना होय एम जणाय छे

## प्राकृत व्याकरणो

उपर कहेल मध्यम युगनी छ भाषाओ उपर अनेक व्याकरणो थया छे तेमां सौथी प्राचीन

वररुचि प्राकृत लक्षण

वररुचि प्राकृतलक्षण नामनुं व्याकरण छे

ने राम करीने प्राचीन युगनी सामान्य प्राकृतभाषा
व्याकरण के प्राकृत भाषाना अवान्तर भेदो पड्या नहोत
ने वरतातु ते व्याकरण होवु जोइए ते अमिश्रित रा
नथी पाछलना सुधारकाए ते व्याकरणने महाराष्ट्रीप्राकृत
व्याकरण बनाववाने केटलाक उमेरो करेलो छे जो तेने
घडना मूलसूत्रो अने पाछलथी उमेरायला सूत्रोनु केटली
जुनी प्रतो मेलवी, मुकाबलो करी पृथक्करण कर्यु छे इ
सन् १८८० मा कलकत्तामा छपायेल पुस्तकमा बनेनु पृ
करण दर्शाव्यु छे

घडना व्याकरण पछी मध्ययुगना प्राकृत भाषाओ उपर

वररुचिना प्राकृतप्रकाश

साथी पहेलु वररुचि नु प्राकृत प्रका
ए नामे व्याकरण छे तेमां वरर
चिए सूत्रो रच्या छे अने भामह तेना उपर वृत्ति बनावी
छे वररुचिना प्राकृत प्रकाशमा चार भाषाओज आवे
छे उपर कहेल छ भाषाओ पैकी चूलिका पैशाची अने
अपभ्रश ए बे भाषा तमा नथी गणावी ते उपरथी एम जणा
य छे के तेना समयमा पैशाचीथी चूलिका पैशाची जुदी
नहि पडी हाय अने अपभ्रंश ते स्वतत्र भाषा तरीके ग
णनामा नहीं आवी हाय

त्यार पछी हेमचन्द्राचार्यनु सिद्धहेम व्याकरण उपस्थित

हेमचन्द्रन सिद्धहेम

थाय छे तेमा सात अध्यायोमा संस्कृत
व्याकरण अने आठमा अध्यायना चार
पादोमा प्राकृत भाषानु व्याकरण छे हेमचन्द्रे उपर कहेल
छए भाषाओनो समावेश कर्या छे हेमचन्द्रना समय बारमी
शताब्दी छे ते पहेला छए भाषाओ प्रगट थई चुकी हता

एम जणाय छे हेमचंद्रे सूत्रो अने वृत्ति बन्ने पोतेज बनाव्या छे जैनोने तो ते माननीय छे पण जैनेतराए पण तेनो सत्कार कर्यो छे वररुचिना व्याकरणमानी प्राकृत भाषा ज्यारे शुद्ध महाराष्ट्री प्राकृत छे, त्यारे हेमचंद्रनी प्राकृत भाषा कइक जैन आगमनी छाया मिश्रित थवाथी जैन महाराष्ट्री प्राकृत कही शकाय

हेमचंद्राचार्य पछी त्रिविक्रमनु प्राकृत व्याकरण आवे छे त्रिविक्रम दिगंबर जैन छे तेणे सूत्रो अने तेनी वृत्ति बन्ने बनाव्या छे

त्रिविक्रमनु प्रा० व्या

षड्भाषाचंद्रिकाकार लक्ष्मीधर कहे छे के त्रिविक्रमे वृत्तिज बनावी छे, सूत्रो वाल्मिकीना छे आना माटे बे मत छे केटलाक कहे छे के सूत्रो पण त्रिविक्रमना छे अने केटलाक वाल्मिकीना कहे छे प्रो० कमलाशकर त्रिवेदी कहे छे के आ वाल्मिकी रामायणना कर्ता नही पण ए बीजा छे आ व्याकरणमां पण पर्याप्त छए भाषाना समावेश करवामा आव्यो छे, भाषाओनो क्रम पण हेमचंद्रनी माफक ज छे त्रिविक्रमे सूत्रोनो अनुक्रम पाणिनीयनी अष्टाध्यायी उपर काशिकावृत्तिनी माफक जालवी राख्यो छे त्रिविक्रमनो समय बारमी अने पदरमी शताब्दी वचेनो छे, केमके हेमचंद्रना ग्रन्थनो त्रिविक्रमे उल्लेख कर्यो छे अने त्रिविक्रमना ग्रंथनो कुमारस्वामिए रत्नापणमां उल्लेख कर्यो छे, हेमचंद्रनो समय बारमी सदी अने कुमारस्वामीनो समय सोलमी सदी छे ए बेनी वचे त्रिविक्रनो समय छे

जे सूत्रो पर त्रिविक्रमे वृत्ति करी छे तेज सूत्रो उपर लक्ष्मीधरे वृत्ति करी छे तेनु नाम छे षड्भाषाचंद्रिका. लक्ष्मीधरे सूत्रोने

षड्भाषा चंद्रिका

जालव्यां नथी पण भट्टोजी-दीक्षिते सिद्धान्त-कौमुदीमा जेम पाणिनीयना सूत्रोना क्रम फेरव्यो छे तेम लक्ष्मीधर पण फेरव्यो छे आ वृत्ति घणी विस्तृत छे नामना रूपो अने धातुना रूपो हेमचन्द्र करता घणा वधारे आप्या छे देशी शब्दोनो पण तेमा समावेश कर्यो छे लक्ष्मीधरना समय त्रिविक्रम पछीनो छे, कारणके षड्भाषाचन्द्रिकामा लक्ष्मीधरे त्रिविक्रमनो उल्लेख कर्यो छे

प्राकृत रूपावतार

लक्ष्मीधरनी माफक सिंहराजे उक्त सूत्रो उपर वृत्ति रची छे तेनु नाम प्राकृत रूपावतार छे सूत्रोनो अनुक्रम षड्भाषाचन्द्रिकानी माफक छे षड्भाषाचन्द्रिका जेवी विस्तारवाली आ वृत्ति नथी पण संक्षिप्त छे, तथापि तेमा रूपाख्यानना वाचनमा खास न्यूनता रही जतो नथी सिंहराजे जरूरीआत पुरता सूत्रोनी योजना करी छे केटलाक सूत्रो छोडी दीधा छे इ हल्टो (E Hultzsch) आ पुस्तक सन् १९०९मां कलकत्ता एशियाटीक सोसायटी तरफथी प्रकाशित कर्यु छे तेमा दरेक सूत्रनी सामे हेमचन्द्रना सूत्रनी सरखामणी करी तेना सूत्रोना अंको पण आप्या छे विद्यार्थीने माटे आ व्याकरण घणु सगवडवालु छे आ व्याकरणमा युष्मद् अस्मद् वगेरे शब्दोना रूपो बीजा व्याकरणो करता घणा वधारे आप्या छे, तेमा केटलेक स्थले रूपोमा कृत्रिमता जणाइ आवे छे

आ उपरात अप्पय दीक्षित रचित प्राकृत मणिदीप, रूपी वेदा कृत प्रा० व्या० प्राकृतमंजरी के जे वररुचिना सूत्रो उपर पद्यमयवृत्ति छे ते मुद्रित छे तथा केटलाएक अमुद्रित छे. प्राकृतमणिदीप अने प्राकृतमंजरी केवल महाराष्ट्री प्रा.

कृत भाषानाज व्याकरण छे डोक्टर ओफ्रेस्टना केटेलोगस् केटेलोगोरममा षड्भाषाना नामे बीजा त्रण ग्रथो गणाव्या छे.

१ षड्भाषा चन्द्रिका—भामह-कविकृत

२ षड्भाषामजरी

३ षड्भाषासुवतादर्श

प्रोफेसर एस आर भडारकर सस्कृत हस्तलिखित ग्रथोनी शोधमा नीकल्या ते वखतनी बीजी मुसाफरीना रीपोर्टमा षड्भाषा विचार नामनो ग्रथ होवानु जणावे छे अने तेमा सस्कृत सहित बीजी पाच भाषानो विचार छे

लक्ष्मीधर दुर्गणाचार्यकृत षड्भाषारूपमालिका नामनु पुस्तक होवानु जणावे छे

आ शिवाय शेषकृष्ण रचित प्राकृतचद्रिका नामे पुस्तक छे तेमा अपभ्रश शिवाय पाच भाषानो विचार कर्यो छे छठी अपभ्रश भाषानु सूचन कर्यु छे पण वधारे विचार नथी कर्यो कारण के जुदा जुदा घणा देशोनी ते भाषा छे

आ सर्वा व्याकरणो करता वधारे भाषाओनो विचार मार्कंडेयना प्राकृतसर्वस्वमा छे तेमा एकदर सोल भाषाओनो सग्रह छे ते आ प्रमाणे—

नच भाषाविभाषाप भ्रशपैशाचभेदत ,
चतुर्विध तत्र भाषा विभाषा, पञ्चधा पृथक् ।
अपभ्रशास्त्रयस्तिस्र' पैशाच्यश्चेति षोडश ॥ १ ॥
महाराष्ट्री शौरसेनी प्राच्यावन्ती च मागधी ।
इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा ॥ २ ॥
शाकारी चैव चाण्डाली शाबर्याभीरिका तथा ।
टाक्कीति युक्ता पञ्चैव विभाषा न तु षड्विधा ॥ ३ ॥

नागरो ब्राचडश्चोप- नागरश्चेति ते त्रयः ।
अपभ्रंशा पर सूक्ष्म भेदत्वान्न पृथड्मता ॥ ४ ॥
कैकेय शौरसेन च पाञ्चालमिति च त्रिधा ।
पैशाच्यो नागरा यस्मात्तेनाप्यन्या न लक्षिता. ॥ ५ ॥
इति षोडशधा भाषा मया प्रोक्ता प्रयत्नतः ।

परतु आ सोल भाषा ओजा अर्वाचीन युगना मिश्रण थी बने छे. प्राकृत पाठमालामा मात्र मध्यमयुगनी भाषाओनो विचार करवामा आव्यो छे ।

पाठमालानी रचना

प्राकृत पाठमालानी रचना करवामा उपर जणावेल व्याकरणो पैकी नीचेना व्याकरणोनी सहाय लेवामा आवी छे—

१ चण्डनु प्राकृतलक्षण २ वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश ३ हेमचद्रना सिद्धहेमनो आठमो अध्याय. ४ लक्ष्मीधरनी षड्भाषाचन्द्रिका ५ सिंहराजनु प्राकृतरुपावतार खास करी ने हेमचद्रना प्राकृत व्याकरण नु वधारे अनुसरण कर्युं छे जे रूप षड्भाषाचद्रिका के प्राकृतरूपावतारना वधारे शुद्ध लाग्यु ते तेमाथी लीधु छे कये २ ठेकाणे कया २ व्याकरणो जुदा पडे छे तेनो मुकाबलो दरेक पाठमा करी तफावत तुलनामा दर्शाव्यो छे सरखामणीमा चण्डना प्राकृत लक्षणनो पण उपयोग कर्यो छे वररुचिना प्राकृत प्रकाशमाथी पाठमालामा कई लेवामा आव्यु नथी पण हेमचद्रादि करता तेमां केटली न्यूनता छे अने तेना करता हेमचद्रादिमां केटलो वधारो थयो छे तेनी मात्र सरखामणी करी छे पाठमालामा भाषाओनो क्रम व्याकरणमां दर्शावेल भाषाओना क्रम प्रमाणेज राखवामा आव्यो छे

छ भाषामां मुख्य भाषा महाराष्ट्री प्राकृत, ते पण जैनमहाराष्ट्री प्राकृत ने अनुसार रूपो आणवामां आव्यां छे. पाठमालामां प्रथम प्राकृत भाषाना सामान्य नियमो उदाहरण सहित योजी सामान्य नियमावलि आपवामां आवी छे. त्यार पछी २१ पाठोमां प्राकृत नाम अने धातुनां रूपाख्यानोनी सिद्धि दर्शावी छे

पाठोना क्रमनी योजना

ते पण विद्यार्थिनुं मगज कटाली न जाय अने धीमे २ कठण प्रयोगो सरल थता सहेलाइथी समजी शकाय तेवो उद्देश ध्यानमां राखी एक पछी एक एम चडते क्रमे योजवामां आव्या छे एक पाठ नामनो अने एक पाठ धातुनो एम वाराफरती नाम अने धातुनो विचार करवामां आव्यो छे जेमके पहेला बोधपाठमा अकारान्त तथा आकारान्त पुल्लिंग नामो, बोधपाठ ३ जा मा इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त पुल्लिंगना नामो, बोधपाठ पांचमामां अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगना नामो, बोधपाठ ७ मा मा आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग नामो, बोधपाठ ९ मा मां ऋकारान्त त्रणे लिंगना नामो,बोधपाठ ११ मा मा अन्नन्त त्रणे लिंगनां नामो, बोधपाठ १३ मामा अकारान्त सर्व नामो, बोधपाठ १५ मामां एतद्, इदम् तथा अदस् सर्वनामो, बोधपाठ १७ मामां सख्यावाचक शब्दो,बोधपाठ १९ मामां युष्मद् तथा अस्मद् सर्वनामोनां रूपो अने बोधपाठ २१ मामां लिंगपरिवर्तन अने अव्ययो दर्शाववामा आव्या छे

पाठ ४ थामां अकारान्त शिवाय स्वरान्त धातुओनो वर्तमानकाल, बोधपाठ ६ मामां प्रेरकभेद तथा उपसर्गो, बोधपाठ ८ मामां आज्ञार्थ तथा विध्यर्थ काल, बोधपाठ १० मामां केटलाक कृदन्तो, बोधपाठ १२ मामां भावकर्म, बोधपाठ १४ मामां भूतकाल तथा कर्मणि भूतकृदन्त, बोधपाठ १६ मामां भविष्यत्काल, बोधपाठ १८ मामां सर्वकालना साधारण प्रत्ययो, बोधपाठ २० मामां तद्धित अने बोधपाठ २२ मामां कारकसमासादि अवशिष्टविधिनो विचार दर्शाववामां आव्यो छे. प्राकृत भाषामां देश्यशब्दोनो पण समावेश थाय छे तेथी केटलाक बोधपाठोमां देश्यशब्दो अने देश्य क्रियापदो वापरवामां आव्यां छे. आ बधा बोधपाठोथी मेळवेलुं ज्ञान अपूर्ण रही न जाय ए हेतुथी २२ मा पाठमां एक गद्यकथा योजवामां आवी छे के जेना वांचनथी शीखेला नियमो ताजा थई वधारे उपस्थित रहे. त्यारबाद विशेष नियम सिद्ध प्राकृत नामना विशेष आदेशो आप्या छे. त्यारपछी केटलाक धातु ने विशेष आदेशो थाय छे ते दर्शाव्या छे. आहिंसुधीमां प्राकृत भाषाना नियमो समाप्त थाय छे. त्यारपछी परिशिष्ट तरीके बीजी पांच भाषाओना छ पाठो गोठव्या छे. तेना पहेला पाठमां शौरसेनी भाषाना खास नियमो उदाहरणसहित दर्शाव्या छे. तेमज बीजा पाठ २ जामां मागधी भाषा, बोधपाठ ३ जामां पैशाची अने चूलिका पैशाची, बोधपाठ ४-५-६ मां अपभ्रंश भाषाना खास नियमो बताव्या छे. उक्त छ पाठोमां वाक्यो ने बदले कुमारपाल-चरित्रमांनी ते ते भाषा ने लगती गाथाओ लई योजवामां आवी छे।

एकंदर २८ बोधपाठो छए भाषाना छे दरेक बोधपाठ
शब्दार्थ मा आवी गयेला शब्दोनो तथा गाथा अने कथा
मा आवेला कठिण शब्दोनो समावेश शब्दको-
षमा करवामा आव्यो छे तेनी साथे अव्ययो तथा धातु
ओनो पण संग्रह करवामा आव्यो छे काई ॰ ठेकाणे
आगला बोधपाठमा आवी गयेल शब्दोनु विद्यार्थिने विस्म
रण थवानो संभव होवाथी वाक्यरचनामा मुश्केली थाय
अने शब्द शोधवामा कालक्षेप थाय ते न थवा पामे एटला
माटे ते शब्दो छेवटना शब्दकोषमा गोठववामा आव्या
छे आथी विद्यार्थिने जल्दी शब्दार्थनी उपस्थिति थता ते
झडपथी वाक्ययोजना करी शके

प्रथम २० पाठमा विद्यार्थिने प्राकृत भाषानो गुजराती
वाक्य रचना अनुवाद अने गुजराती भाषाना प्राकृत अनु-
वाद करता आवडे एटला माटे बने भाषाना
वाक्यो नवा तैयार करी योज्या छे ते ते बोधपाठमा
आवेला नियमने अनुसरीनेज वाक्य रचना करवानी होवाथी
संपूर्ण स्वतंत्रताने अभावे साहित्य ग्रंथ जेवी सर्वांगसुंदरता
वाक्य रचनामा नहि आवी शकी होय एटलुज नहि
पण कोई ठेकाणे वाक्योमा कृत्रिमता पण कदाच प्रतीत
थशे; पण तेना माटे अन्य उपाय न होवाथी ते चलावी
लीधा विना छुटको नथी पाछलना ८ बोधपाठोमा तो
हेमचंद्रना कुमारपाल चरित्रमाथी तैयार पद्यो लेवामा आ
व्या छे अने ते स्वतंत्रपणे रचाएला छे एटले तेमा उपरनो
सवाल उपस्थित थतो ज नथी

दरेक बोधपाठमा आपवामा आवेला वाक्यो बनी

प्रा० गु० अनुवाद

शके तेटलां सरल बनाव्यां छे छतां शरुआतना विद्यार्थिने कदाच कठिण लागे के न समजाय तेथी तेनी सरलता माटे दरेक पाठना प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद अने गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद करी आपवामा आव्यो छे अने ते पाठमां न योजता अलायदु पुस्तकने छेडे राख्यु छे ते एटलामाटे के विद्यार्थी पोतानी बुद्धिथी बनी शके तेटलो अनुवाद करी ले अने ते आपेला अनुवाद साथे सरखावी ले जे भाग न समजाय तेज तेमा जोइने नक्की करी ले आ स्थले विद्यार्थिने एटलो सूचना आपवो योग्य धारीए छीए के वाक्यो नु भाषांतर करती वखते एकदम पुस्तकमा आपेल भाषांतर तरफ नजर न दोडावतां पोतानी जाते भाषांतर करीने पछीज आपेला भाषांतर साथे सरखामणी करी शुद्ध अशुद्ध तपासी लेवु

उपसंहार

आ पाठमाला आजथी चौद वर्ष पहेला प्राकृतमार्गोपदेशिका रूपे कच्छ माडवीमा तैयार करवामा आवी हती दरम्यान पंडित बेचरदास जीवराज तरफथी एक प्राकृत मार्गोपदेशिका छपाई ब्हार पडी एटले आ मार्गोपदेशिका एमने एम राखी मुकवामा आवी त्यारपछी संवत् १९८० नी सालमा बीकानेरना शेठ अगरचंदजी भेरोदानजी ने ते कोपी बतावावामा आवता तेमणे ते पुस्तकने छूए भाषानी पाठमाला तरीके योजी आपवानी प्रेरणा करी तेथी उक्त मार्गोपदेशिकाने प्राकृत- पाठमालारूपे फेरवी घणा सुधारा वधारा साथे तैयार करी छे आज काल संस्कृतभाषानी पेठे मागधभाषा युनिवर्सिटीमा दाखल थई छे पण संस्कृत

करतां तेनु साहित्य ओछुं होवाथी ते भाषाना विद्यार्थिओ पूरो लाभ लई शक्ता नथी अने तेथी जैनधर्मना प्राचीन तत्त्वोना अभ्यासथी तेओ वंचित रहे छे आ पाठमाला लोक भाषामां एटलामाटे तैयार करी छे के संस्कृत जाण-नारा तेमज न जाणनारा पण तेनो लाभ लई शके अंते पाठकवर्गने एटली भलामण आपवी उचित छे के आ पा-ठमाला थी पुरातनी भाषाओनो अभ्यास करी आने लगती अर्द्धमागधी भाषामा रचाएल जैन आगमना तत्त्वोनुं दोहन करी पोताना आत्माने अने समाजने तेनो लाभ आपे सुज्ञेषु किं बहुना?

मुनि रत्नचन्द्र

सं १९८१ फाल्गुनवदी १



# तुलना.

सामान्य नियमावलि—

प्राकृतप्रकाशमां स्वरथी पर अनादि असंयुक्त न ना नित्य अने आदि असंयुक्त न ना विकल्प णने बदले सर्वत्र न नो ण कर्यो छे. वररुचि प्रमाणे प्राकृतमां न ने स्थान ज नथी. क्, ग्, च्, ज् इत्यादिनो लोप थतां शेष (अवशिष्ट) रहेला अवर्णनो अवर्णथी पर होयतो लघुप्रयत्नवाळो य थाय छे ए नियमनो वररुचिना प्राकृतप्रकाशमां अभाव जणाय छे. ए उपरथी सिद्ध थाय छे के जैन महाराष्ट्री प्राकृतमां आवा प्रयोगो रूढ थयेला होवाथी हेमचन्द्रे पोताना व्याकरणमां आ नियमो दाखल कर्या हशे. उपरि लोपः कगडतदपषसाम् ॥३।१॥ ए सूत्रमां ड्, ष्, क् (जिह्वामूलीय), तथा प् (उपध्मानीय) गणाव्या नथी. स्वरथी पर अनादि असंयुक्त फ् ना भ् तथा ह् आदेश ने बदले मात्र भ् आदेश कर्यो छे जेमके— सेभालिआ (शेफालिका), सभरी (शफरी), सभल (सफलम्), परन्तु सेहालिआ, सहरी, सहल आप्या नथी. व्यञ्जन पर छता ङ्, ञ्, ण् तथा न् ना अनुस्वारने बदले व्यंजन पर छता न तथा ञ् ना अनुस्वार उपरांत म् कर्यो छे जेमके— विंझो, विम्झो (विन्ध्य), वंचणीअं, वम्चणीअं (वञ्चणीयम्), स्प ना फ आदेश उपरांत क्वचित् सि आदेश थाय छे एम कह्युं छे जेमके— पाडिसिद्धी (प्रतिस्पर्द्धी) हेमचन्द्र पाडिसिद्धी तथा पडिसिद्धीने प्रतिसिद्धि शब्दथी सिद्ध करे छे. वळी आदिमां तनो द कर्यो छे, परन्तु हेमचन्द्रनुं एवुं कहेवुं छे के ते तो शौरसेनी तथा मागधीमां थाय छे,

प्राकृतमा तेम करवु उचित नथी प्राकृतप्रकाशमा नीचे आपेला सामान्यनियमो जणाव्या नथीः—

१, २, ३, ४, ५ ९, १३, १५ (ख), २२, २३, २५, २६, २८ (अतर्गत त्र= त्त, द्र= द्द (विकल्पे), ३८ अतर्गत दीर्घथी पर होय तो, अनुस्वारथी पर होय तो, ३९अन्तर्गत त्व=च, थ्व= छ, द्व=ज्ज, ध्व= झ, ह्व=म्भ,(विकल्पे), ग्म्=म्म (विकल्पे), ४०, ४५, ४६

षड्भाषाचन्द्रिकामा श्यश्चत्सप्सामनिश्चले ॥ १।४।१२३। ए सूत्रनी वृत्तिमा ह्रस्वथी पर होवानु लक्ष्मीधरे जणाव्यु नथी नियम३०मामां श्मूना पू ने बदले छ नो पू जणाव्यो छे नियम ३९मामा श्न,ष्ण,स्न, ह्न,ह्ल,क्ष्ण, ना ण्ह उपरात त्स्न नो ण्ह जणाववानो रही गयो छे एम धारीने लक्ष्मीधरे जणाव्यो छे परन्तु ज्योत्स्ना शब्दना सयुक्त त्स्न् माना ऊर्ध्व त नो नियम ३२ मा थी लोप थाय छे, अने पछी जे स्न् शेष रहे छे, तेनो ण्ह् थाय छे, एटले त्स्न् जणाववानी जरूर नथी, नियम३६मामा अनुस्वार थी पर होय नो पण शेष तथा आदेशना द्वित्व नो निषेध कर्यो छे, परन्तु दीर्घाञ्च ॥ १।४।८७। ए सूत्रमा अनुस्वारनो निषेध कर्या नथी, नियम ४३ माथी सिद्ध थता तणुवी, लहुवी, गरुवी, बहुवी , पुहुवी तथा मउवी शब्दमाना वीने बदले लक्ष्मीधरे ई कर्यो छे नीचे आपेला सामान्य नियमो जणाव्या नथी (जो के त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेला छे) १३ अन्तर्गत निर् ना इ नो नित्य दीर्घ थाय छे, १४ अतर्गत ए नो ए अने ओ नो ओ थाय छे, ४४ अतर्गत प्रावृष् शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृतमा पुल्लिगमां वपराय छे

प्राकृत रूपावतारमा नीचे आपेला सामान्य नियमो जणा
या नथी —
११, १३ अन्तर्गत निर् ना इना नित्य दीर्घ थायछे, १७(ख)
२३ अन्तर्गत स्वर छे पर जेने एवा अन्तर्, निर् अने दुर्
एटलाना अन्त्य व्यंजनना लोप नथी थतो, २७, २८ अतर्गत
ड्=ड्, ड्= ल् (प्राय )फ= भ्, तथा ह (प्राय ), र्=र्, ह्=द
(विकल्पे ), ३६ अन्तर्गत त्य=च्, ध्य=झ्, ह्=झ्,थ्व=फ्,
क्म् तथा ग्म=प, ह्न=म्ह (विकल्पे),ग्म=म ,(विकल्पे)ह्न=ल्ह
४०, ४४

बोरपाठ १ ला—

चण्ड पोताना प्राकृतलक्षण नामना व्याकरणमा प्र०ए० मा जिणे रूप वधार आपे छे ,परन्तु प० ए० मा जिणत्ता, जिणाओ, जिणाउ,जिणाहि,जिणेहि एटला रूपो आपवामा आव्या नथी,अने प० ब० मा जिणाइ तथा जिणाए रूपो वधारे आपवामा आव्या छे वररुचि पोताना प्राकृतप्रकाशमा तृ० ए० मा जिणेण, तृ०ब० मा जिणेहि, जिणेहि,प०ए०मा जिणत्ता,जिणाहिन्तो,प० ब० मा जिणत्तो जिणाओ, जिणाउ,ँजिणाइ, जिणेहि, प० ब० मा जिणाण, स० ब० मा जिणेसु ,स० ए० मा जिणो, जिणा, एटला रूपो आपता नथी लक्ष्मीधर पोताना षड्भाषाचन्द्रिकामा स०ए० जिणा रूप आपता नथी सिंहराज पोताना प्राकृत रूपावतारमा स० ए मा जिणा आपता नथी प्राकृतशब्द रूपावलि मा स०ए० मा जिणा नथी

बोरपाठ २ जो—

प्राकृतलक्षणमां गच्छए, गच्छन्ते, गच्छिरे, गच्छसे

गच्छिमा, गच्छिमु, गच्छिम, एटला रूपो आपवामा आव्यां नथी. गच्छित्था ने बदले गच्छित्थ छे ए पक्षवाला रूपो नथी प्राकृतप्रकाशमा प्र० ब० मा गच्छन्ते, गच्छिरे एटला रूपो आपवामा आव्या नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा प्र० ब० मा गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्यु छे उ० ए० गच्छिम्मि रूप वधारे छे. प्राकृतरूपावतारमा प्र० ब० मा गच्छिरे ने बदले गच्छइरे रूप आप्यु छे

वीसपाठ ३ जो—

प्राकृतलक्षणमा प्र० ब० मा हसउ, हसओ ने बदले हसीउ, हसीओ रूपो आप्या छे द्वि० ब० मा हसीउ, हसीओ रूपो वधारे आप्या छे तृ० ब० मा हसीहिं नथी प० ब० मा हसित्तो, हसीओ, हसीउ रूपो आपवामां आव्या नथी स० ब० मा हसउ, हसओ ने बदले हसीउ, हसीओ रूपो आप्या छे प्राकृतप्रकाशमा प्र० ब० मा हसउ, हसी रूपो नथी अने हसओ ने बदले हसीओ रूप छे द्वि० ब० मा हसी रूप नथी तृ० ब० मा हसीहि हसीहिं रूपो नथी स० ब० मा हसीसु रूप नथी प० ए० ब० तथा प० ब० ना रूपो आपवामा आव्या नथी सिद्धहेममा तृ० ब० मा हसीहि, हसीहिं तथा गुरुहि, गुरुहिं रूपो आपवामा आव्या नथी अने प० ए० मा हसित्तो, गुरुत्तो तथा प० ब० हसित्तो, हसीउ, गुरुत्तो रूपो आपवामा आव्या नथी प्राकृतरूपावतारमा प्र० ब० मा हसउ तथा हसओ रूपो नथी प्राकृतशब्दरूपावलिमा प० ए० ब० मा हसित्तो तथा गुरुत्तो नथी अने स० ब० मा गुरवो, गुरुणो रूपो छे।

वीसपाठ ४थो—

प्राकृतप्रकाशमा रूपो आपवामा आव्या नथी

बोधपाठ ४ थो—

प्राकृतलक्षणमा प्र० तथा हि०न० मा अच्छि तथा धणुं रूप बधारे छे प्राकृतप्रकाशमा प्र० ब० मा नेत्ताणि, नेत्ताइं नेत्ताइँ, अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ धणूणि, धणूइं, धणूइँ रूपो नथी परन्तु नेत्ताइं, अच्छीइं धणूइं रूपो छे पड् भाषाचन्द्रिकामा प्र०तथा हि०न०मा अच्छि तथा धणु रूप बधारे छे प्राकृतरूपावतारमा स० न०मा नेत्तो रूप बधारे छे मार्गापदेशिकामा प्र०न० मा अच्छि तथा धणु रूप नथी

बोधपाठ ६ ठो—

प्राकृतलक्षण तथा प्राकृतप्रकाशमा अ तथा आन आदेश नथा कर्या, प्राकृतरूपावतार तथा मार्गोपदेशिकामा पाठाहि० काराहि रूपो नथी

बोधपाठ ७ मा—

प्राकृतलक्षणमा प० प० मा मालान मालाए रूपो बधारे छे प्राकृतप्रकाशमा हि० ए० मा माला, बुद्धी प्र० तथा हि० ब० मा वाणीआ वाणी, तृ० ए० मा मालाअ तृ०ब० मा मालाहि, मालाहिँ बुद्धीहि, बुद्धीहिँ रूपो नथी सिद्धहेममा प० ए० तथा ब० मा मालत्तो, बुद्धित्तो रूपो नथी पड्भाषाचन्द्रिकामा स० ए० मा माले रूप बधारे छे प्राकृतशब्दरूपावलिमा तृ० ए० मा बुद्धिणा रूप बधारे छे अने बुद्धीअ, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीए, प० ए० तथा ब० मा बुद्धित्तो, स० ए० मा बुद्धि रूपो नथी

बोधपाठ ८ मो—

प्राकृतप्रकाशमा गच्छहि, गच्छामु, गच्छिमु गच्छे

जसु, गच्छेज्जहि, गच्छेज्ज, गच्छ, रूपो नथी सिद्धहेममा उ० ए० हसमु, हसिमु, गच्छमो, गच्छिमो रूपो नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा उ० ए० तथा ब० ना रूपो आप्या नथी प्राकृतरूपावतारमा सिंहराज पोतानी वृत्तिमा कहे छे के उ० ए० ना मु प्रत्यय पहेला अकारनो आकार तथा इकार न करवो, परन्तु उ० ब० ना मो प्रत्ययना साहचर्यथी मु पण बहुवचननोज लेवो

बोधपाठ ९ मो—

प्राकृतप्रकाशमा प्र० ए०मा कत्ता रूप नथी अने स० ए० नु रूप ज आप्यु नथी सिद्धहेममा स० ए० मा कत्तारा रूप नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा स० ए० मा कत्तारा रूप नथी, अने बिजा बिजा रूपो वधारे छे प्राकृतरूपावतारमा स० ए० मा कत्तारा ने बदले कत्ता रूप छे अने बिजा रूप वधारे छे प्राकृतशब्दरूपावलिमा स० ए० मा कत्तारा रूप नथी

बोधपाठ १० मो—

प्राकृतप्रकाशमा तुआण, तुआणं इअ प्रत्ययो नथी सिद्धहेममा इअ प्रत्यय नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा प्रत्ययोज आप्या नथी प्राकृतरूपावतारमा इअ प्रत्यय नथी

बोधपाठ ११ मो—

प्राकृतप्रकाशमा स० ए० मा राअ वधारे छे स० ब० राइणो, प्र० तथा द्वि० ब० मा राइणो ष० ब० मा राइण विगेरे, स० ब० मां राईसु, तृ० ए० मां अप्पणिआ, अप्प णइआ रूपो नथी सिद्धहेममा स० ए० मा राअ रूप नथी अने राअ रूप ... । ... एम कह्यु छे ...

चन्द्रिकामा प० तथा द० ए० मा रायाणाणो, रायाणो रूपो बताव्यां छे प० ब० मा अप्पाणो ने बदले अप्पाणा रूप छे प्राकृतरूपावतारमा प० ब० मा अप्पणा ने बदले अप्पाणा रूप छे भाषावर्दशिकामा प० ब० मा राअणा ने बदले राआणो छे

बाग्पाठ १२ मा—

प्राकृतप्रकाशमा ण्ह आदेश नथी आप्या

बाग्पाठ १३ मा—

प्राकृतप्रकाशमा तद् शब्दने प्र० ए० मा विभक्ति सहित सो आदेश नित्य कर्या छे ते बदले स रूप तथा षड्भाषा चन्द्रिकामा तद्शब्दने प्र० ए० मा विभक्ति सहित स आदेश नथी कर्यो प्राकृतरूपावतारमा सर्व शब्दना प्र० ए० मा सन्वे रूप बताव्युं छे

बाग्पाठ १४ मा—

प्राकृतप्रकाशमा सौ न्ह प्रत्यय तथा अहंसि रूप आप्या नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा सौ, हीं, हीअ ने बदले सि, हि, हिअ प्रत्ययो छे प्राकृतरूपावतारमा सा ने बदले सीअ प्रत्यय छे

बाग्पाठ १५ मा—

प्राकृतप्रकाशमा से, सि आदेशो मात्र तद् शब्दने ज कर्या छे, एतद् तथा इद शब्दने कर्या नथी एतद शब्दना प्र० ए० मा इण इणमा रूपो नथी आप्या प्राकृतरूपावतारमा एतद शब्दना तृ० ए० मा णणा रूप नथी

बाग्पाठ १६ मा —

प्राकृतप्रकाशमा सोच्छ, मोच्छ, रोच्छ भेच्छ आदेशो

जणाव्या नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा उ० ए० मा स्स ने बदले हिस्स प्रत्यय आप्यो छे प्राकृतरूपावतारमा उ० ए० मा काह ने बदले काइह रूप छे

नोधपाठ १७ मा—

प्राकृतप्रकाशमा त्रिशब्दनो तृ० षष्ठी ती ने बदले ति आदेश कर्यो छे दोण्णि ने बदले दोणि आदेश कर्या छे वे, वेण्णि, दुण्णि, विण्णि आदेशो जणाव्या नथी प्र०व० मा चउरो आदेश नथी, कारण के नित्य दीर्घ कर्यो छे षड्भाषाचन्द्रिकामा वेण्णि ने बदले वेण्णि आदेश कर्यो छे अने आगलना रूपोमा पण वे ने बदले वे राख्यो छे त्रि शब्दनो तृ० षष्ठी ती ने बदले ति आदेश कर्या छे प्राकृत रूपावतारमा द्वि शब्दना प्र० ब० मा वे ने बदले वु आदेश कर्यो छे, अने आगलना रूपोमा पण वे ने बदले वु राख्यो छे

नोधपाठ १८ मा—

प्राकृतप्रकाश, सिद्धहेम, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृत रूपावतारमा समान प्रत्ययो होवाथी काइ नो ययो जेवु नथी

नोधपाठ १९ मा—

प्राकृतलक्षणमा एकदम थोडा रूपो छे, अने प्राकृत प्रकाशमा पण थोडा रूपो छे ए बनावी आपे छे के असलमा थोडा रूपो हता, परन्तु पाछलथी वधेला सिद्धहेममा युष्मद् शब्दना प्र० ए० मा तुज्झ, द्वि० ए० मा तुज्झ,तुम्ह, तृ० ए० मा तुम्मेहि रूपो नथी षड्भाषाचन्द्रिकामा युष्मद् शब्दना तृ० ए० मा हिं ने बदले सर्वत्र हि छे, प० ए० मा तहिन्तो ने बदले तुहिन्तो आदेश छे, प० ब० मा तुने बदले

त्या आदेश छे, स० ए० मा तुव, तुम, तुइ, तुम्ह, तुब्भ तुज्झ आदेशो न थी जणाव्या अस्मद् शब्दना तृ० ब० म अम्हेहि, अम्हेहि, अम्हाहि, अम्हाहिँ रूपो वधारे छे स० ए० मा अम्हे, ममे रूपो वधारे छे, अने अम्हस्सि अम्हत्थ, अम्हहि, ममस्सि, ममत्थ, ममहि रूपो नथी प्र कृतरूपावतारमा युष्मद् शब्दना तृ० ब० मा हि ने बद मवत्र हि छे, ष० ए० मा तइने बदले तुइ आदेश छे, प तथा स० मा टाप प्रत्यय लगाडीने स्त्रीलिंगनां बधु रूपो का छे, स० ए० मा तुवे इत्यादि रूपो वधारे छे अस्मद् शब्द स० ए० मा ममे अम्हे रूपो वधारे छे

पाठ २ मो—

प्राकृतप्रकाशमा इमा प्रत्यय नथी, इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे, मा प्रत्यय वधारे छे, इर, मण प्रत्ययो नथी परिमाण अर्थमा किं (इद शब्द जणाव्यो नथी) विगेरे, शब्दोने एत्तिअ, एद्दह बे ज प्रत्ययो लागे छे बाकीना त द्धित प्रत्ययो जणाव्या नथी सिद्धहेममा इत्तिल ने बदले एत्तिल प्रत्यय छे, पर तथा राज शब्दने अनुक्रमे क्क तथा इक्क प्रत्यय लगाड्या छे, ओने बदले दो प्रत्यय छे षड्भाषा चन्द्रिकामां इत्त ने बदले इन्त प्रत्यय छे अने मा प्रत्यय वधारे छे, ओने बदले दो प्रत्यय छे मिश्र ने बदले मिश्र प्रत्यय छे नवल्लो, एकल्लो आदेशो न थी प्राकृतरूपावतारमा मा प्रत्यय वधारे छे त्तणमा पारिक्क, राइक्क विगेरे आदेशो न थी, तुम्हेच्चअ, अम्हेच्चअ, आदेशो नथी, सव्वंगिओ पहिओ, अप्पणअ आदेशो नथी, एक्कसि विगेरे आदेशो नथी भाव अर्थमा इल्ल, उल्ल प्रत्ययो नथी, नवल्लो, एकल्लो उवरिल्लो

आदेशो नथी, मोसालिओ आदेश नथी, विज्जुला, पत्तल, पीअल, अन्धलो आदेशो नथी

गद्यपाठ २१ मो--

प्राकृतप्रकाशमा पुल्लिंगमा वपराता नकारान्त तथा मकारान्त शब्दोमांथी शिरस् तथा नभस् शब्द साथे दामन शब्दने वर्ज्यो नथी पुल्लिंगमा वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे तरणि शब्दने गणाव्यो नथी पुल्लिंगमा विकल्पे वपराता अक्षि पर्याय तथा वचन आदि शब्दोनो पण उल्लेख कर्यो नथी स्त्रीलिंगमा विकल्पे वपराता इमान्त शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी, अने अञ्जलि आदि शब्दोमांथी पृष्ठ प्रश्न तथा अक्षि ए त्रण शब्दो ज गणाव्या छे निश्चय, वितर्क, सभावन तथा विस्मयना अर्थमा वपराता हु ने बदले हु तथा खु ने बदले रखु अव्ययो जणाव्या छे सूचना आदि अर्थमा वपराना अन्नोने बदले अव्वा अव्यय जणाव्यो छे अने मभावनना अर्थमा अइ ने बदले पण सभापणना अर्थमा अइ तथा वले अव्ययो जणाव्या छे इव अर्थमा वपराता मिव ने बदले म्मिव अव्यय जणाव्यो छे सभापण, रतिकलह तथा आक्षेपना अर्थमा वपराता हरे ने बदले ह्रि अव्यय जणाव्या छे कुत्सानां अर्थमा रु तथा आमन्त्रणना अर्थमा अज्ज अव्ययो विशेष जणाव्या छे प्राकृतप्रकाशमा नीचेना नियमो जणाव्या नथी:—

१,२,४,६,८,

षड्भाषाचन्द्रिकामा पुल्लिंगमा वपराता प्रावृष्, शरत् तथा तरणि शब्दोनो उल्लेख कर्यो नथी नपुंसक लिंगमां विकल्पे वपराता गुण आदि शब्दोमा कण्ठ शब्द वधारे

जणाव्यो छे नियम २ जामां जणावेला ऊ ने बदले उ आदेश कर्यो छे षड्भाषाचन्द्रिकामा नीचेनो नियम जणाव्यो नथी —

११

प्राकृतरूपावतारमा पुल्लिंगमा वपराता प्रावृष् तथा शरत् साथे नरणि शब्द गणाव्यो नथी पुल्लिंगमां विकल्पे वपराता अक्षि पर्याय तथा वचन आदि शब्दोनो पण उल्लेख कर्यो नथी आनन्तर्यना अर्थमा णवरिने बदले णवरिअ जणाव्यो छे प्राकृतरूपावतारमा नीचेना नियमो जणाव्या नथी'—

२, ६

आदेशावलि ( शब्द )

प्राकृतप्रकाशमा शरत् शब्दना सरअ आदेशने बदले सरद् आदेश कर्यो छे नूपुर शब्दमां ऊ ना इ तथा ए विकल्प आदेशने बदले मात्र ए आदेश नित्य कर्यो छे लूत स्तृस इलि ॥१।३३। ए सूत्रमा स्तृस शब्द गणाव्यो नथी शीकर शब्दमा क् ना भ् तथा ह् विकल्प आदेशने बदले मात्र भ आदेश नित्य कर्यो छे हेमचन्द्रना प्रत्यादौ डः ॥८।१।२०६। ए सूत्रमा गणावेला शब्दोमाथी प्रतिसरवेतसपताकासु ड ॥२।८। ए सूत्रथी मात्र ध्रण शब्दोज गणाव्या छे गर्भिते ण' ॥२।१०। ए सूत्रमा अतिमुक्तक शब्द गणाव्यो नथी दोलादण्डदशनेषु ड ॥२।३५। ए सूत्रमा दष्ट, दग्ध, दण्ड, दर, दाह, दम्भ, दर्भ, कदन तथा दोहद शब्दो गणाव्या नथी तेमज विकल्प आदेशने बदले नित्य आदेश कर्यो छे वसतिभरतयोर्हः' ॥२।९। ए सूत्रमां विनस्ति/

कातर तथा मातुलिंग शब्दो गणाव्या नथी. उत्तरीयानीय-योर्न्रो वा ॥२।१७। ए सूत्रमां तीय तथा कृत्य प्रत्ययो गणाव्या नथी. प्रथमशिथिलनिपथेषु ढः ॥२।२८। ए सूत्रमां मेथि तथा शिथिर शब्दो गणाव्या नथी परूपपरिघपरिखासु फः ॥२।३९। ए सूत्रमा पारिभद्र शब्द गणाव्यो नथी. लाहले णः ॥२।४०। ए सूत्रमां लाङ्गल तथा लाङ्गूल शब्द गणाव्या नथी वली ण आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे षट्-शावकसप्तपर्णानां छ ॥२।४१। ए सूत्रमां शमी तथा सुधा शब्द गणाव्या नथी गर्दभसमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य ॥३।२६। ए सूत्रमा विच्छर्द, कपर्द, मर्दित शब्दो गणाव्या नथी, अने गर्दभ शब्दमा ड आदेश विकल्पने बदले नित्य कर्यो छे भिन्दिपाले ण्ड. ॥३।४५। ए सूत्रमां कन्दरिका शब्द गणाव्यो नथी. घ्मस्य ॥३।४९। ए सूत्रमां ड्म् जोडा-क्षर गणाव्यो नथी स्नेहे वा ॥३।६४। ए सूत्रमां अग्नि शब्द गणाव्यो नथी कालायसे यस्य वा ॥४।३। ए सूत्रमां किसलय तथा हृदय शब्द गणाव्या नथी भाजने जस्य ॥४।४। ए सूत्रमां दनुज तथा राजकुल शब्द गणाव्या नथी. हेमचन्द्रना वेमाङ्गल्पाद्या स्त्रियाम् ॥८।१।३५। ए सूत्रमा गणावेला शब्दोमा थी पृष्ठाक्षिप्रश्ना स्त्रिया वा ॥४।२०। ए सूत्रथी मात्र त्रण शब्दोज गणाव्या छे अत् पथिहरिद्रा पृथिवीषु ॥१।१३। ए सूत्रमा प्रतिश्रुत्, मूषिक तथा बिभी तक शब्द गणाव्या नथी ओनोऽद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः ॥१।४०। ए सूत्रमा अन्योन्य, आतोद्य, शिरोवेदना मनोहर तथा सरोरुह शब्द गणाव्या नथी लोपोऽरण्ये ॥१।४। ए सूत्रमा अलावु शब्द गणाव्यो नथी सदा आदि शब्दोमा

ध्या नो इ विकल्पे थाय छे, तेमा तदा तथा यदा शब्दो वि शेष गणाव्या छे, जे हेमचन्द्रे इत्यादि करी छोडी दीधा छे, प्राकृतप्रकाशकार वृश्चिक शब्दने ऋनो इ, श्चनो च्छ तथा इ नो उ एवा आदेश करी विञ्छुअ तरीके सिद्ध कर्यो छे, ज्यारे हेमचन्द्रे तेने विञ्चुअ तथा विञ्छिअ तरीके सिद्ध कर्या छे प्राकृतप्रकाशकार मयूरने मोर, दावाग्निने दावग्गि, तथा दवग्गि, चाटुने चाडु तथा चडु, सूर्यने सूर, ऐरावणने एरावण आदेश कर्या छे, ते सरवमा हेमचन्द्र कहे छे के मोर, दावाग्नि तथा दवाग्नि चाटु तथा चडु सूर एरावण ए शब्दोज संस्कृत छे, अने ते बीजा नियमो थी सिद्ध थई जाय छे, एने माटे स्वतन्त्र आदेश करवानी जरुर नथी वररुचिए अकोलशब्दने, हेमचन्द्रे अकोठ शब्दने अने त्रिविक्रमे अकोट शब्दने अकोल्ल आदेश कर्या छे, परन्तु संस्कृतमा त्रणे शब्दो एक ज अर्थमा वपराय छे वररुचिए हरिद्रा शब्दने हलद्दा आदेश नित्य कर्या छे, परन्तु हेमचन्द्रे हलद्दा तथा हलिद्दा एम विकल्पे कर्या छे वररुचि ज्यारे दिवस शब्दना आदेश तरीके दिअहो तथा दिअसा जणावे छे, त्यारे हेमचन्द्र दिवहो तथा दिवसो जणावे छे वररुचि आम्र तथा ताम्र शब्दने अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे त्यारे हेमचन्द्र अम्ब तथा तम्ब आदेश करे छे वररुचि एम कहे छे के उत्सुक तथा उत्सव शब्दमा त्स् नो छ नथी थतो, त्यारे हेमचन्द्र कहे छे के त्स् नो छ विकल्पे थाय छे वररुचि प्रमाणे उसुओ तथा उस्सवो हेमचन्द्र प्रमाणे उच्छुओ उसुओ तथा उच्छवो, उसवो प्राकृतप्रकाशमा सिद्धहेमना नीचेना सूत्रो जणाता नथी —

(१) क्षुधो हा ॥८।१।१७।
(२) आयुरप्सरसो वा ॥८।१।२०।
(३) ककुभो हः ॥८।१।२१।
(४) धनुषो वा ॥८।१।२२।
(५) ओत्पद्मे ॥८।१।६१।
(६) इदुतौ वृष्टिवृष्टपृथङ्मृदङ्गनप्तृके ।
(७) प्रयौ वैत् ।८।१।१४६।
(८) रुदिते दिनाण्ण. ॥८।१।२०९।
(९) स्वप्ननीव्यो र्वा ॥८।१।२५९।
(१०) ऋभे वा ॥८।२।१६।
(११) ण्त पर्यन्ते ॥८।२।६५।
(१२) आश्चर्ये ॥८।२।६६।
(१३) अतो रिआररिज्ज...

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेम...
नथी (जोके त्रिविक्रमना प्राकृत...

(१) ...पादौ ॥८।१।...
(२) श्यामाके म ॥८।१।...
(३) उदोद्वार्द्रे ॥८।१।८... ...शोमा
(४) आहृते डि ॥८।... ... ओहर
(५) वा कदले ॥८।१।... ...वि वा
(६) यमुनाचामुण्डा... वसुआ
...ातुना
(७) अकोठे ल्लः ॥८... यदले
(८) गर्भितातिमुक्त... ...ादेशने
(९) षष्ठ्या ल. ... ...ा कर्यो

(१०) घ्ने वा ॥८।२।७७।
(११) हन्गौ ह्ना ॥८।४।८८।
(१२) अनकोठात्तैलस्य डे ह्र ॥८।२।१५५।
(१३) त्वादे स ॥८।२।१७२।
(१४) प्याउय ॥८।४।२१८।
(१५) वैनत्तद ॥८।३।३।

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेम करता नीचेनां सूत्रो विशेष आपेलां छे.—

(१) णिम्माण णिम्मिञ ॥१।४।४७।
(२) वा पुन्नागयान्ता ॥१।२।११०।
(३) लो जठरवठरनिष्ठुर ॥१।३।७७।
(४) स्मरकप्पूरीसरकारी ॥१।३।१००।
(५) दर्गाकरनिवहो दन्विर अगिह वौ ॥१।४।१२०।
(६) गहिआया ॥१।४।१२१।
(७) वग्धत्तगास्तुनाद्ये ॥२।१।३०।
(८) सोलुकु ॥२।२।९।

प्राकृतरूपावतारमां सिद्धहेम करता थोडा सूत्रो आप्या छे, परन्तु ए व्याकरणनो मुख्य विषय रूपावतार होवाथी ग्रन्थकारे सामान्य तथा विशेष नियमो वाला केटलाक सूत्र इरादा पूर्वक छोडी दीधेला लागे छे आ कारणसर ते व्याकरणमां नहि जणावेला सूत्रोनी यादी अत्रे आपवी योग्य धारी नथी

आदेशावलि (धातु)—

प्राकृतप्रकाशमां भू धातुना क्तप्रत्यय पर रहेता हू आदेशने बदले हु आदेश कर्यो छे प्रपूर्व भू धातुना पहुप

आदेश ने बदले पभव आदेश कर्यो छे. दृ धातुना णिअन्त दृम आदेशने बदले सामान्य दृम आदेश कर्यो छे तृप् धातुना थिप्प आदेशने बदले थिम्प आदेश कर्यो छे. तथा, ध्यै तथा गै धातुना ठा, झा तथा गा आदेशनो बहुवचनमां निषेध कर्यो छे, अने मात्र ठाअ, झाअ तथा गाअ आदेश वपराय छे एम कह्यु छे ग्रस् धातुना घिस आदेशने बदले विस आदेश कर्यो छे लिह् धातुना भावकर्ममां लिब्भ आदेशने बदले लिज्झ आदेश कर्यो छे ग्रह् धातुना भावकर्ममा घेप्प आदेशने बदले गह्रिज्ज तथा गह्रिज्ज आदेश कर्यो छे मृज् धातुना लुह तथा पुस आदेशने बदले लुभ तथा सुप आदेश कर्यो छे मस्ज् धातुना बुड्ड आदेशने बदले बुड्ड आदेश कर्यो छे दृश् धातुना निअच्छ आदेशने बदले णिअक्क आदेश कर्यो छे शक् धातुना चय आदेशने बदले वअ आदेश कर्यो छे प्राकृतप्रकाशमा सिद्धहेम करतां नीचेना आदेशो विशेष कर्या छे —

णुद्— णोल्ल, पद्— पाल, घ्रा— पा, पाअ, जल्प्— जम्प, चर्च्— चम्प

षड्भाषाचन्द्रिकामा गम् तथा दृश् धातुना आदेशोमा पाठान्तर छे अवपूर्व तृ धातुना ओह आदेशने बदले ओहर तथा ओरसने बदले ओसर आदेश कर्यो छे उद् पूर्व वा धातुना ओरुम्मा आदेशने बदले ओरुम्म तथा वसुआ आदेशने बदले अवसुअ आदेश कर्यो छे स्वप् धातुना कमवस आदेशने बदले कमवतथा लिम आदेशने बदले सलिस आदेश कर्यो छे प्रपूर्व विश् धातुना रिअ आदेशने बदले रिर् आदेश कर्यो छे, वली रिंग आदेश विशेष कर्यो

छे प्लव् धातुना णिजन्त ओम्वाल आदेशने बदले रोम्वाल आदेश कर्या छे नट् धातुना णिजन्त आलोड आदेशने बदले रालोड आदेश कर्या छे षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्ध हेम करता नीचेना आदेशो विशेष कर्या छे –

दीप– डीप, वि+ स्मृ– उसय, जुगुप्स– जप्प तथा दुगुञ्छ, म्लेल–सुल्ह

षड्भाषाचन्द्रिकामां सिद्धहेमना नीचेना सूत्रो जणाव्या नथी(जोके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमां आपेला छे) –

(१) वेः हृ ॥८।४।६४।

(२) राजेरग्घछज्जसहरीररेहाः ॥८।४।१००।

(३) घटेर्गढः ॥८।४।११२।

(४) समो गलः ॥८।४।११३।

(५) छिदेर्दुहावणिच्छल्लणिज्झोडणिव्वरणिल्लूरलूराः ॥८।४।१२४।

(६) व्यापेरोअग्गः ॥८।४।१४१।

(७) समापेः समाणः ॥८।४।१४२।

प्राकृतरूपावतारमां ज्ञा धातुना णव्व आदेशने बदले णप्प आदेश कर्यो छे, प्लव् धातुना णिजन्त ओम्वाल तथा पव्वाल आदेशने बदले ओव्वाल तथा पव्वाल आदेश कर्या छे दृश् धातुना दक्खवने बदले दक्खाव आदेश कर्यो छे विपूर्व स्मृ धातुना वीसर आदेशने बदले विसर आदेश कर्यो छे, अने विम्हर आदेशजतो न करता स्मर= म्हर ना आधारे सिद्ध कर्यो छे त्वर् धातुना जअड आदेशने बदले जअट आदेश कर्यो छे पृथक् करवाना अर्थमां कृ धातुना णिव्वड आदेशने बदले णिव्वड आदेश कर्यो छे भारथी

दर्शायेलाना अर्थमा नम् धातुना णिसुढ आदेशने बदले णिसुढ आदेश कर्यो छे. भज् धातुना भक्क आदेशने बदले बुक्क आदेश कर्यो छे. प्रपूर्व भू धातुना पक्षे पभव आदेशने बदले पक्षे पहव आदेश कर्यो छे

# परिशिष्ट.

बोधपाठ १ लो—

प्राकृतप्रकाशमा अनादि थ ना विकल्प ध ने बदले अनादि असयुक्त थ नो ध नित्य कर्यो छे क्त्वा प्रत्ययना इय तथा दूण विकल्प आदेशने बदले मात्र इअ आदेश नित्य कर्यो छे [कृ तथा गम् धातुथकी क्त्वा प्रत्ययना अडुअ विकल्प आदेशने बदले अडुअ आदेश नित्य कर्यो छे भू धातुना हकारना विकल्प भकार आदेशने बदले भू धातुने भो आदेश नित्य कर्यो छे, परन्तु भविष्यकालना प्रत्ययो पर रहेता भो आदेश नथी कर्यो एव अव्यय ना य्येव आदेशने बदले जेव्व आदेश कर्यो छे प्राकृतने बदले शौरसेनीमां नीचेना आदेशो कर्या छे:—

कृ—कर, स्था—चिट्ठ, स्मृ—सुमर, दृश्—पेक्ख, अस्—अच्छ, स्त्री—इत्थी, आश्चर्य—अचरिअ, व्यापृत—वावड, गृध्र—गिद्ध, सर्वज्ञ—सव्वण्ण, इङ्गितज्ञ—इंगिअण्ण, इव—विअ.

प्राकृतप्रकाशमा नीचे आपेलु सिद्धहेम करता विशेष छे —

(१) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ तथा कन्या शब्दना ण्य, ज्ञ तथा न्य नो ञ्ञ विकल्पे थाय छे जमके—बम्हञ्ञो, विञ्ञो, जञ्ञो, कञ्ञा

(२) नपुसकलिंगना प्र० तथा द्वि० व० मा णि प्रत्यय लागे छे, अने पूर्व स्वर ना दीर्घ थाय छे

(३) दा धातु न भविष्यकालना उ० ए० मा विभक्ति सहित दाहस्स आदेश थाय छे

(४) अस् धातुने भविष्यकालना उ० ए० मा विभक्ति सहित स आदेश थाय छे

(५) अस्मद शब्दने प्र० ए० मा वअ तथा अम्हे आदेश थाय छे

(६) सर्वनामना स० ए० ना प्रत्यय तरीके स्सिंा आदेश थाय छे जेमके सव्वस्सिंा (सर्वस्मिन), इदर स्सिंा (इतरस्मिन्)

(७) धातु थकी भाव, कर्ता तथा कर्ममा परस्मैपदना प्रत्ययो लागे छे जेमके—खामाअसि (खामायते), वन्दामि (वन्दे), कामिअदि (काम्यते)।

(८) धातुना रूपमा उपान्त्य स्वरनो एकार थाय छे जेमके—करेदि

(९) आज्ञार्थना नि नो मि थाय छे, जेमके—करवामि (करवाणि) गच्छामि (गच्छानि)

परिशिष्ट ना प्रकरण १ला—

प्राकृतप्रकाशमा नीचेना कलमा जणातो नथी —

(१) थं ने स्थाने विकल्पे त्थ थाय छे (३)

(२) मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकार नो विकल्पे धकार थाय छे (९)

(३) अकारान्त धातुने आत्मनेपदनो दे प्रत्यय लागे छे (८)

(४) भविष्यकालना (प्राकृतना) हिने स्थाने स्मि थाय छे (१०)

(५) अत्य मकारथी पर णकार आगम विकल्पे थाय छे, इकारके एकार पर होय तो (१४)

(६) नकारान्त शब्दथी सबोधनना एकवचननो लोप, अने नकारनो अनुस्वार विकल्पे थाय छे (५)

(७) भवत् अने तेना जेवा भगवत् आदि शब्दना अंत्य व्यजननो प्र०ए०मा अनुस्वार थाय छे, अने एकवचन ना प्रत्ययनो लोप थाय छे (६)

(८) इन् प्रत्ययान्त शब्दोना नकारनो स०ए०मा विकल्पे आकार थाय छे (७)

षड्भाषाचन्द्रिकामा अस्मद् ने बदले अम्हे तथ य्येव ने बदले एव्व आदेश कर्या छे नियम ११ मो विकल्प ने बदले नित्य कर्या छे

प्राकृतरूपावतारमा तस्मात् ना ता आदेश उपरान तो आदेश कर्यो छे एवना य्येव आदेशने बदले य्येन्व आदेश कर्यो छे त्वा प्रत्ययना इण आदेशने बदले दूण आदेश कर्यो छे कृ तथा गम धातु थकी त्वा प्रत्ययना अडुअ आदेशने बदले अदुअ आदेश कर्या छे प्राकृत रूपावतारमां प्राकृतने बदले शौरसेनीमा नीचेना आदेशो कर्या छे—

गम्- गच्छ, इष्- इच्छ, यम्-जच्छ, आस्-अच्छ प्राकृतरूपावतारमा हेमाणहे अव्यय शौरसेनीमा वपराना होवानु जणाव्यु नथी

नोधपाठ २ जो—

प्राकृतप्रकाशमा असंयुक्त स् ना श् उपरांत ष् नो श् कर्यो छे अनादिक्षना जिह्वामूलीय ≍ कने बदले क थाय छे अकारान्त शब्दोने प्र० ए० मां ए प्रत्यय उपरांत इ तथा ० (लुक्) प्रत्ययो लगाड्या छे ष०ए० मा स्स प्रत्ययने बदले श्श प्रत्यय लगाड्यो छे अस्मद् शब्दना प्र० ए० तथा ब० मा हगे ने बदले मात्र प्र० ए० मा ज हके, हगे, अहके आदेशो कर्या छे

प्राकृतप्रकाशमा नीचे आपेलु सिद्धहेम करतां विशेष छे:—

(१) हृदय शब्दने हडक्क आदेश थाय छे
(२) र्य तथा र्ज नो य्य थाय छे
(३) क्त प्रत्ययान्त शब्दोने प्र०ए० मा इ, ए,० (लुक्) तथा उ प्रत्यय लागे छे
(४) सबोधनमा अ दीर्घ थाय छे, जेमके पुलिशा आगच्छ, माणुशा आगच्छ
(५) कृ, मृ तथा गम् धातुथकी क्त प्रत्ययने स्थाने ड प्रत्यय लागे छे जेमके—कडे मडे, गडे
(६) क्त्वा प्रत्ययने स्थाने दाणि आदेश थाय छे
(७) शृगालने शिआल तथा शिआलक आदेश थाय छे

प्राकृतप्रकाशमा शौरपाठ ४ जा —

प्राकृतप्रकाशमा नीचेना नियमो जणाव्या नथी —
(१) रेफनो ल थाय छे (१)
(२) ग्रीष्म शब्द सिवाय संयुक्त ष् नो स् थाय छे(२)
(३) ह तथा ष्ठ नो स्ट थाय छे (३)

(४) स्थ तथा र्थ नो स्त थाय छे (४)

(५) थनो स्थ थाय छे (५)

(६) न्य, ण्य, ज्ञ तथा ज्ज नो ञ्ञ थाय छे (६)

(७) अनादि लाक्षणिक तथा अलाक्षणिक छ नो श्च थाय छे (७)

(८) अकारान्त शब्दना प० ब० मा आह प्रत्यय लागे छे (१०)

(९) व्रज धातुना जकारनो ञ्ज थाय छे (१२)

(१०) प्रेक्ष् अने आचक्षुना क्षनो स्क थाय छे (१३)

षड्भाषाचन्द्रिकामा पुल्लिंग शब्दोना प० ए० मा स्स प्रत्ययने बदले डश प्रत्यय लगाड्यो छे ट्ट तथा ष्ठ ना स्ट ने बदले स्थ कर्यो छे तिष्ठना चिष्ठ आदेशने बदले चिट्ट आदेश कर्यो छे सयुक्त स तथा ष अनादि होय ना ज स थाय छे एम कह्यु छे

प्राकृतरूपावतारमा पुल्लिंग शब्दोना प० ए० मा स्स प्रत्ययने बदले डश प्रत्यय कर्यो छे प० ब० मा आहँ प्रत्यय नित्यने बदले विकल्पे कर्यो छे तिष्ठ ना चिष्ठने बदले चिष्ट आदेश कर्यो छे प्राकृतने बदले मागधीमा भ्रुकुटि तथा पुरुष शब्दना रेफना उकारनो इकार कर्यो छे जेमके—
भिउडी, पुरिसा

नोधपाठ ३ जो—

प्राकृतप्रकाशमा चूलिकापैशाचीना नियम ने पैशाचीना नियम तरीके गणाव्यो छे, ए उपरथी सिद्ध थाय छे के वररुचिना समयमा पैशाची तथा चूलिकापैशाची वच्चे भेद गणातो नहि होय स्नना मिन आदेशने बदले मन आदेश कर्यो छे

थना विध आदेशने बदले विध आदेश कर्यो छे तथा ञ्ञ आदेश ने बदले ञ्ज आदेश कर्यो छे सामान्य रूपना ञ्ञ आदेशने बदले मात्र कन्या शब्दना रूपनो ञ्ज आदेश कर्यो छे राजन शब्दना राज्ञ इत्यादि रूपोमा ज्ञना विक विकल्प आदेशने बदले तृ० ए०, प० ए०, ष० ए० तथा स० ए० ना प्रत्ययो पर रहेता राचि आदेश विकल्पे कर्यो छे जेमके—राचिणा, रञ्जा, राचिणो रञ्जो राचिणि, रञ्जि तथ प्रत्ययना तृन आदेशने स्थाने तृन आदेश कर्यो छे जेमके—दातृन, कातृन हृदय शब्दना हिनपक आदेशने बदले हिन अक आदेश कर्यो छे प्राकृतप्रकाशमा नीचे आपेला सिद्ध हेम करता विशेष छे —

(१) ज्ञनो ञ्ञ थाय छे जेमके— कञ्जं (कार्यम्

(२) ह्रस्व विध आदेश थाय छे जेमके—क्रमर्थि

प्राकृतप्रकाशमा नीचे आपेला नियमो जणाता नथी

प्राकृतप्रकाशमा —आपेल ? ना

(१) ण्य ना ञ्ज थाय छे (७)

(२) स्त्री ने स्थाने स्त्रन तथा स्थून आदेश थाय छे (

(३) टकारनो तकार थाय छे, अने नकारनो तका रहे छे (

(४) ठकारनो ठकार अने श् तथा ष् नो स थाय

(५) दु नो विकल्पे तु आदेश थाय छे (८)

(६) भावकर्ममा थना क्य प्रत्ययने इज्ज आदेश थ छे (१४)।

(७) कृ धातुने क्य प्रत्यय सहित कीर आदेश थ छे (१८)।

(८) यादृश जेवा शब्दोमा दृ ने स्थाने ति आदेश थाय छे (५)

(९) अकारान्त नाम थकी पचमी ना एकवचन तरीके आतो अने अतु प्रत्यय थाय छे (९)

(१०) तद् तथा इदम् शब्दने तृतीयाना एक वचनना प्रत्यय सहित पुल्लिंग तथा नपुसक लिंगमां नेन अने स्त्रीलिंगमा नाए आदेश थायछे (१०)

(११) नियादि प्रथम पुरुषना एकवचन इ तथा एने स्थाने ति आदेश थाय छे (११)

(१२) अकारान्त धातुथी पर इ तथा एने स्थाने ति तथा ते आदेश थाय छे (१२)

(१३) भविष्यकालमा इ तथा ए सहित प्राकृतना हिने बदले मात्र एय्य प्रत्यय थाय छे (१३)

(१४) [चूलिका पैशाचीमा] रनो ल् विकल्पे थाय छे (२)

षड्भाषाचन्द्रिकामा ष्ट ना सटने बदले सिट आदेश कर्यो छे ष्ट्वा ना ट्टन आदेशने बदले ट्टन आदेश कर्यो छे. शेष शौरसेनीवत् एम कह्यु नथी

प्राकृतरूपावतारमा ष्ट ना सट आदेशने बदले सिट आदेश कर्यो छे त्वा प्रत्ययना तून आदेशने बदले तून आदेश कर्यो छे ष्ट्वा ना ट्टून आदेशने बदले ट्टून आदेश कर्यो छे प्राकृतरूपावतारमा नियम चोथो जणाव्यो नथी

शोपाट ४—१—६ मे

षड्भाषाचन्द्रिकामा अकारान्तपुल्लिंग शब्दना द्वि० ए० मा जिणो, द्वि० ब० मां जिणि, जिणे, तृ० ए० मां जिणॅ,

तृ० ब० मा जिणे, स० ब० मा जिणासु, जिणासु रूपो वधारे छे स० ब० मा जिणा, जिणा रूपो नथी इकारान्त पुल्लिंग शब्दना प्र० ब० मा इसिणो, इसीओ, प० ब० मां इसि, इसी रूपो वधारे छे स० ब० नो हु प्रत्यय स०ए० मां आप्यो छे सं० ब० मा इसि , इसी रूपो नथी वर्त्म ना विच आदेश ने बदले विच्चु आदेश कर्यो छे विषण्ण ना वुन्न आदेश ने बदले उन्न आदेश कर्या छे परस्पर ना अवरोप्पर आदेशने बदले अवरोवर आदेश कर्या छे सर्वादि शब्दो ना प० ए० मा हा प्रत्ययने बदले ट् प्रत्यय आप्यो छे स्त्रीलिंग नामना स० ए० मा हि प्रत्ययने बदले हिं प्रत्यय आप्यो छे किम् शब्दना प० ए० मा किहे ने बदले किह आदेश कर्यो छे तद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ए० मा त्र ने बदले त्रुं आदेश कर्यो छे यद् शब्दना प्र० तथा द्वि०ए०मां ध्रुं ने बदले द्रु आदेश कर्यो छे युष्मद् शब्द ना प्र० तथा द्वि० ब० मा तुम्हइ ने बदले तुम्हइ आदेश कर्यो छे युष्मद् शब्द ना द्वि० तृ०, तथा स० ए० मा पइ ने बदले एइ आदेश कर्यो छे अस्मद् शब्द ना तृ० ब० मा अम्हेहिं ने बदले अम्हेहि आदेश कर्यो छे अस्मद् शब्द ना प० तथा प०ए० मा मज्कु ने बदले मज्झ आदेश कर्यो छे यत्र तथा तत्र शब्दने अनुक्रमे जइ तथा तइ आदेश वधारे कर्या छे क्त्वा प्रत्ययना इवि आदेशने बदले ए आदेश कर्यो छे क्त्वा तथा तुम् प्रत्ययना एवि तथा एविणु आदेशने बदले एपि तथा एपिणु आदेश कर्या छे तादर्थ्यमा रेसि तथा रेसिं ने बदले तेसि तथा तेसिं आदेश कर्या छे विनाना विणु आदेशने बदले विणा आदेश कर्यो छे. अवश्यम् ना

अवसे तथा अवसने बदले अवासं तथा अवास आदेश कर्यो छे एकशः ना एक्कसिने बदले एगसि आदेश कर्यो छे इदानीम् ना एम्हिं ने बदले एत्ताहे आदेश कर्यो छे एवमृना एम्व ने बदले एम आदेश कर्यो छे. एवमेवना एम्वइ ने बदले एमइ आदेश कर्यो छे प्रत्युतना पचलिउ ने बदले पच्छलिउ आदेश कर्यो छे नहिना नाहिं ने बदले नाहि आदेश कर्यो छे प्रायशः ना पग्गिम्व तथा प्राइम्व ने बदले अनुक्रमे पग्गिम तथा प्राइम आदेश कर्या छे कुत' कहन्तिहु ने बदले कहन्तिहु आदेश कर्यो छे चेष्टानुकरणमा घुग्घ ने बदले घिग्घि आदेश कर्यो छे तद्धितमा त्तण उपरांत प्पण आदेश कर्यो नथी. तव्य प्रत्ययना इएव्वउ, एव्वउ तथा एवा ने बदले एव्वइ, एप्पइ तथा एव्व आदेश कर्यो छे वर्तमान कालना उ० ए० मा उ ने बदले उ प्रत्यय कर्यो छे भूधातुना हुच ने बदले बहुत्त आदेश कर्यो छे व्रज् धातुना वुज ने बदले वञ आदेश कर्यो छे ग्रह् धातुना गृण्ह ने बदले गण्ह आदेश कर्यो छे पड्भाष चन्द्रिका मां सिद्धहेमना नीचे आपेला सूत्रो जणाव्या नथी ( जाके त्रिविक्रमना प्राकृत व्याकरणमा ते आपेला छे ) —

सपा ग्रम्नाम ॥८।४।३८१।

आर्येदे ॥८।४।४४३।
लिंगमतन्त्रम् ॥८।४।४४५।
शौरसेनीवत् ॥८।४।४४६।
व्यत्ययश्च ॥८।४।४४७।
शेषं संस्कृतवत् सिद्धम् ॥८।४।४४८।

प्राकृतरूपावतारमा नामने स्वार्थमा अ, डड, डुल्ल, डडअ, डुल्लअ, डुल्लडड उपरान्त अडड, अडुल्ल, डडडुल्ल, अडडडुल्ल, अडुल्लडड, डडअडुल्ल, डुल्लअडड, डडडुल्लअ, डुल्लडडअ, आदेशो कर्या छे अन्यथानो अनु तथा सर्व नो साह आदेश विकल्पे ने बदले नित्य कर्यो छे स्त्रीलिंग नामना प० तथा प० ब० मा हु ने बदले हु आदेश कर्यो छे स्वार्थमा स्त्रीलिंग शब्दोने डी तथा डा आदेश उभय कर्यो छे स्त्रीलिंग नामना स० ए० मा हि ने बदले अ, आ, इ तथ ए आदेश कर्या छे तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मा त्र ने बदले ध्रु आदेश कर्यो छे युष्मद् शब्दना द्वि०, तृ० तथा स० ए० मा पइ ने बदले पइ आदेश कर्यो छे युष्मद् शब्दना प० तथा प० ए० मा तुज्झने बदले तुज्झु आदेश कर्यो छे दृश धातुना प्रस्स आदेश ने बदले पस्स आदेश कर्यो छे

पण्डित बहेचरदास जीवराज दोशी [illegible] देश कर्यो छे करणमा नपुंसक लिंगवाला अच्छि शब्दने [illegible] अच्छी रूप नथी धणु शब्दना प्र० ए०मा धणू रूप नथी मालडिआ शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मा मालडिअ तथा मालडिअ रूपो वधारे छे बुद्धि शब्दना प्र० तथा द्वि० ब० मा बुद्धि तथा बुद्धी रूपो वधारे छे ईकारान्त उकारा

तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोमां पण तेज प्रमाणे रूपो वधारे छे तद् शब्दना प्र० तथा द्वि० ए० मां त्र आदेश वधारे छे. यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां ष० ए० मां अनुक्रमे जहे तहे तथा कहे आदेश विकल्पे कर्या छे. भविष्यकालमां प्राकृतना हिने बदले स उपरांत शौरसेनी नो स्सि आदेश वधारे आप्यो छे



# प्राकृत नियमावलि

## संधि—

हे० १-५ १ प्राकृतमां एक पदना बे स्वरोनी संधि थती नथी जेमके–मुद्धाइ, महइ परन्तु जूदा जूदा पदना बे स्वरोनी संधि विकल्पे थाय छे जेमके–विसम आयवो विसमायवो, वाम इसी वामेसी, दहि ईसरो दहीसरो, साउ उअयं साऊअयं।

हे० १-६ २ इवर्ण तथा उवर्णनो विजातीय स्वर साथे संधि थती नथी जेमके–देवि अहिअ, महु अहिअ

हे० १-७ ३ एकार तथा ओकारनो कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी जेमके–देवीए आसण, पचालाओ आगओ।

हे० १-८ ४ उद्वृत्त स्वरनो साथे कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी जेमके पईवो, निसाअरो,

---

१ क्वचित् एक पदमां पण संधि विकल्पे थाय छे जेमके–बिइओ बीओ, काहिइ काही।

२ इवर्णना इ, ई तथा उवर्णना उ, ऊ सजातीय अने बाकीना स्वर विजातीय गणाय छे।

३ लुप्त थयेला क् ग् च् इत्यादि व्यंजनना जे अवशिष्ट स्वर रहे छे ते उद्वृत्त स्वर कहेवाय छे।

४ क्वचित् विकल्पे थाय छे जेमके–कुम्भआरो कुम्भारो, सुउ-सुरिसो। क्वचित् नित्य थाय छे, जेमके–सालाहणो, चक्काओ।

रयणीअरो ।

हे० १-९ ५ तियादि स्वरनो कोई पण स्वर साथे संधि थती नथी जेमके-होइ इह ।

## स्वर विकार—

हे-१-१० १-४०

६ प्राकृतमां जूदा जूदा पदना बे स्वरने योगे प्राय एक स्वर नो लोप थाय छे जेमके—

| | |
|---|---|
| त्रिदशेश. तिअसीसो | अम्हे एत्थ अम्हेत्थ |
| निःश्वासोच्छ्वासौ निसासूसासा | जइ इमा जइमा |
| | जइ अहं जइहं |

हे० १-४

७ समासमा प्राय' ह्रस्व स्वरनो दीर्घ तथा दीर्घ स्वरना ह्रस्व थाय छे. जेमके-

| | |
|---|---|
| अन्तर्वेदिः अन्तावेई | नितम्बशिलास्खलितवीचिमालस्य निअम्बसिलखलिअवीइमालस्स |
| सप्तविंशतिः सत्तावीसा | |

१ धातुनी पर इ, सि मि विगेरे वर्तमानकालादिना प्रत्ययो तिनादि कहेवाय छे ।

२ क्वचित् नथी थता जेमके—जुवइअणो (युवतिजन) क्वचित विकल्प थाय छे जेमके-भुआयन्त भुअयन्त (भुजायन्त्रम्) पइहर पईहर (पतिगृहम्) वेलूवणं वेलुवणं (वेणुवनम्)

३ क्वचित् विकल्पे थाय छे जेमके—जउँणायड जउँणयड (यमुनातटम्), णईसोत्त णइसोत्त (नदीस्रोत) । गोरिहर गोरिहर (गौरीगृहम्) (वधूमुखम्)

| | | | |
|---|---|---|---|
| घृतम् | घय | वैद्य | वेज्जो |
| तृणम् | तण | कैतवः | केढवो |
| कृतम् | कय | वैधव्यम | वेहव्व |
| वृषभ | वसहो | कौमुदी | कोमुई |
| मृग | मओ | यौवनम् | जोव्वण |
| धृष्ट | धट्ठो | कौस्तुभ | कोत्थुहो |
| शैल. | सेलो | कौशाम्बी | कोसम्बी |
| त्रैलोक्यम् | तेलुक्क | क्राच | कोचो |
| ऐरावण | एरावणो | कौशिक | कोसिओ |
| कैलासः | केलासो | | |

हे १ १४०

१८ (क) केवल आदि ऋ नो रि थाय छे जेमके-

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऋषि | रिसी | ऋक्ष | रिच्छो |
| ऋद्धि | रिद्धी | | |

हे १ १३४

(ख) गौण शब्दने छेडे आवता ऋनो उ थाय छे जे के—माउमण्डल, माउहर, पिउहर माउसिआ, पिउसि पिउवण, पिउवई

व्यञ्जन विकार—

हे १ २३ १ २४

१९ अन्त्य म् नो अनुस्वार थाय छे परतु स्वर होय तो विकल्पे थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| जलम् | जल | वत्सम | वच्छ |
| फलम् | फल | गिरिम् | गिरिं |

| | | | |
|---|---|---|---|
| आ | अतरप्पा | दुरुत्तरम | दुत्तर |
| र् | निरन्तर | दुरवगाहम | दुरवगाह |
| म् | निरवसेस | | |

१७

स्वर थकी पर अनादि तथा असयुक्त क् ग् च् ज् त् द् प् य् व् नो प्राय लोप थाय छे जेमके—

क्वचित लोप नथी थता जेमके—

| | | |
|---|---|---|
| सुकुसुम | सुगारेन | सुताग |
| पयागजल | विदुर | विदुरो |
| सुगआ | सपापम् | सपाव |
| अगरु | समवाय | समवाओ |
| सचाव | दव | दवो |
| विजण | दानव | दाणवो |

क्यांक पण लोप थाय छे जेमके—

| | | |
|---|---|---|
| स उण | चिन्ध | इन्ध |

अ

आदिमा रहेला क् ग् च इत्यादि नो विकल्प

ओ वहुतर बहुतरो वहुअरो
सुहृद सुहदो सुहओ
ओ (पिशाचो)

सायगो
आगारो
आगरिसो

है १ १५

२० (विद्युत् सिवायना) स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य व्यजननो आ थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सरित् | सरिआ | सम्पद् | सपआ |
| प्रतिपद् | पाडिवआ | विद्युत् | विज्जू |

है १ १६

२१ स्त्रीलिंगशब्दोना अन्त्य र् नो रा थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गिर् | गिरा | पुर् | पुरा |
| धुर् | धुरा | | |

है० १ ३७

२२ सस्कृतना अकारथी पर असहित विसर्गनो प्राकृतमा ओ थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वत | सव्वओ | पुन | पुणो |
| पुरत, | पुरओ | तत | तओ |
| अग्रत | अग्गओ | कुत | कुदो |
| मार्गत | मग्गओ | | |

है० १ १२, १-१४

२३ अद् उद् अने स्वर छे पर जेने एवा अन्तर्, निर् अने दुर् शब्दोना अन्त्य व्यजननो लोप नथी थतो जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| अद्दिनम | सद्दिअ | उद्गमम् | उग्गय |
| अद्धा | सद्धा | उन्नतम् | उन्नय |

१ क्वचित् आ ने स्थाने या थाय छे

२ क्वचित् लोप थाय छे जेमके—अन्तारि

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्तरात्मा | अंतरप्पा | दुरुत्तरम् | दुरुत्तर |
| निरन्तरम् | निरन्तर | दुरवगाहम् | दुरवगाह |
| निरवशेषम् | निरवसेस | | |

हे० १-१७७

२४ स्वर थकी पर अनादि तथा असंयुक्त क् ग् च् ज् त् द् प् य् व् नो प्राय लोप थाय छे जेमके—

१ क्वचित् लोप नथी थता जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुकुसुमम् | सुकुसुम | सुतारम् | सुतार |
| प्रयागजलम् | पयागजल | विदुर | विदुरो |
| सुगत | सुगओ | सपापम् | सपाव |
| अगरु | अगरू | समवाय | समवाओ |
| सचापम् | सचाव | देव | देवो |
| विजनम् | विजण | दानव | दाणवो |

क्वचित् आदिमा पण लोप थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| स पुन | स उण | चिह्नम् | इन्ध |
| स च | सो अ | | |

समासमा उत्तरपदना आदिमा रहेला क् ग च इत्यादि नो विकल्प लोप थाय छे जेमके—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुखकर | सुहकरो | सुहयरो | बहुतर | बहुतरो | बहुअरो |
| जलचर | जलचरो | जलयरो | सुखद | सुहदो | सुहओ |

क्वचित् च् नो ज् थाय छे जेमके— पिसाजी (पिशाची)

क्वचित् क नो ग थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एकत्वम् | एगत्तं | श्रावक | सावगो |
| एक | एगो | आकार | आगारो |
| अमुक | अमुगो | आकर्ष | आगरिसो |

| | | | |
|---|---|---|---|
| तीर्थंकर | तित्थयरा | वितानम् | विआण |
| नग. | नओ | रसातलम् | रसाअल |
| नगरम् | नयर | गदा | गआ |
| शचि | सई | मदन | मयणा |
| रजतम् | रयय | रिपु | रिऊ |
| सुपुष्प | सुउप्फा | लावण्यम् | लायण्ण |
| दयालु | दआलु | विबुध | विउहो |
| वियोग | विओआ | | |

हे- १ १७६

२८ अवर्ण थी पर अनादि य ना लोप नथी थतो जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शपथ | सवहो | शाप | सावो |

हे० १-१८०

२९ उक्त अवर्ण ना अवर्ण थी पर लोप ना य थाय छे[1] जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| शकटम् | सयढ | प्रजापति | पयावई |
| मृगाङ्क | मयंको | पातालम् | पयाल |
| कचग्रह | कयग्गहो | नयनम् | नयण |

हे० १ १८७

३० स्वरथकी पर अनादि तथा असंयुक्त ख घ थ ध तथा भ ना प्राय ह थाय छे जेमके—

[1] क्वचित अवर्ण ना पर न लोप ना पण य थाय छे जेमके— पियइ (पिबति)

[2] स्वरथकी पर अनादि तथा असंयुक्त होय तो क्वचित् नथी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| शाखा | साहा | साधु | साहू |
| मुखम् | मुहं | बधिर | बहिरा |
| मेघ | मेहो | सभा | सहा |
| जघनम् | जहण | स्वभाव | सहावा |
| नाथः | नाहो | नभः | नह |

हे० १—१९५, १—१९९, १—२०२, १—२२८, १—२३१, १—२३६, १—२३७, १—२६०, १—२६४

२८ स्वर थकी पर अनादि तथा असंयुक्त ट् ना ड्, ठ् नो ढ्, ड् नो ल्, न् ना ण्, प् तथा ब् ना व्, फ् नो भ् तथा ह् सर्वत्र श् तथा ष् ना स् थाय छे अने अनुस्वारथी पर ह् नो घ् विकल्पे थाय छे जेमके—

ट्=ड्

| | | | |
|---|---|---|---|
| नटः | नडो | घट | घडो |
| भट | भडो | घटति | घडइ |

ठ्=ढ्

| | | | |
|---|---|---|---|
| मठ | मढो | कुठार | कुढारो |
| शठ | सढो | पठति | पढइ |
| कमठ | कमढो | | |

थतो जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्षपखल | सरिसवखला | प्रनष्टभय | पणट्ठभओ |
| प्रलयघन | पलयघणा | अस्थिर | अथिरो |
| जिनधर्म | जिणधम्मो | नभ | नभ |

१ क्वचित् नथी थतो जेमके—अटति अटइ

## ड्=ल् (प्रायं)

| | | | |
|---|---|---|---|
| वडवामुखम् | वलयामुह | तडागम् | तलाय |
| गरुड | गरुलो | क्रीडति | कीलइ |

## न्=ण्

| | | | |
|---|---|---|---|
| कनकम् | कणाय | वचनम् | वयण |
| मदन | मयणो | नयनम् | नयण |

## प्=व् (प्रायं)

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपसर्ग | उवसग्गो | कपिलम् | कविल |
| प्रदीप | पईवो | कपालम् | कवाल |
| काश्यप. | कासवो | महिपाल | महिवालो |
| उपमा | उवमा | | |

१ क्वचित् विकल्प थाय छे जेमके—

| | | |
|---|---|---|
| वडिशम | वलिस | वडिस |
| दाडिमम | दालिम | दाडिम |
| गुड | गुलो | गुडो |
| नाडा | णाला | णाडा |
| नडम | णल | णड |
| आपाड | आमेला | आमेडा |

क्वचित नथी थतो जेमके-

| | |
|---|---|
| निबिडम् | निविड |
| गौड | गउडा |
| पीडितम् | पीडिअ |
| नीडम् | नीड |
| उडु | उडू |
| तडित् | तडी |

२ क्वचित नथी थता जमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| कपि | कइ | रिपु | रिऊ |

## फ्=भ् तथा ह् (प्राय[1])

| | |
|---|---|
| सफलम् सभल सहल | शफरी सभरी सहरी |
| शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ | गुफति गुभइ गुहइ |

## व्=व्

शबल. सबलो

## श् तथा ष्=स्

| | | | |
|---|---|---|---|
| शब्दः | सद्दो | षण्ढ | सण्ढो |
| कुशः | कुसो | निकष' | निहसो |
| शुद्धम् | सुद्ध | शेष. | सेसो |

## ह्=घ् (विकल्पे[2])

| | |
|---|---|
| सिंह' सिंघो सीहो | सहारः सघारो सहारो |

हे० १-२२९

२९ असंयुक्त आदि न् नो ण् विकल्पे थाय छे. जेमके—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नरः | णरो | नरो | नदी | णई नई |
| नयनि | णेइ | नेइ | | |

---

१ क्वचित् मात्र भ् थाय छे जेमके—

रेफ रेभा | शिफा सिभा

क्वचित् मात्र ह् थाय छे जेमके—

मुक्ताफलम मुत्ताहल

२ क्वचित् अनुस्वारथी पर न होय तो पण थाय छे जेमके—

दाह दाघो

हे० १-२४५

३० पदनी आदिमा आवेला य् ना ज् थाय छे.
जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यश | जसो | याति | जाइ |
| यम | जमो | | |

हे० १-२०६

३१ प्रति उपसर्गना त् ना ड् थाय छे जेमके-

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रतिपन्नम् | पडिवन्न | प्रतिमा | पडिमा |
| प्रतिभास' | पडिहासो | प्रतिपद् | पडिवया |
| प्रतिहार | पडिहारो | प्रतिकरोति | पडिकरइ |
| प्रतिस्पर्द्धी | पाडिप्फद्धी | | |

हे० २-७७

३२ कोईपण जोडाक्षरमा क् ग् ड् द् त् द् प् श् ष् स् ≍क् (जिह्वामूलीय) तथा ≍प् (उपध्मानीय) पहेला आव्या होय तो तेओना लोप थाय छे जेमके-

१ उपसर्ग जोडायाथी अनादि बनेला य् ना पण ज थाय छे जेमके—

संयम संजमो । संयोग संजोगो । अपयश अवजसो

क्वचित् नथी थता जेमके—प्रयाग पओओ

२ क्वचित् नथी थता जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| प्रतिसमयम | पइसमय | प्रतिष्ठानम् | पइट्ठाण |
| प्रतीपम् | पईव | प्रतिष्ठा | पइट्ठा |
| सम्प्रति | संपइ | प्रतिज्ञा | पइण्णा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुक्तम् | मुत्त | सुप्त | सुत्तो |
| सिक्थम् | सित्थ | गुप्त | गुत्तो |
| दुग्धम् | दुद्ध | श्लक्ष्णम् | लण्ह |
| मुग्धम् | मुद्ध | निश्चल. | निच्चलो |
| षट्पद | छप्पओ | श्च्योतति | चुअइ |
| कट्फलम् | कप्फल | गोष्ठी | गोट्ठी |
| खड्ग | खग्गो | षष्ठ. | छट्ठो |
| षड्ज | सज्जो | निष्ठुर | निट्ठुरो |
| उत्पलम् | उप्पल | स्खलित | खलिओ |
| उत्पात. | उप्पाओ | स्नेह | नेहो |
| मद्गु | मग्गु | दुःखम् | दुक्ख |
| मुद्गर | मोग्गरो | अन्तःपात | अंतप्पाओ |

नोंध—उपला सर्व उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयु छे

हे० २-७८

३३ कोईपण जोडाक्षरमां म् न तथा य् छेडे आव्या होय तो तेओनो लोप थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| युग्मम् | जुग्गं | लग्न | लग्गो |
| रश्मि | रस्सी | श्यामा | सामा |
| स्मर. | सरो | कुड्यम् | कुड्ड |
| स्मेरम् | सेर | व्याध | वाहो |
| नग्नः | नग्गो | | |

नोंध—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयु छे

हे० २-७९

२८ कोईपण जोडाक्षरमां ल् ब् व् तथा र् पहेला के पछी आवेला होय तो तेमनो लोप थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| उल्का | उक्का | श्लक्ष्णम् | सण्हं[2] |
| विक्लव | विक्कव | विक्लव | विक्कवो |
| शब्द | सद्दो | चक्रम् | चक्कं |
| अब्द | अद्दो | वर्ग | वग्गो |
| लुब्धक | लोद्धओ | ग्रह | गहो |
| पक्वम | पक्कं पिक्कं | रात्रि | रत्ती |
| रश्मि | रस्सी | | |

नोट—उपला उदाहरणोमां ३६ मा नियमथी द्वित्व थयुं छे

हे० २-८३

३० ज्ञ मांना ञ ना विकल्पे लोप थाय छे. जेमके—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ज्ञानम् | जाणं | णाणं | मनोज्ञम् | मणोज्जं | मणोण्णं |
| सर्वज्ञ | सव्वज्जो | सव्वण्णू[1] | अभिज्ञ | अहिज्जो | अहिण्णू |
| आत्मज्ञ | अप्पज्जो | अप्पण्णू | प्रज्ञा | पज्जा | पण्णा |
| दैवज्ञ | दइवज्जो | दइवण्णू | आज्ञा | अज्जा | आणा |
| इङ्गितज्ञ | इंगिअज्जो | इंगिअण्णू | संज्ञा | सज्जा | सण्णा |

हे० २-८९

३१ पदना आदिमां न होय अने दीर्घ के अनुस्वारथी पर न होय एवा रफ तथा हकार सिवायना शेष (अवशिष्ट) तथा आदेश व्यंजननुं द्वित्व थाय छे जेमके—

---

[1] क्वचित् ञ्ञ थतो जेमके—विण्णाय (विज्ञात)

[2] क्वचित् न नो थतुं जेमके कसिणो (कृष्ण कृत्स्नो वा)

| | | | |
|---|---|---|---|
| कल्पतरु | कप्पतरू | रक्त | रत्तो |
| मूर्छा | मुच्छा | कृत्ति | कित्ती |
| दष्टः | दट्ठो | नर्मदा | नम्मया |
| गर्तः | जक्खो | | |

सू० २-९८

दीर्घ थी पर लोप ना?

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्लिष्ट | कट्ठो | दास्यम् | दासं |
| निःश्वास | नीसासो | आस्यम् | आसं |
| स्पर्श | फासो | प्रेम | पेमा |
| पार्श्व | पासं | अपमानम् | अवमाणं |
| शीर्षम् | सीसं | आज्ञा | आणा |
| ईश्वर | ईसरो | आज्ञप्ति | आणत्ती |
| प्रेम | पेमा | आज्ञापनम् | आणवणं |

अनुस्वार थी पर लोप ना?

| | | | |
|---|---|---|---|
| संक्रम | संकमो | विन्ध्य | विंझो |
| सन्ध्या | संझा | कांस्याल | कंसालो |

सू० २-९९

रेफ तथा हकार लोप नो ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| सौन्दर्यम् | सुन्देरं | विह्वल | विहलो |
| ब्रह्मचर्यम् | बम्हचेरं | कार्षापण | काहावणो |
| पर्यन्त | पेरन्तो | | |

सू० २-९०

३० वर्गना बीजा के चोथा अक्षरने द्वित्वनो प्रसंग आवे
... बीजानी पूर्वे वर्गनो पहेलो अक्षर अने ...

वि बीजो अक्षर आवे छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| व्याख्यानम् | वक्खाण | पक्ष | जक्खो |
| व्याघ्र | वग्घा | अक्षि | अच्छी |
| मूर्च्छा | मुच्छा | मध्यम | मज्झ |
| निर्झर | निज्झरा | पृष्टि | पट्टी |
| कष्टम् | कट्ठ | वृद्ध | वुड्ढा |
| तीर्थम | नित्य | हस्त | हत्थो |
| निर्धन | निद्धणा | आश्लिष्ट | आलिद्धा |
| गुल्फम् | गुप्फ | पुष्पम् | पुप्फ |
| निर्भर | निब्भरा | विह्वल | भिब्भलो |

हे० २ ६७

३८ समासमा शेष तथा आदेश व्यजननु द्वित्व विकल्पे थाय छे जेमके—

| | | |
|---|---|---|
| नदीग्राम | नइग्गामो | नईगामा |
| कुसुमप्रकर | कुसुमप्पयरा | कुसुमपयरा |
| देवस्तुति | देवत्थुई | देवथुई |
| हरस्कन्दौ | हरक्खन्दा | हरखन्दा |
| आलानस्तम्भ | आलाणक्खभा | आलाणखभा |

हे० २ १२, २ १५, २ २१, २ २४, २ २६ २ ३०, २ ३४, २ ४२, २ ४५, २ ५२, २ ५३, २ ६७, २ ८८, २ ८९, २ ७४,

१ क्वचित् शेष तथा आदेश थयेल सिवायन पण द्वित्व विकल्प थाय छे जेमके—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नखिग्राम | नखिग्गामो | नखिगाम | अप्रमत्तम् | अप्पमत्त | अप्पमत्त |
| नक्षत्र | नक्खत्तो | नक्खत्ता | प्रतिकूलम | पडिकूल | पडिकूल |
| प्रमुक्तम् | पमुक्क | पम्मुक्क | तैलतडाक | तेल्लाक | तलाक |

२-७०, २-७६

२९ नीचे आपेला जोडाक्षरोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे

क्ष्=ख्

क्षयः खओ

लक्षणम् लक्खण

स्क तथा ष्क्=ख्

पुष्करम् पोक्खर

निष्कम् निक्ख

स्कन्ध खंधो

अवस्कन्द अवक्खन्दो

त्य= च्

सत्यम् सच्च

प्रत्ययः पच्चओ

त्व्= च्

ज्ञात्वा णच्चा

श्रुत्वा सोच्चा

थ्व्= छ्

पृथ्वी पिच्छी

द्व्=ज्

विद्वत् विज्ज

ध्व= झ्

बुद्ध्वा बुज्झा

ह्रस्व थकी पर थ्य, श्च, त्स तथा प्स= छ्

पथ्यम् पच्छ

मिथ्या मिच्छा

पश्चिमम् पच्छिम

पश्चात् पच्छा

उत्साहः उच्छाहो

चिकित्सति चिइच्छइ

जुगुप्सति जुगुच्छइ

अप्सरा अच्छरा

द्य् य्य् तथा र्य= ज

वैद्य वेज्जा

द्युतिः जुई

जय्यः जज्जो

शय्या सेज्जा

कार्यम् कज्ज

मर्यादा मज्जाआ

ध्य् तथा ह्य्= झ

बध्यते बज्झए

ध्यानम् झाण

---

१ क्वचित् च्छ् ना छ तथा झ् विकल्प थाय छे जेके— क्षीण [illegible]

हे० २-१०५

४१ र्श तथा र्ष जोडाक्षरना अन्त्य व्यंजननी पूर्वे इ विकल्पे लागे छे जेमके—

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| आदर्शः | आयरिसो | आयसो | वर्षम् | वरिसं | वासं |
| सुदर्शनः | सुदरिसणो | सुदंसणो | वर्षा | वरिसा | वासा |
| दर्शनम् | दरिसणं | दंसणं | वर्षशतम् | वरिससयं | वाससयं |

हे० २-१०६

४२ जे जोडाक्षरने छेडे ल् आव्यो होय ते जोडाक्षरना अन्त्य व्यंजननी पूर्वे इ लागे छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्लृप्तम् | किलित्तं | श्लोकः | सिलोओ |
| क्लिष्टम् | किलिट्ठं | क्लेशः | किलेसो |
| श्लिष्टम् | सिलिट्ठं | ग्लानम् | गिलाणं |
| प्लुष्टम् | पिलुट्ठं | म्लानम् | मिलाणं |
| प्लोषः | पिलोसो | क्लाम्यति | किलम्मइ |
| श्लेषः | सिलेसो | क्लान्तम् | किलन्तं |
| शुक्लम् | सुक्किलं | | |

हे० २-११३

४३ उकारान्त ङी प्रत्ययान्त तन्वी जेवा शब्दना जोडा

---

१ क्वचित् नित्य थाय छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| परामर्श | परामरिसो | आमर्ष | आमरिसो |
| हर्ष | हरिसो | | |

२ क्वचित् इ नथी लागतो जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| क्लम | कमो | शुक्लपक्ष | सुक्कपक्खो |
| प्लव | पवो | उत्प्लावयति | उप्पावेइ |
| विप्लव | विप्पवो | | |

क्षर छूटा थाय छे, अने तेमा अन्त्य व्यजननी पूर्व उ लागे छे जेमके—*

| | | | |
|---|---|---|---|
| तन्वी | तणुवी | बह्वी | बहुवी |
| लघ्वी | लहुवी | पृथ्वी | पुहुवी |
| गुर्वी | गरुवी | मृद्वी | मउवी |

लिंगपरिवर्त्तन—

हे० १—३१,१—३२

४४ दामन् शिरस् तथा नभस् सिवायना सकारान्त तथा नकारान्त शब्दो अने प्रावृष् शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृतमा पुल्लिंगमा वपराय छे³ जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| यशः¹ | जसो | नर्म | नम्मो |
| पय | पओ | मर्म | मम्मो |
| तमः | तमो | प्रावृट् | पाउसो |
| तेजः | तेओ | शरत् | सरओ |
| उरः | उरो | तरणिः | तरणी |
| जन्म | जम्मो | | |

हे० १ ३३

४५ 'अक्षि' पर्याय अने वचनादि शब्दो प्राकृतमां

* १ क्वचित् अन्यत्र पण थाय छे जेमके—सुघ्न् सुरुघ

२ दाम (दाम), सिर (शिर), नह (नभ)

३ नीचे आपेला शब्दो क्वचित् नपुंसकलिंगमा पण जोवामा आवे छे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| तेज | तेग | शर्म | सम्म |
| वच | वय | चर्म | चम्म |
| गमा | सुमण | | |

विकल्पे पुल्लिंगमा वपराय छे जेमके—

अक्षि अच्छी अच्छि विद्युत् विज्जू
चक्षु चक्खू चक्खु कुलम् कुला कु
नयनम् नयणा नयण छन्द छन्दो छ
लोचन लोअणा लोअण माहात्म्यम् माहप्पो म
वचनम् वयणा वयण दुःखम् दुक्खो
हे० १-३४

८६ गुण आदि शब्दो प्राकृतमा विकल्पे नपुंसकलिंगमा
वपराय छे जेमके—

गुण गुण गुणो मण्डलाग्र मण्डलग्ग मण्
देव देव देवो करुह करुह करुहो
बिन्दु बिन्दु बिन्दू वृक्ष रुक्ख रुक्खो
खड्ग खग्ग खग्गो
हे० १-३५

८७ इमान्त तथा अञ्जलि आदि शब्दो प्राकृ
विकल्पे स्त्रीलिंगमां वपराय छे जेमके—

गरिमा गरिमा गरिमा चौर्यम् चोरिआ चो
महिमा महिमा महिमा कुक्षि कुच्छी कु
धूर्त्तिमा धुत्तिमा धुत्तिमा बलि बली ब
अञ्जलि अंजली अंजली निधि निही नि
पृष्ठम् पिट्ठी पिट्ठ विधि विही वि
अक्षि अच्छी अच्छि रश्मि रस्सी रस्
प्रश्न पण्हा पण्हा ग्रन्थि गण्ठी गण्
निर्लज्जिमा निल्लज्जिमा निल्लज्जिमा

## बोधपाठ १ लो.

( नामविभक्ति )

### अकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | ओ | आ |
| द्वितीया | म् | आ ए |
| तृतीया | एण, एणं | एहि, एहिं, एहिँ |
| पंचमी | त्तो, आओ, आउ, आहि, आहिन्तो, आ | त्तो आओ आउ, आहि आहिन्तो, आसुन्तो, एहि, एहिन्तो एसुन्तो |
| षष्ठी | स्स | आण, आणं |
| सप्तमी | ए, म्मि | एसु, एसुं |
| संबोधन | ०, ओ, आ | आ. |

### जिण शब्दना रूपो

प्र० जिणो ) जिणा [illegible]

रना कनार, गयर
७१ णियम ( नियम ) नाम । नम ।

७२ समण (श्रमण) साधु
७३ गुण ( गुण ) गुण
७४ पार ( पार ) पामवु

## पाठ २ जो

(धातुविभक्ति)

वर्तमानकालना प्रत्ययो

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
| --- | --- | --- |
| प्रथम | इ | न्ति, न्ते, इरे, |
| मध्यम | सि | ह, इत्था |
| उत्तम | मि | मो, मु, म |

१ संस्कृतना व्यंजनांत धातुओ प्राकृतमां अकारान्त थाय छे
२ अकारान्त धातुओ पछी प्रथम तथा मध्यम पुरुषोना एकवचनना प्रत्ययो इ तथा सि ना अनुक्रमे ए तथा से थाय छे

---

सूचना—

१ परस्मैपद तथा आत्मनेपदना जुदा जुदा प्रत्ययो तथा जोके अकारान्त धातुओना ए तथा से प्रत्ययोने अनुक्रमे ते, से, इत्था विगेरे आत्मनेपदना प्रत्ययो तरीके गणावी शकाय पण शिष्ट प्रयोगोमां ए नियम जळवायेलो नथी अने किन्तु परस्मैपदी धातुओने पण उक्त प्रत्ययो लागेला जोवामां आवे छे, तेथी आ प्रत्ययो परस्मैपद तथा आत्मनेपद उभयने साधारण छे

२ प्राकृतमां कंई गणभेद विशिष्ट थतो नथी, तेथी गणविभाग दर्शाववानी जरूर नथी

३ न्त इरे तथा न्ते, ए त्रण प्रत्ययो नान्यतरप्रमाणे प्राकृत प्रकाशमां नथी

' उत्तम [illegible] प्रकाळ, आज्ञार्थ, विध्यर्थ, तथा विक[illegible]योना पूर्वना अकारनो विकल्पे एकार

[illegible] म प्रत्ययनी पूर्वना अकारनो विकल्पे

पुरुषना मो, मु तथा म प्रत्ययोनी पूर्वना अकारना [illegible] तथा इकार थाय छे

धातुओ—

| | |
|---|---|
| [illegible] ) जवु, गमन करवु | वय (वद्) बोलवु, कहवु |
| | वस (वस्) वसवु, रहेवु |
| [illegible] ) पडवु | लह (लभ्) पामवु, मेळववु |
| [illegible] ) जागवु, समजवु | पढ (पठ्) भणवु, पाठ करवो |
| [illegible] ) [illegible] करवु | वड्ढ (वृध्) वधवु |
| [illegible] माल करवी | अइच्छ—दे० जवु, गमन करवु |

उदाहरण—गच्छना रूपो

[illegible]० व०          ब० व०

---

[illegible] धातुओना जे संस्कृत रूप आप्या छे, ते [illegible] [illegible] अने प्राकृत वच्चे केटलो तफावत छे ते जणाशे, आ [illegible] —आगमिक अने प्राकृतिक—नियमोना नियमो, [illegible] [illegible] प्रकार [illegible] जे [illegible] थाय छे ते

| | | |
|---|---|---|
| तृ० | हसिणा | हसीहि, हसीहिं, हसीहिँ |
| प० | हसिणो, हसित्ता, हसीओ, हसीउ, हसीहिन्तो | हसित्तो, हसीओ, हसीउ हसीहिन्तो, हसीसुन्तो |
| ष० | हसिणो, हसिस्स | हसीण, हसीणं |
| स० | हसिम्मि | हसीसु, हसीसुं |
| सं० | हे हसि, हसी | हसउ, हसओ, हसिणो हसी |

नोध–उकारान्त शब्दोना प्रत्ययो पण एवीज रीते छे फक्त इकारने बदले उकार आवे छे अने प्रथमाना बहु वचनमा एक 'अवो' आदेश वधार थाय छे

गुरु शब्दना रूपो

| | | |
|---|---|---|
| प्र० | गुरू | गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू |
| द्वि० | गुरु | गुरुणो, गुरू |
| तृ० | गुरुणा | गुरूहि, गुरूहिं गुरूहिँ |
| प० | गुरुणो, गुरुत्तो, गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो गुरूहिन्तो, | |
| ष० | गुरुणो, गुरुस्स | गुरूणा, गुरूण |
| स० | गुरुम्मि | गुरूसु, गुरूसुं |
| सं० | हे गुरु, गुरू. | गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू |

नोध–पुल्लिंगमा दीर्घ ईकारान्त अने दीर्घ ऊकारान्त गामणी खलपू आदि शब्दो भिन्नज होय छे प्राकृतमा तेने ह्रस्व थाय छे, एटले तेना रूपो हसि शब्द अने गुरु शब्दनी माफकज थाय छे

## शब्दो (पुल्लिंग)

गुरु (गुरु) धर्मार्गना मनारनार
रिसि इसि (ऋषि) धर्मगुरु, साध, मुनि
साहु (साधु) आत्मकार्यसाधक
मुणि (मुनि) मौनव्रतधारी साधु, यति
तरु (तरु) झाड
सिस्स सीस (शिष्य) चेलो, अनुयायी
विणय (विनय) नम्रता, विवेक
भोग (भोग) इन्द्रियविषय
मूल (मूल) आद्यभाग, आदि कारण
सजम, संजम (संयम) संयम
आणदाराम (आनन्दाराम) आनन्दरूप बगीचो
गिरि (गिरि) पर्वत

कोहग्गि (क्रोधाग्नि) क्रोधरूपी अग्नि
अरि (अरि) शत्रु, दुश्मन
सिसु (शिशु) बालक
हत्थि (हस्ति) हाथी
करि (करि) हाथी
भाणु (भानु) सूर्य
निवास (निवास) रहठाण
बाल (बाल) बालक, अज्ञानी
सर (शर) बाण
कर (कर) हाथ
मोअअ (मोदक) लाडवो
पाअ (पाद) पग
सिहर (शिखर) टोंच, टुंक
गिम्ह (ग्रीष्म) गरमीनी ऋतु

### विशेषणा—

पसत्थ (प्रशस्त) श्रेष्ठ, प्रशंसापात्र
इच्छु (इषु) इच्छा करनार, चाहनार
गिद्ध (गृद्ध) आसक्त थनार, लंपट
चर (चर) फरनार, फिरनार

धातुओ—धात्वादेशपाठना रूढ आदेशथी धातुने अनेक थाय छे पण धात्वादेश पाठमां जोई लेवा ते नियमसाध्य रूप थाय छे जेम-
नेणी 'णा' आगम तथा ...

| | |
|---|---|
| जय जिण (जि) जनमलवा | धुण धुव (धू) धुणवु, कपवु |
| णे (णी) णगी नु, लन जवु | लुण (लू) लणवु, कापवु, छेदु |
| भा बीह (भी) डरवु बीवु | कुण कर (कृ) करवु |
| किण (क्री) खरीदवु | हर (हृ) हरवु चोरवु लइजवु |
| सुण हण (श्रु) सांभळवु | |

उदाहरण– पा धातुना रूपो

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० | पिअइ, पिअए | पिअन्ति, पिअन्ते, पिइरे |
| म० | पिअसि, पिअसे | पिअह, पिइत्था |
| उ० | पिआमि, पिअमि | पिआमो, पिअमो, पिइमो |

एव मुमयोरपि

एकारपक्षे पिएइ इत्यादि

चि धातुना रूपो

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० | चिणइ, चिणए | चिणन्ति, चिणन्ते, चिणिरे |
| म० | चिणसि चिणसे | चिणह, चिणित्था |
| उ० | चिणामि, चिणमि | चिणामो, चिणमो, चिणिमो |

एव मुमयोरपि

पुन

| | | |
|---|---|---|
| प्र० | चेइ | चेन्ति, चन्ते, चेइरे |
| म० | चेसि | चेह, चेइत्था |
| उ० | चेमि | चेमो चेमु, चेम. |

एकारपक्षे चिणेइ इत्यादि.

श्रु धातुना रूपो

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० | सुणइ, सुणए | सुणन्ति, सुणन्ते, सुणिरे |
| म० | सुणसि, सुणसे | सुणह, सुणित्था |
| उ० | सुणामि सुणमि | सुणामो, सुणमो सुणिमो |
| | | एवं मुमयोरपि |

पुन'

| | | |
|---|---|---|
| प्र० | हणइ, हणए | हुणन्ति, हणन्ते, हणिरे |
| म० | हणसि, हणसे | हणित्था, हणह |
| उ० | हणामि, हणमि | हणामो, हणमो, हणिमो |
| | | एवं मुमयोरपि |

एकारपक्षे सुणेइ हणेइ इत्यादि

भू धातुना रूपो

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० | भवइ, भवए. | भवन्ति, भवन्ते, भविरे |
| म० | भवसि, भवसे. | भवह, भवित्था |
| उ० | भवामि, भवमि | भवामो, भवमो, भविमो, |
| | | एवं मुमयोरपि |

पुन

| | | |
|---|---|---|
| प्र० | होइ | होन्ति, होन्ते, होइरे |
| म० | होसि | होह, होत्था |
| उ० | होमि | होमो, होमु, होम |

एकारपक्षे भवेइ इत्यादि

कृ धातुना रूपो

| | ए० व० | ब० व० |
|---|---|---|
| प्र० | कुणइ, कुणए. | कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे. |
| म० | कुणसि, कुणसे | कुणह, कुणित्था |
| उ० | कुणामि, कुणमि | कुणामो, कुणमो, कुणिमो |
| | | एवं मुमपोरपि |

पुन

| | | |
|---|---|---|
| प्र० | करइ, करए | करन्ति, करन्ते, करिरे. |
| म० | करसि, करसे | करह, करित्था |
| उ० | करामि, करमि | करामो, करमो, करिमो |
| | | एव मुमयोरपि |

अकारपक्षे कुणेइ, करेइ इत्यादि

४ गुण अने आदेशादि विधान पछी जो धातु स्वरान्त रहे छे तो तेमांना अकारान्त सिवायना स्वरान्त धातुने विकल्पे अकारनो आगम थाय छे. अकारागमपक्षे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ, इत्यादि रूपाख्यान थाय छे

शब्दो–पुल्लिंग

| | |
|---|---|
| भमर (भ्रमर) भमरो | जव (यव) जव, धान्यविशेष |
| पुप्फरस (पुष्परस) फूलनुं मध | पडिअ (पंडित) विद्वान् |
| अलि (अलि) भमरो | धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्मनी, निष्ठावालो |
| पराअ (पराग) फूलना जथ्थो | णिव (नृप) राजा |
| कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोधरूपी दुश्मन | अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी |
| | देह (देह) शरीर |

| | |
|---|---|
| अग्नि | धअ (ध्वज) ध्वजा, पताका |
| व्यजन) लायक- | किंकर (किङ्कर) नोकर,चाकर |
| मागम | केआर (केदार) खेतर, वावनु |
| ) मनभ्रमण | नीट |
| अवगुण दोष | वावार (व्यापार) उद्योग |
| जू) नपारी, | वाउ (वायु) वायरो |
| वाणीओ | तेण,थेण (स्तेन) चोर, लुटारा |
| ण) दुकान, | गिहत्थ (गृहस्थ) गृहस्थ, साहु- |
| जार | कार |
| देश | रह (रथ) रथ |
| ) नाहाया | कुसल (कुशल) डाह्या माणस, |
| ीर्ष | चतुर |
| र | किसीवल (कृषीवल) खेडुत |

---

वाक्यो—

१ भमरो पुप्फरस पिअइ । २ तुम गिरिणो सिहरम्मि चिट्ठसि । ३ अह साहुस्स गुणे चिणामि । ४ अली पराअ पेइ । ५ णिवो अरी जयइ । ६ तुम्हे काहसत्तु जिणित्था । ७ अह भत्तिअजणे मग्ग णेमि । ८ तुम ससाराउ णीहसि । ९ अम्हे दुग्गुणाहिन्तो भामो । १० तुम वाणिअस्स आव- णाओ किणसि । ११ वय मुणीण बोह सुणामु । १२ नम्ह- णा अग्गिम्मि जवा हुणन्ति । १३ अह जिणा थुणामि । १४ पण्डिओ धम्मणिट्ठो भवइ । १५ साहुणो अप्पसाहगा होन्ति । १६ ... हेर पुणइ । १७ धओ वाउणा धुणेइ ।



१८फिसीपलो फेआरम्मि जचे लुणट । १९कुमलो घा
याचार कुणइ । २० तेणो गिहत्थम्म रइ हरेइ ।

१ नोकर राजाथी डरे छे २ वेपारी गाम जाय
छे ३ तमे गुरुनो पाठ सांभलो छो ४ अमे दुःख
रहित छीए ५ चोर व्यापारीना दुकानेथी (धन)
६ गापिओ योग्य माणसोने धर्ममार्ग लई जाय छे
राजानी स्तुति करे छे ८ अमे क्षत्रिया छीए ९ तमे
ब्राह्मणो छो १० साधुओना बोध भव्यजनने पवित्र क
११ अमे धर्मनो उद्योग करीए छीए १२ मुनिओ
दुर्गुणोने हरे छे

## बोधपाठ ५ मो

(नामविभक्ति-चालु)

नपुंसकलिंगना प्रत्ययो

| | ए० व० | ब० व० |
| --- | --- | --- |
| प्रथमा | म | णि, इं इँ |
| द्वितीया | ,, | ,, ,, ,, |

तृतीया विभक्तिथी सप्तमी विभक्ति सुधी
प्रमाणे

| | | |
| --- | --- | --- |
| संबोधन | ० (लुक्) | प्रथमा |

१ प्रथमा तथा द्वितीयाना बहुवचनना प्रत्ययोनी
ह्रस्वस्वर दीर्घ थाय छे

२ इकारान्त अने उकारान्त शब्दोना प्रथमाना ए
'म्' नो विकल्पे लोप थाय छे

—

नेत्तशब्दना रूपा

| | |
|---|---|
| ए० व० | ब० व० |
| नेत्त | नेत्ताणि, नेत्ताइ, नेत्ताइँ |
| हे नेत्त | ,, ,, ,, |
| नेत्त | ,, ,, ,, |
| नेत्तेण इत्यादि | अनुक्तरूप सर्व पुल्लिंग जिण |

अच्छि शब्दना रूपा

| | |
|---|---|
| ए० व० | ब० व० |
| अच्छि, अच्छि | अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ |
| हे ~गा गिरि | ,, ,, ,, |
| [illegible] | ,, ,, ,, |
| [illegible] इइ । इत्यादि पुल्लिंग इसि शब्दवत् | |

महु शब्दना रूपा

| | | |
|---|---|---|
| | ए० व० | ब० व० |
| प्र० | महु, महु | महूणि, महूइं, महूइँ |
| सं० | हे महु | ,, ,, ,, |
| द्वि० | महु | ,, ,, ,, |
| तृ० | महुणा इत्यादि पुल्लिंग गुरु शब्दवत् | |

× नपुंसकलिंगना इकारान्त तथा उकारान्त शब्दोना प्रथमा एकवचनना केटलाकने मते सानुनासिक रूप थाय छे जेमके अच्छिँ तथा महुँ

सद्दा ( नपुंसकलिंग )

वयण (वचन) [illegible], वाणी
सर (सरस्) [illegible]
जल (जल) [illegible]
धणु (धनु) [illegible]
वण (वन) [illegible]
दहि (दधि) दही
ओअण (ओदन) भात
दसण (दर्शन) [illegible]
धण (धन) [illegible]
असणय (दे०) [illegible]
वत्थ (वस्त्र) कपड़ा
तेअ (तेज) प्रकाश
सीअ (शीत) [illegible]
सत्थ (शास्त्र) [illegible]
पाउरण (दे०) [illegible]

सवण (श्रवण) [illegible]
सिर (शिरस्) [illegible]
णेत्त (नेत्र) [illegible]
रअ (रजस्) [illegible]
अच्छि (अक्षि) [illegible]
आसण (आसन) [illegible]
मण (मनस्) [illegible]
मुह (मुख) [illegible]
दुद्ध (दुग्ध) [illegible]
पुप्फ (पुष्प) [illegible]

मो [illegible]
न–शब्द ) [illegible]
प्रत्ययो [illegible]

विसेसणा

हिअ (हित) शुभ,
मिअ (मित) परिमित,
महुर (मधुर) मीठा,
अप्प (अल्प) [illegible],

अव्वया

सह (सह) साथ,
सया (सदा) हमेशा,
बहि (बहिस्) बाहर,
कयावि (कदापि) कभी
अहुणा (अधुना) अब

धातुआ

सुज (सुज) [illegible]
अस (अस्) [illegible] होना

३ त्रण वचनमा प्रत्यय सहित अस् धातुनो विकल्पे अत्थि एवो आदेश थाय छे

४ मध्यम पुरुषना एकवचनमा अने उत्तमपुरुषना त्रणे वचनमा अस् धातु लोपाय छे, अने अवशिष्ट रहेला उत्तम पुरुषना प्रत्ययोमा व्यंजन अने स्वरनी वचे ह् उमेराय छे जेमके- अस्+मि, अस्+मि, अस्+मो, अस्+मना रूपो अनुक्रमे मि, म्हि, म्हो, तथा म्ह थाय छे

वाक्यो

१ तुम कुसलोऽसि । २ अहं धम्मिट्ठो म्हि । ३ अम्हे समणा म्हो (म्ह)। ४ तुम खत्तिओ अत्थि। ५ तुम्हे वाणिआ अत्थि । ६ भविअजणा वीरस्स वयणाइं सुणेन्ति । ७ तुम्हे सरम्मि जल पिबह । ८ णिवा रणम्मि सर गिण्हेइ । ९ णिवस्स सर वणम्मि पडइ । १० माहणो दमण हियअ पुणेइ। ११ वाणिओ धणेण पुत्थअमगयाणि किणेइ। १२ माणुसेण मोअ हरेइ।१३ सप्पस्स सवणम्मि सिर कुणेइ। १४ धम्मे सुहमत्थि । १५ सिग्घ दहिण, मा जोअणाइ सुणइ । १६ राउणा णेत्तम्मि रत्र पडेइ । १७ अग्गिणो ओसह कुणेइ। १८ भविअजणो मणम्मि जिणस्स दसणमिच्छेइ । १९ जणो दुक्खा दुह पुव्वकम्मेहिं लहेइ । २० पडिआ सयाणिअ मिअ महुर वयणु भणन्ति। २१ तुम्हे सच्च वयह। २२ पमायवलिअ कयावि ण वयमो ।

१ अमे वनमा मुनिओना दर्शन कर्या हता २ अमे

वस्त्रनो उद्योग करीए छीए ३ मीठा वचनो हृदयना दुःखने हरे छे ४चोरो वनमा वस्त्रा चोरी जाय छे ५कंजुसो धन लोभथी दुःख पामे छे ६ अमे कपिओ छीए ७ तमे मुनिओ छो ८ हुं ब्राह्मण छुं ९ तमे गाममा शास्त्र सांभळो छो १०पाणी तलावमांथी बहार जाय छे ११ आसना दुःखथी मस्तक कंपे छे, १२ अमे ध्याननु ओमट करीए छीए १३ तमे ध्यमने मनथी धारो छो १४ डाह्या माणसो हित मित अने सत्य बोले छे १५ व्यापारीओ कुशल छे १६ तु व्यापारी छे



## बोधपाठ ६ ठो.

१ प्रेरवु, योजवु के कराववु ए अर्थमा के स्वार्थमां धातु अने कालबोधकादि प्रत्यय वच्चे संस्कृतमा जेम णि प्रत्यय आवे छे, तेम प्राकृतमां 'णि' ने स्थाने अ, ए, आव अने आवे ए चार आदेश थाय छे धातुनो आदि अक्षर यदि गुरु होयतो 'अवि' प्रत्यय विशेष लागे छे

२ णिस्थानीय 'अ' अने 'ए' नी पूर्व धातुना आदि अकारनो आकार * थाय छे उदाहरण-पाढइ, पाढेइ, पढावइ, पढावेइ' इत्यादि कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ, इत्यादि भुल्लइ, भुल्लेइ, भुल्लावइ, भुल्लावेइ,

३ भ्रम् धातुनी पछी णि नो आड आदेश विकल्प

* वनी केटलाएकना मते आवे आदेशनी पूर्व पण धातुना आदि अकारनो आकार थाय छे ।

थाय छे जेमके— भमाडइ, भमाडेइ, इत्यादि पक्षे भामइ, भामेइ, भमावइ, भमावेइ इत्यादि

### ण्यन्त धातुओ

भमाड (भ्रम्+णि) भमाववु, रखडाववु

दाव } दस } (दृश्+णि) देखाडवु,

दूम (दू+णि) सतापवु, दुःखी करवु,

सिह (स्पृह्+णि) इच्छवु,

राव (रञ्+णि) रंजन करवु,

णासव (नश्+णि) नाश करावबु

जव (या+णि) गमन करावबु, शीघ्र करवो

### शब्दो ( पुल्लिंग )

सारहि (सारथि) रथ हांकनार कोचमेन

अट्ठ ( अर्थ ) शब्दनो वाच्य,

काल ( काल ) समय,

वित्थर (विस्तार) खुलासा वार,

विवाह (विवाह) लग्न प्रसंग,

णाइजण (ज्ञातिजन) नातिला

### नपुसकलिंग

कज्ज (कार्य) काम काज,

कम्म ( कर्म ) शुभाशुभसंस्कार, आवरण,

दाण ( दान ) दान,देवु,

आलस्स (आलस्य) आलस, सुस्ती,

आरणाल—न० दे०—कमल,

### विशेषनाम

जिणदास (जिनदास) एक । उत्तरज्झयण ( उत्तराध्य

* — आना विकारो रूपो प्राय विकल्पक थाय छे तेथी पक्ष धातुना मूलरूपने णिजन्तनाप्रत्यय लगाडी यथानियम साधना करी लेवी प्रत्येक धातुने णिस्थानीय प्रत्यय लागी शके छे, तथी तेओ बनाववा ... लगाडी योजना करवा

## पाठ्यो

१ सागरा वणंति तए भमाडइ । २ तुम सामसि घरे गामेसि । ३ जिणो सिस्सस्स रायं दूमइ । ४ अह जिणदास हरिसागरस्स सया मामि । ५ तुम भत्तिमजणे सरस्स अत्थ दसमि । ६ अम्मा विणेण शिव अ दूमइ । ७ अग्गी आरणाड पुप्फाओ पसासिरइ । ८ तुम्हे सोसमसणाराम राउइ । ९ जिणो भत्तिअजणाण कम्माणि सामरइ । १० रिसिणो सामसि फाल राउइ । ११ उवज्झाओ सिस्साण सह पाठेइ । १२ तुम्हे अम्ह उत्तमज्झयण पाठेह । १३ जिणो भगुणा सत्तु पालावेइ । १४ पडिओ सिस्सस्स सत्थ सुणावेइ । १५ मुणिणो पोसेण धम्म करावेन्ति । १६ गिहत्था विवाहेसि पाहुजणा भुंजावन्ति ।

—

१ तमे लोभथी अमने भमाडो छो. २ तमो रमेशाथी तितनो मार्ग बतावो छो ३ मुनिओ क्दापि अधर्मनो रस्तो बतावता नथी ४ राजाओ लोभथी माणसोने सतावे छे ५ सभ्य जनो मोक्षनी स्पृहा राखे छे ६ मारवि राजाने रंजन करे छे ७ अमे राजाना दुश्मनने नमावीए छीए ८ नोकर आज सभी वसत फलाडे छे ९ पंडितो चाकरने शीखवे छे १० व्यापारीओ धनवडे रस्तो शोभावे छे ११ गुरुओ अमने शास्त्र समजावे छे

# उपसर्गो

उपसर्ग धातुनी पूर्वे रही पण करी धातुना असल अर्थमा कई न्यूनाधिक करी विशेष अर्थ बतावे छे तेवा केटलाएक उपसर्गो नीचे आपेला छे —

१ अइ(अति)—हद बहार, उत्कर्ष,अतिशय **अइगच्छइ** —ते हद बहार जाय छे **अइसेइ**— ते उत्कर्ष मेलवे छे

२ अहि ( अधि )— उपर, अधिकार **अहिगच्छइ** - ते उपर थईजाय छे,अथवा जाय छे **अहिकरेइ** —ते अधिकार भोगवे छे

३ अणु( अनु )— पाछल, सरखु, समीप **अणुगच्छइ**— ते पाछल अथवा समीप जाय छे, अथवा ते अनुसरे छे

४ अहि (भि) ( अभि )— तरफ, पासे वारवार **अभिगच्छइ** — ते तरफ जाय छे, पास जाय छे, अथवा वारवार जाय छे

५ अव-ओ (अव)—नीचे,निश्चय **ओवतरइ**— ते नीचे उतरे छे **अवसेइ**—ते निश्चय करे छे

६ आ (आ)— हद, अवधि, अभियाति, थोडु,उलटापणु **आगच्छइ** — ते उलटी गति करे छे, आवे छे **आसाएइ**— ते थोडु चाखे छे **आमोक्ख गच्छइ**—मोक्ष सुधी के मोक्षने व्यापी जाय छे

७ उद् (उत्)— उचे उदय विशेष **उप्पडइ**— ते उचे चडे छे,कुदे छे **उदेइ**—ते उदय पामे छे

८ उव, ओ,ऊ, (उप)—पासे,समीप **उवगच्छइ**— ते पासे जाय छे

९ णि (नि)—आदेश, नीचे **णियुजइ**—ते हुकम करे छे **णिसीयइ**— ते नीचे बेसे छे

१०परा(परा)—उलटापणु, पाछु **पराजयइ**—(जीत था उलटु ) ते हारे छे

११ पडि(प्रति)—सामे,उलटु **पडिभासइ**— ते सामु बोले छे

१२ प(प्र)—आगल , प्रारम्भ, उत्कर्ष **पगच्छइ**—ते आगल जाय छे, जवानो प्रारम्भ करे छे, उत्कृष्ट गति करे छे

१३ वि (वि)—विशेष विरह विहार **विकरेइ**—ते विशेषकृति (विकार) करे छे **विसिलिसइ**—ते वियोग पामे छे **विहरइ**—ते विहार करे छे

१४ णिर् (निः) —विना, बहार, दूर **णिग्गच्छइ**—ते बहार निकले छे **णिक्खिवइ**—ते दूर फेंके छे

१५ दुर् (दु )— दुष्ट रीते, दुःखे करी **दुक्करेइ**—ते दुष्ट रीते करे छे **दुस्साहइ**—ते दुःखे करी साधे छे

१६ स (सम्) —साथे सगति, सारीते, सहार **समागच्छन्ति** तेओ एकठा थई जाय छे,सगत घटित थाय छे,सारी रीते आवे छे **संहरइ**—ते संहार करे छे

---

## बोधपाठ ७ मो

( नाम विभक्ति—चालु )

*स्त्रीलिंगना प्रत्ययो

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | ० | ०, ओ, उ |
| द्वितीया | म् | ०, ओ, उ |

* स्त्रीलिंग बोधक आप्, ईप् आदि प्रत्ययो प्राकृतमां प्राय संस्कृतनी पेठे ज थाय छे जे फेरफार छे ते नीचे जणाय छे—

१ समासादि प्रत्यय निमित्त ह्रस्व संस्कृतमां नित्य थाय छे, ते प्राकृतमां विकल्पे थाय छे ने पक्षे आ थाय छे जेमके—पामरी, पामरा।

२ जाति वाचक स्त्रीलिंग विशेषण ईथी संस्कृतमां ई नथी थता, त्यां पण प्राकृतमां विकल्पे ई थाय छे, जेमके— नीला, नीली हसमाणी, हसमाणा, इमा, इमी।

| | | |
|---|---|---|
| तृतीया | अ, आ, इ, ए | हि, हिं, हिँ |
| पंचमी | त्तो, आ, उ, हिन्तो, अ, आ, इ, ए | त्तो, आ, उ, हिन्तो, सुन्तो |
| षष्ठी | अ, आ, इ, ए | ण, णं |
| सप्तमी | ,, ,, ,, | सु, सुं |
| संबोधन | ० | ०, आ, उ |

१ विभक्ति प्रत्ययानी पूर्वे स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य ह्रस्वना दीर्घ थाय छे

२ द्वितीयाना एकवचन म् ना पूर्व स्त्रीलिंगमा अन्त्य दीर्घनो ह्रस्व थाय छे

३ आकारान्त स्त्रीलिंग नाम थकी तृतीया, पंचमी, षष्ठी अने सप्तमीना एकवचनना प्रत्ययो पैकी आ प्रत्यय थतो नथी

४ संबोधनना एकवचनमा स्त्रीलिंग शब्दोना अन्त्य आ नो विकल्पे ए, इ अने उ नो विकल्पे दीर्घ, अने ई तथा ऊ नो नित्य ह्रस्व थाय छे

५ ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो थकी प्रथमाना बने वचनो अने द्वितीयाना बहुवचनमा एक आ प्रत्यय वधारे थाय छे

उदाहरण— माला शब्दना रूपो

३ प्रथमा द्वितीयाना एकवचन अने षष्ठीना बहुवचन सिवायना विभक्ति प्रत्ययना योग कि, यत् अने तत् शब्द थकी स्त्रीलिंगमा ई विकल्प थाय छे, जे संस्कृतमा नथी थता जेमके— कीओ, कामा, इत्यादि।

४छाया अने हरिद्रा शब्द थकी प्राकृतमा इ विकल्प थाय छे,जे संस्कृतमा नथी थतो जेमके — छाही, छाहा हलदी, हलद्दा।

५ गोशब्दने स्त्रीलिंगमा गावी अने गाई आदेश थाय छे।

| | |
|---|---|
| | ऊ=ए |
| नूपुरम् | नेउर, नूउर |
| | ऊ=ओ |
| कूष्माण्डी | कोहण्डी कोहली |
| तूणीरम् | तोणीर |
| कूर्परम् | कोप्पर |
| स्थूलम् | थोर |
| ताम्बूलम् | तम्बोल |
| गुडूची | गलोई |
| मूल्यम् | मोल्ल |
| स्थूणा | थोणा थूणा |
| तूणम् | तोण तूण |
| | ऋ=अ |
| ऋणम् | अण रिण |
| | ऋ=आ |
| कृशा | कासा किसा |
| मृदुकम् | माउक्क मउअ |
| मृदुत्वम् | माउक्क मउत्तण |
| | ऋ=इ |
| कृपा | किवा |
| हृदयम् | हियय |
| मृष्टम्(रसे) | मिट्ठ |
| दृष्टम् | दिट्ठ |
| दृष्टि | दिट्ठी |
| सृष्टम् | सिट्ठ |

| | |
|---|---|
| सृष्टिः | सिट्ठी |
| मुष्टिः | मिण्ठी |
| पृथ्वी | पिच्छी |
| भृगुः | भिऊ |
| भृङ्गः | भिंगो |
| भृङ्गारः | भिंगारो |
| शृङ्गारः | सिंगारो |
| शृगाल | सिआलो |
| घृणा | घिणा |
| घुसृणम् | घुसिण |
| वृद्धकवि | विद्धकई |
| समृद्धि: | ममिद्धी |
| ऋद्धि. | इद्धी,रिद्धी |
| गृद्धि. | गिद्धी |
| कृश | किसो |
| कृशानु | किसाणू |
| कृसरा | किसरा |
| कृच्छ्रम् | किच्छ |
| तृप्तम् | तिप्प |
| कृपित: | किसिओ |
| नृप: | निवो |
| कृत्या | किच्चा |
| कृति | किई |
| धृति | धिई |
| कृपः | किवो |

| | | |
|---|---|---|
| कृपण | किविणो | |
| कृपाण' | किवाण | |
| वृश्चिक | विञ्चुओ | |
| वृत्तम् | वित्त | |
| वृत्तिः | वित्ती | |
| हृतम् | हिअ | |
| व्याहृतम् | वाहित्त | |
| बृंहित' | बिंहिओ | |
| वृषी | विसी | |
| ऋषि. | इसी, | रिसी |
| वितृष्ण | विइण्हा | |
| स्पृहा | छिहा | |
| सकृत् | सइ | |
| उत्कृष्टम् | उक्किट्ठ | |
| नृशंस' | निसमो | |
| पृष्ठम् | पिट्ठी | पट्ठी |
| मसृणम् | मसिण | मसण |
| मृगाङ्क | मिअङ्को | मयङ्को |
| मृत्यु | मिच्चू | मच्चू |
| शृङ्ग | सिंग | सग |
| धृष्ट | धिट्ठो | धट्ठो |
| मातृगृहम् | माइहर | |
| दृष्ट | दिट्ठो | |
| दृष्टि' | दिट्ठी | |
| वृषक | विहं | |

| | |
|---|---|
| मृदङ्गः | मिइंगो |
| नप्तृक | नत्तिओ |
| बृहस्पति. | विहप्फई |
| | बहप्फई |
| वृन्तम् | विण्ट |

ऋ=उ

| | | |
|---|---|---|
| ऋतुः | उऊ, | रिऊ |
| परामृष्ट' | परामुट्ठो | |
| स्पृष्ट' | पुट्ठो | |
| प्रवृष्टः | पउट्ठो | |
| पृथिवी | पुहई | |
| प्रवृत्तिः | पउत्ती | |
| प्रावृट् | पाउसो | |
| प्रावृत | पाउओ | |
| भृति | भुई | |
| प्रभृति | पहुडि | |
| प्राभृतम् | पाहुड | |
| परभृत' | परहुओ | |
| निभृतम् | निहुअ | |
| निवृतम् | निउअ | |
| विवृतम् | विउअ | |
| सवृतम् | सवुअ | |
| वृत्तान्त | वुत्तन्तो | |
| निर्वृतम् | निव्वुअ | |
| निर्वृति | निव्वुई | |

| | | |
|---|---|---|
| वृन्दम् | वुन्दं | |
| वृन्दावन | वुन्दावणो | |
| वृद्ध | वुड्ढो | |
| वृद्धि | वुड्ढी | |
| ऋषभ | उसहो, | रिसहो |
| मृणालम् | मुणाल | |
| ऋजु | उज्जू, | रिज्जू |
| जामातृक | जामाउआ | |
| मातृक | माउओ | |
| मातृका | माउआ | |
| भ्रातृक | भाउओ | |
| पितृक | पिउओ | |
| पृथ्वी | पुहुवी | |
| निवृत्तम् | निवुत्त | निअत्त |
| वृन्दारका | वुन्दारया | वन्दारया |
| वृषभ | वसहो | वसहो |
| मातृमण्डलम्. | माउमण्डल | |
| मातृगृहम् | माउहर. | माहर |
| पितृगृहम् | पिउहर | |
| मातृष्वसा | माउसिआ | |
| पितृष्वसा | पिउसिआ | |
| पितृवनम् | पिउवण | |
| पितृपति | पिउवइ | |
| मृषा | मुसा | |
| मृषावादः | मुसावाओ | |

| | |
|---|---|
| घृष्ट | घुट्ठो |
| वृष्टिः | वुट्ठी |
| पृथक् | पुह |
| मृदङ्ग | मुइगो |
| नप्तृक | नत्तुओ |
| बृहस्पति | बुहप्फई, बहप्फई |

ऋ=ऊ

| | |
|---|---|
| मृषा | मूसा |
| मृषावाद' | मूसावाओ |

ऋ=ए

| | |
|---|---|
| वृन्तम् | वेण्टं |

ऋ=ओ

| | |
|---|---|
| वृन्तम् | वोण्टं |
| मृषा | मोसा |
| मृषावाद. | मोसावाओ |

ऋ=हि

| | |
|---|---|
| आहृत' | आढिओ |

ऋ=अरि

| | |
|---|---|
| दृप्त' | दरिओ |

ऋ=रि

| | |
|---|---|
| ऋणम् | रिण, अण |
| ऋजु' | रिज्जू, उज्जू |
| ऋषभ' | रिसहो उसहो |
| ऋषि' | रिसी, इसी |
| ऋतु | रिऊ, उऊ |

| | | |
|---|---|---|
| सदृशः | सरिसो | |
| सदृक्ष. | सरिच्छो | |
| एतादृश | एआरिसो | |
| भवादृश | भवारिसो | |
| यादृश | जारिसो | |
| तादृश | तारिसो | |
| कीदृश | केरिसो | |
| ईदृश | एरिसो | |
| अन्यादृश | अन्नारिसो | |
| अस्मादृश | अम्हारिसो | |
| युष्मादृश | तुम्हारिसो | |
| मदृग्वर्ण | मरियण्णो | |

ए=इ

| | | |
|---|---|---|
| वेदना | विअणा | वेअणा |
| चपेटा | चविडा | चवेडा |
| देवर | दिअरो | देवरो |
| केसरम् | किसर | केसर |

ए=ऊ

| | | |
|---|---|---|
| स्तेन | थूणा, | थेणो |

ऐ=इ

| | | |
|---|---|---|
| सैन्धवम् | सिन्धव | |
| शनैश्चर | णिच्छरो | |
| सैन्यम् | सिन्न, | सेन्न |

ए=अइ

| | | |
|---|---|---|
| सैन्यम् | सइन्न | |

| | | |
|---|---|---|
| दैत्यः | दइचो | |
| दैन्यम् | दइणो | |
| ऐश्वर्यम् | अइसरिअं | |
| भैरवः | भइरवो | |
| वैजवन' | वइजवणो | |
| दैवतम् | दइवअ | |
| वैतालीयम | वइआलीअ | |
| वैदेशः | वइएसो | |
| वैदेह' | वइएहो | |
| वैदर्भ' | वइदब्भो | |
| वैश्वानर | वइस्साणरो | |
| कैतवम् | कइअव | |
| वैशारद. | वइसारो | |
| वैशाल. | वइसालो | |
| स्वैरम | सइर | |
| चैत्यम् | चइत्त, | चेइअ |
| वैरम् | वइरं, | वेर |
| कैलास | कइलासो, | केलासो |
| कैरवम् | कइरव, | केरव |
| वैश्रवण | वइसवणो, | वेसवणा |
| वैशम्पायन' | वइसंपायणो, | वेसंपाय |
| वैतालिक: | वइआलिओ, | वेआलि |
| वैशिकम् | वइसिअं | वेसिअ |
| चैत्र | चइत्तो, | चेत्तो |

दैवम् — दइव, दैवं

ऐ=अअ

उच्चै — उच्चअ
नीचै — नीचअ

ऐ=ई

धैर्यम् — धीर

ओ=अ

अन्योन्यम् — अन्नन्न, अन्नुन्न
प्रकोष्ठ — पवट्ठो, पउट्ठो
आतोद्यम् — आवज्ज, आउज्ज
शिरोवेदना — सिरविअणा, सिरोविअणा
मनोहरम् — मणहर, मणोहर
सरोरुहम् — सररुह, सरोरुह

ओ=ऊ

सोच्छ्वास — सूसासो

ओ=अउ

गो — गउओ, गउआ

ओ=आअ

गो — गाओ,

औ=आ

गौरवम् — गारव,

औ=उ

सौन्दर्यम् — सुन्देर, सुन्दरिअ
मौञ्जायन — मुञ्जायणो
शौण्ड्य — सुण्डो

क=ख्

| | |
|---|---|
| कुब्ज | खुज्जो |
| कर्परम् | खप्पर |
| कीलक: | खीलक |

क=ग्

| | |
|---|---|
| मरकतम् | मरगय |
| मदकल | मयगलो |
| कन्दुकम् | गेन्दुअ |

क=च

| | |
|---|---|
| किरात | चिलाओ |

क=भ

| | |
|---|---|
| शीकर | सीभरा |

क=म्

| | |
|---|---|
| चन्द्रिका | चन्दिमा |

क=ह्

| | |
|---|---|
| शीकर | सीहरो |
| निकष | निहसो |
| स्फटिक | फलिहो |
| चिकुर | चिहुरो |

ख=क

| | |
|---|---|
| शृङ्खलम् | सकलं |

ग=म्

| | |
|---|---|
| पुन्नागानि | पुन्नामाइं |
| भागिनी | भामिणी |

ग्=ल

| | |
|---|---|
| छागः | छालो |
| छागी | छाली |

श्=ल्ल् (वि०)

| | |
|---|---|
| पिशाच | पिसल्लो, पिसाहो |

च्=स् (वि०)

| | |
|---|---|
| खचित | खसिश्रा, खइओ |

ज=झ (वि०)

| | |
|---|---|
| जटिल | झडिलो, जडिलो. |

ट=ड़

| | |
|---|---|
| मटा | मडा |
| शकट | सयडो |
| कैटभ | केढवो |

ट्=ल

| | |
|---|---|
| स्फटिक | फलिहो |

ट=ल् (वि०)

| | |
|---|---|
| चपेटा | चवेला, चवेडा |
| पाटयति | फालेइ, फाडेइ |

ट=ल

| | |
|---|---|
| अङ्कोटतैलतुप्पम् | अंकोल्लतेल्लतुप्पं |

ठ=ढ

| | |
|---|---|
| पिठर | पिढरो, पिढरा |

ण=ल (वि०)

| | |
|---|---|
| वेणु | वेलू, वेणू |

त=च (वि०)

| | |
|---|---|
| तुच्छम् | चुच्छं, च्छुच्छं, तुच्छं |

त=छ (वि०)

| | |
|---|---|
| तुच्छम् | छुच्छं, चुच्छं, तुच्छं |

त=ट

| | |
|---|---|
| तगर | टगरो |
| त्रसर | टसरो |
| तूवर | टूवरो |

त=ड

| | |
|---|---|
| प्रतिपन्नम् | पडिवन्नं |
| प्रतिहास | पडिहासो |
| प्रतिहार | पडिहारो |
| प्रतिस्पर्द्धी | पाटिप्फद्धी, पडिप्फद्धी |
| प्रतिसार | पडिसारो |
| प्रतिनिवृत्तम् | पडिनियत्तं |
| प्रतिमा | पडिमा |

| | |
|---|---|
| प्रतिपदा | पडिवया |
| प्रतिकरोति | पडिकरेइ |
| प्रभृति | पहुडि |
| प्राभृतम् | पाहुड |
| व्यापृत | वावडो |
| पताका | पडाया |
| विभीतक | बहेडओ |
| हरीतकी | हरडई |
| मृतकम् | मडय |
| सुकृतम् | सुकड |
| आहृतम् | आहड |
| अवहृतम् | अवहड |

त्=ण्

| | |
|---|---|
| गर्भित | गब्भिणो |
| अतिमुक्तकम् | अणिउंतय, अइमुत्तय |
| रुदितम् | रुण्ण |

त=र्

| | |
|---|---|
| सप्तति | सत्तरी |

त्=ल

| | |
|---|---|
| अतसी | अलसी |
| सातवाहन | सालवाहणो, सालाहणो. |
| | पलिल, पलिअ |

त=ळ (नि.)

| | |
|---|---|
| पातलम् | पीअल, पीअळ |

त=ह

| | |
|---|---|
| वितस्ति | विहत्थी |
| वसति | वसही, वसई |
| भरत | भरहो |
| कातर | काहलो |
| मातुलिङ्गम् | माहुलिंग |

थ=ढ

| | |
|---|---|
| मेथि | मेढी |
| शिथिर | सिढिला |
| शिथिल | सिढिलो |
| प्रथम | पढमो |
| निशीथ | निसीढो निसीहो |
| पृथिवी | पुढवी पुहवी. |

थ=ध (वि०)

| | |
|---|---|
| पृथक् | पिधं, पुधं, पिहं, पुहं |

द=ड (वि०)

| | |
|---|---|
| दशनम् | डसणं, दसणं |
| दष्ट | डट्ठो, दट्ठो |
| दग्ध | डड्ढो, दड्ढो |
| दोला | डोला, दोला |
| दण्ड | डण्डो, दण्डो |

| | |
|---|---|
| दरः(भय) | डरो, दरो |
| दाहः | डाहो, दाहो |
| दम्भः | डम्भो, दम्भो |
| दर्भः | डब्भो दब्भो |
| कदनम् | कडण, कयण |
| दोहद: | डोहलो,दोहलो |
| दशति | डसइ |
| दहति | डहइ |

द=ध

| | |
|---|---|
| दीप्यति | धिप्पति, दिप्पइ, |

द=र

| | |
|---|---|
| एकादश | एआरह |
| द्वादश | बारह |
| त्रयोदश | तेरह |
| गद्गदम् | गग्गर |
| कदली | करली, कयली, केली |

द=ल

| | |
|---|---|
| प्रदीप्यति | पलीवेइ |
| प्रदीप्तम् | पलित्त |
| दोहद: | दोहलो |
| कदम्ब | कलम्बो, कयम्बो। |

द=व

| | |
|---|---|
| कदर्थित | कवट्टिओ |

द्=ह्

| | |
|---|---|
| ककुदम् | कउहं |

ध=ढ्

| | |
|---|---|
| निषध | निसढो |
| औषधम् | ओसढं ओसहं |

न्=ण्ह (वि०)

| | |
|---|---|
| नापित | ण्हाविओ नाविओ |

न्=ल् (वि०)

| | |
|---|---|
| निम्ब | लिम्बो, निम्बो |

प्=फ्

| | |
|---|---|
| पाटयति | फालेइ, फाडेइ |
| परुष | फरुसो |
| परिघ | फलिहो |
| परिखा | फलिहा |
| पनस | फणसो |
| पारिभद्र | फालिहद्दो |

प्=प्

| | |
|---|---|
| प्रभूतम् | पहुत्तं |

प्=म् (वि०)

| | |
|---|---|
| नीप | नीमो, नीवो |
| आपीड | आमेलो, आवेडो |

प=र्

| | |
|---|---|
| पापर्द्धि. | पारद्धी. |

प=म

| | |
|---|---|
| पिसिनी | मिसिणी |

प=म् तथा प

| | |
|---|---|
| कपन्ध | कमन्धो, कपन्धो. |

व=म्

| | |
|---|---|
| शवरः | समरो |

भ=व

| | |
|---|---|
| कैटभः | केढवो |

म=ढ्

| | |
|---|---|
| विषम | विसढो, विसमो |

म्=व

| | |
|---|---|
| मन्मथ | वम्महो |
| अभिमन्यु. | अहिवन्नू, अहिमन्नू. |

म्=स्

| | |
|---|---|
| भ्रमर | भसलो, भमरो. |

य=त

| | |
|---|---|
| युष्मादृशः | तुम्हारिसो. |
| युष्मदीय. | तुम्हकेरो |

य=ल

| | |
|---|---|
| यष्टि. | लट्ठी |

य=ञ (वि०)

| | |
|---|---|
| उत्तरीयम् | उत्तरिज्ज, उत्तरीअ |

य=ह

| | |
|---|---|
| छाया | छाहा |
| सच्छायम् | सच्छाह, सच्छाय |

य=आह तथा व

| | |
|---|---|
| कतिपयम् | कइवाह, कइअव |

र=ड

| | |
|---|---|
| किरि | किडी |
| भेर | भेडो |

र=डा (वि०)

| | |
|---|---|
| पर्यायम् | पडायाण, पज्ञाण |

र=ण

| | |
|---|---|
| करवीर | कणवीरो |

र=ल

| | |
|---|---|
| हरिद्रा | हलिद्दी |
| दरिद्राति | दलिद्दाइ |
| दरिद्र | दलिद्दो |
| दारिद्र्‌म | दालिद्द |
| हरिद्र | हलिद्दो |

| | |
|---|---|
| मुखरः | मुहलो |
| चरणः (पादः) | चलणो |
| वरुणः | वलुणो |
| करुणः | कलुणो |
| सत्कारः | सक्कालो |
| रुग्णः | लुक्को |
| अपद्वारम् | अवद्दाल |
| जठरम् | जढल |
| पठर | पढलो |
| निष्ठुर. | निट्ठुलो |
| युधिष्ठिर. | जहुट्ठिलो |
| शिथिर' | सिढिलो |
| अङ्गार | इगालो |
| सुकुमार | सोमालो |
| किरात | चिलाओ |
| परिखा | फलिहा |
| परिघ | फलिहो |
| पारिभद्र | फालिहद्दो |
| कातर | काहलो |

ल्=र्

| | |
|---|---|
| स्थूलम् | थोर |

ल्=ण् (वि०)

| | |
|---|---|
| लाहल. | णाहलो, लाहलो |
| लाङ्गलम् | णङ्गल, लगल |

लाङ्गूलम् — णगूल, लगूलं
ललाटम् — णिडाल, णडाल

न=म् (वि०)

स्वप्न — सिमिणो, सिविणो
नीवी — नीमी, नीवी

श=छ (वि०)

शमी — छमी
शाव — छावा
शिरा — छिरा, सिरा

श=ह

दशमुख — दहमुहो, दसमुहो
दशरथ — दहरहो, दसरहो

ष=ण्ह (वि०)

स्नुषा — सुण्हा, सुसा

ष=छ

षष्ठ — छट्ठो
षष्टि — छट्ठी
षट्पद — छप्पओ
षण्मुख — छमुहो

ष=ह

पाषाण — ... पासाणो

म्=छ्

| | |
|---|---|
| क्षुधा | छुहा |
| सप्तपर्ण | छत्तिवण्णो |

जोडाक्षरोने नीचे प्रमाणे आदेश थायछे.—

क् (वि०)

| | |
|---|---|
| शक्त | सक्को, सत्तो |
| मुक्त | मुक्को, मुत्तो |
| दष्टः | डक्को, दट्ठो. |
| रुग्ग. | लुक्को, लुग्गो. |
| मृदुत्वम् | माउक्कं, मउत्तणं |

ख्

| | |
|---|---|
| शुष्कम् | सुक्खं, सुक्कं |
| स्कन्द | खन्दो, कन्दो |
| क्ष्वेटक. | खेटओ |
| क्ष्वोटक | खोडओ |
| स्फोटक | खोडओ |
| स्फेटकः | खेटओ |
| स्फेटिक. | खेडिओ |
| स्थाणु. | खाणू |
| स्तम्भ. | खम्भो, थम्भो |

ग

| | |
|---|---|
| रक्तः | रग्गो, रत्तो |

ङ्ग

| | |
|---|---|
| शुल्कम् | सुगं, सुक्कं |

च

| | |
|---|---|
| कृत्ति. | किची |
| चत्वरम् | चच्चर |
| प्रत्यूप॰ | पच्चूहो, पच्चूसो |

छ

| | |
|---|---|
| अक्षि | अच्छि |
| इक्षु | उच्छू |
| लक्ष्मी | लच्छी |
| कक्ष | कच्छो |
| क्षुतम् | छीअ |
| क्षीरम् | छीर |
| मदृक्ष | मरिच्छो |
| वृक्ष | वच्छो |
| मक्षिका | मच्छिआ |
| क्षेत्रम् | छेत्त |
| क्षुघ | छुहा |
| दक्ष | दच्छो |
| कुक्षि | कुच्छी |
| वक्ष | वच्छ |
| क्षुपण | छुण्णो |
| कक्षा | कच्छा |
| क्षार | छारो |
| कौक्षेपकम् | कुच्छेअय |
| क्षुर | छुरा |

| | |
|---|---|
| उक्षा | उच्छा |
| क्षतम् | छ्रय |
| सादृश्यम् | सारिच्छ |
| स्थगितम् | छइअ |
| क्षमा (पृथिवी) | छमा |
| ऋक्षम् | रिच्छ, रिक्खं |
| क्षणः (उत्सव ) | छणो |
| सामर्थ्यम् | सामच्छ, सामत्थ |
| उत्सुक' | उच्छुओ, ऊसुओ. |
| उत्सव' | उच्छवो, ऊसवो |
| स्पृहा | छिहा |

ज (वि०)

| | |
|---|---|
| अभिमन्यु. | अहिमज्जू |
| | अहिमन्नू |

झ्

| | |
|---|---|
| ध्वज. | झओ, धओ |

ञ्

| | |
|---|---|
| वृश्चिक. | विञ्चुओ |

ञ्ञ् (वि०)

| | |
|---|---|
| अभिमन्युः | अहिमञ्ञू |
| | अहिमञ्ञू |

ट्

| | |
|---|---|
| वृत्त' | वट्टो |
| प्रवृत्त. | पवट्टो |

| | |
|---|---|
| मृत्तिका | मट्टिआ |
| पत्तनम् | पट्टण |
| कदर्थित | कवट्टिओ |
| पर्यस्त | पल्लट्टो |

ट्ठ

| | |
|---|---|
| अस्थि | अट्ठी |
| विसंस्थुलम् | विसंठुल |
| स्त्यानम् | ठीण, थीण |
| चतुर्थ | चउट्ठो |
| अर्थ | अट्ठो |
| स्तम्भ | ठम्भो, थम्भो. |
| स्तब्ध | ठड्ढो |

ड्ड

| | |
|---|---|
| गर्त | गड्डो |
| गर्ता | गड्डा |
| सम्मर्द | सम्मड्डो |
| वितर्दी | विअड्डी |
| विच्छर्द | विच्छड्डो |
| च्छर्दी | छड्डी |
| कपर्द | कवड्डो |
| मर्दित | मड्डिओ |
| सम्मर्दित | सम्मड्डिओ |
| गर्दभ | गड्डहो, गद्दहो. |

ड्ढ

| | |
|---|---|
| स्तब्ध. | ठड्ढो |

| | |
|---|---|
| दग्ध: | दड्ढो |
| विदग्ध: | विअड्ढो |
| वृद्धि: | वुड्ढी |
| वृद्ध. | वुड्ढो |
| श्रद्धा | सड्ढा, सद्धा. |
| मूर्धा | मुड्ढा, मुद्धा. |
| अर्धम् | अड्ढ, अद्ध |

ण्

| | |
|---|---|
| पञ्चाशत् | पण्णासा |
| पञ्चदश | पण्णरह |
| दत्तम् | दिण्ण |

ण्ट्

| | |
|---|---|
| वृन्तम् | वेण्ट |
| तालवृन्तम् | तालवेण्ट |

ण्ड्

| | |
|---|---|
| कन्दरिका | कण्डलिआ |
| भिन्दिपाल: | भिण्डिवालो |

त्

| | |
|---|---|
| समस्त: | समत्तो |
| स्तम्ब. | तम्बो |

थ्

| | |
|---|---|
| स्तम्भ: | थम्भो, ठम्भो |
| स्तव: | थवो, तवो |

| | |
|---|---|
| पर्यस्त | पल्लत्थो, पल्लट्टो |
| उत्साह | उत्थारो, उच्छाहो |

ध्

| | |
|---|---|
| आश्लिष्ट | आलिद्धो |

न्त् (वि०)

| | |
|---|---|
| मन्यु | मन्तू, मन्नू |

न्ध (वि०)

| | |
|---|---|
| चिह्नम | चिन्ध इन्ध, चिण्ह |

प

| | |
|---|---|
| भस्म | भप्पो, भस्मो |
| आत्मा | अप्पा, अप्पाणो |

फ्

| | |
|---|---|
| भीष्म | भिप्फो |
| श्लेष्म | सेफो, सिलिम्हो |

भ्

| | |
|---|---|
| विह्वल | भिब्भलो, विब्भलो विहलो |
| ऊर्ध्वम् | उब्भ, उद्ध |

म्ब

| | |
|---|---|
| ताम्र | तम्ब |
| आम्र | अम्ब |

म्भ

| | |
|---|---|
| कश्मीरा | कम्भारा, कम्हारा |

र्

| | |
|---|---|
| ब्रह्मचर्यम् | बम्हचेर, बम्हचरिअ |
| तूर्यम् | तूर |
| सौन्दर्यम् | सुन्देर |
| शौण्डीर्यम् | सोण्डीर |
| धैर्यम् | धीर, धिज्ज. |
| पर्यन्तः | पेरन्तो, पज्जन्तो |
| आश्चर्यम् | अच्छेर, अच्छरिअ |

ल्

| | |
|---|---|
| आश्लिष्ट | आलिद्धो |
| कूष्माण्डी | कोहली, कोहण्डी |

ल्ल्

| | |
|---|---|
| पर्यस्तम् | पल्लट्ट, पल्लत्थ |
| पर्याणम् | पल्लाण |
| सौकुमार्यम् | सोअमल्ल |

स

| | |
|---|---|
| बृहस्पतिः | बहस्सई, बहप्फई, भयस्सई, भयप्फई |
| वनस्पतिः | वणस्सई, वणप्फई. |

ह्

| | |
|---|---|
| बाष्प. | बाहो |
| कार्षापण: | काहावणो. |
| [illegible] | [illegible], उक्ख |

| | |
|---|---|
| दक्षिणा: | दाहिणो, दक्खिणो |
| तीर्थम् | तूह, तित्थ, |
| कूष्माण्डी | कोहण्डी, कोहली |

नीचेना अक्षरो लोपाय छे —

अ ( वि )

| | |
|---|---|
| अलाबु | लाऊ, अलाऊ |
| अलाबु | लाउ, अलाउ |
| अरण्यम् | रण्ण, अरण्ण |

ण्

| | |
|---|---|
| तीक्ष्णम् | तिक्ख, तिण्ह |

त्र्

| | |
|---|---|
| रात्रि | राई, रत्ती. |

म्

| | |
|---|---|
| यमुना | जउँणा |
| चामुण्डा | चाउँण्डा |
| कामुक | काउँओ |
| अतिमुक्तकम् | अणिउँतय, |
| | अइमुन्तय, |
| | अइमुत्तय |

र

| | |
|---|---|
| चन्द्र | चन्दो, चन्द्रो |
| रुद्र | रुद्दो, रुद्रो |
| भद्रम् | भद्द, भद्र |
| समुद्र | समुद्दो, समुद्रो |

| | |
|---|---|
| द्रहः | दहो, द्रहो |
| धात्री | धाई, धत्ती, धारी |
| श्म | |
| श्मश्रु | मासू, मंसू, मस्सू |
| श्मशानम् | मसाण |
| श्च | |
| हरिश्चन्द्रः | हरिअन्दो |
| ह्न | |
| मध्याह्नः | मज्झन्हो, मज्झण्हो |
| दशार्हः | दसारो |
| (०) अनुस्वार | |
| विंशति | वीसा |
| त्रिंशत | तीसा |
| संस्कृतम् | सक्कय |
| संस्कार | सक्कारो |
| मांसम् | मास, मंस |
| मांसलम् | मासल, मंसल |
| कांस्यम् | कास, कंस |
| पांसु | पासू, पंसू |
| कथम् | कह, कहं |
| एवम् | एव, एवं |
| नूनम् | नूण, नूणं |
| इदानीम् | इआणि इआणिं |
| दानीं | दाणि, दाणिं |
| किम् | कि, किं |

| | |
|---|---|
| मसुरम | मसुह, संसुह |
| किंशुकम | केसुअ, किसुअ |
| सिंह. | सीहो, सिंघा |

अत्य व्यजनना नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे:—

अ

| | |
|---|---|
| शरत | सरओ |
| भिषक | भिसओ |

स

| | |
|---|---|
| दिक | दिसा |
| प्रावृट | पाउसो |
| दीर्घायु | दीहाउसो, दीहाउ |
| अप्सरा | अच्छरसा, अच्छ |

ह

| | |
|---|---|
| ककुभ | कउहा |
| धनु | धणुह, धणु |
| क्षुध | छुहा |

पदनी आदिमां रहेला स्वरनो पछी आवता सस्वर व्यजन सहित नीचे प्रमाणे आदेश थाय छे —

ग

| | |
|---|---|
| स्थविर. | थेरो |
| विचकिलम् | वेइल्ल |
| अयस्कार | एक्कारो |
| कदलम् | केल, कयलं. |
| कदली | केली, कयली |

| | |
|---|---|
| कर्णिकार:* | कण्णेरो, कण्णिआरो |

ग

| | |
|---|---|
| अग्नि | ग, अइ |

ओ

| | |
|---|---|
| पूतर. | पोरो |
| बदरम् | बोर |
| नवमालिका | नोमालिआ |
| नवफलिका | नोहलिआ |
| पूगफलम् | पोप्फल |
| मयूरा | मोरो, मऊरो |
| लवणम् | लोण |
| चतुर्गुणा | चोग्गुणो, चउग्गुणो |
| चतुर्थ | चोत्थो, चउत्थो |
| चतुर्दश | चोद्दह, चउद्दह |
| चतुर्वार | चोव्वारो, चउव्वारो |
| सुकुमार | सोमालो, सुकुमालो |
| कुतूहलम् | कोहल, कोउहल्ल |
| उदूखल | ओहलो, उऊहलो |
| उलूखलम | ओक्खल, उलूहल |

उम

| | |
|---|---|
| निषण्ण | णुमण्णो, णिसण्णो |

अणु तथा आउ

| | |
|---|---|
| प्रावरणम् | पगुरण, पाउरण, पावरण |

* इनो सस्वर व्यंजन सहित ए थाय छे

नीचे आपेला शब्दाने नीचे बनाव्या प्रमाणे आदेशो थाय

| | |
|---|---|
| स्तोक | थोक, थोव, थेव पक्षे थोअ |
| दुहिता— | धूआ पक्षे- दुहि |
| भगिनी— | बहिणी, पक्षे भइ |
| वृक्ष — | रुक्खो, पक्षे वच्छ |
| क्षिप्तम्— | छूढ, पक्षे खित्त |
| उत्क्षिप्तम्— | उच्छूढ, पक्षे उक्खि |
| वनिता— | विलया, पक्षे वणि |
| ईषत्— | कूर, पक्षे इसि |
| स्त्री— | इत्थी, पक्षे थी |
| धृति — | दिही, पक्षे, घिई |
| मार्जार — | मज्जरो, वजरो, पक्षे मञ्जारो |
| वैडूर्यम्— | वेरुलिअ, वेडुज्ज |
| इदानीम्— | एण्हि, एत्ताहे, पक्षे इआणिं |
| पूर्वम्— | पुरिम, पक्षे पुव्व |
| त्रस्तम्— | हित्थ, तट्ठ, पक्षे, तत्थ |
| बृहस्पति— | भयस्सई, भयप्फई, भयप्पई, पक्षे बहस्सई, बहप्फई, बहप्पई, बिहस्सई, बिहप्फई, बिहप्पई, बुहस्सई, बुहप्फई, बुहप्पई, |

| | |
|---|---|
| मलिनम्— | मइल, पक्षे मलिण |
| उभयम— | अवह |
| शुक्ति.— | सिप्पी, पक्षे सुत्ती |
| छुप्त — | छिक्का, पक्षे छुत्ता |
| आरब्ध — | आढत्ता, पक्षे आरद्धा |
| पदाति — | पाइक्का, पक्षे पयाई |
| दंष्ट्रा— | दाढा |
| रश्मि— | वाहि, वाहिर |
| आश्म— | हट्ट |
| मातृष्वसा— | माउसिआ, माउच्छा |
| पितृष्वसा— | पिउसिआ, पिउच्छा |
| निर्यक्— | तिरिच्छि |
| गृहम्— | घरो |

नीचे आपेला शब्दांने अनुस्वार आगम थाय छे.—

| | |
|---|---|
| वक्रम् | वंक |
| त्र्यस्रम् | तंस |
| अश्रु | अंसु |
| श्मश्रु | मंसु |
| पुच्छम् | पुंछ |
| गुच्छम | गुंछ |
| मूर्धा | मुंढा |
| पर्शु | पंसु |
| बुध्नम् | बुंध |
| कर्कोट | कंकोडो |

| | |
|---|---|
| दर्शनम् | दंसणं |
| वृश्चिक | विंछिआ |
| गृष्टि | गिंठी |
| मार्जार | मंजार |
| वयस्य | वयंसा |
| मनस्वी | मणंसी |
| मनस्विनी | मणंसिणी |
| मनःशिला | मणंसिला |
| प्रतिश्रुत | पडंसुआ |
| उपरि | अवरिं |
| अतिमुक्तकम् | अणिउंतयं  अइमुंतयं |

नीचे आपेला शब्दोमां (संयुक्तने ठेकाणे) नीचे प्रमाणे स्वर उमेराय छे

अ

| | |
|---|---|
| शार्ङ्ग | सारंग |
| क्ष्मा | छमा |
| श्लाघा | सलाहा |
| रत्न | रयण |
| स्नेह | सणेहो  नेहो |
| अग्नि | अगणी, अग्गी |
| प्लक्ष | पलक्खो |
| स्निग्धम् | सणिद्धं, सिणिद्धं, निद्धं |

इ

| | |
|---|---|
| अर्हति | अरिहइ |

| | |
|---|---|
| अर्हा | अरिहा |
| गर्हा | गरिहा |
| बर्ह | बरिहो |
| श्री | सिरी |
| ह्री | हिरी |
| ह्रीत | हिरीओ |
| अह्रीक | अहिरीओ |
| कृत्स्न | कसिणो |
| क्रिया | किरिया |
| दिष्ट्या | दिट्ठिआ |
| तप्त | तविओ, तत्तो |
| वज्रम् | वइरं, वज्जं |
| स्यात् | सिआ |
| स्याद्वाद | सिआवाओ |
| भव्य | भविओ |
| चैत्यम् | चेइअं |
| चौर्यम् | चोरिअं |
| स्थैर्यम् | थेरिअं |
| भार्या | भारिआ |
| गाम्भीर्यम् | गम्भीरिअं |
| | गहीरिअं |
| आचार्य | आयरिओ |
| सौन्दर्यम् | सुन्दरिअं |
| | सोन्दरिअं |
| | सारिअं |

| | |
|---|---|
| गाम | गरिअ |
| मृगं | मृगियाँ |
| ग्रामगणम् | पदग्गरिअ |
| भैरम | गारिम |
| गाम्न | मिरिगा |
| मिनभम | मिणिद्र, मणिद्र |
| | निद्र |
| गुणा | कमिणा, कमरा |
| अंगा | कणें |
| | धारिण, अदणा, अ |

इ

| | |
|---|---|
| ग्गा | ओग्गा |

उ

| | |
|---|---|
| अर्हत | |
| | अरहा, धरना, |
| | अभिगा |
| पदम | पउम पोम्म |
| छद्मम् | छउम, छम्म |
| मूर्खे | मुरुक्खा मुरुखा |
| द्वारम् | दुवार दार, दर,दुार |
| स्वे जना | सुवरुय |
| सूक्ष्म | सुव जणा |
| | सुम्म |

नीचे घ्यावेला शब्दान नीचे गताणा प्रमाणे लिख याय न

| | |
|---|---|
| दीर्घ | दिग्धो, दीहो |

| | |
|---|---|
| कर्णिकार. | कणिआरो, कण्णिआरो. |
| तैलम् | तेल्लं |
| मण्डूक | मण्डुक्को |
| विचकिलम् | वेइल्लं |
| ऋजु | उज्जू |
| व्रीडा | विड्डा |
| प्रभूतम् | बहुत्तं |
| स्रोत | सोत्तं |
| प्रेम | पेम्मं |
| यौवनम् | जुव्वणं |
| सेवा | सेव्वा, सेवा |
| नीडम् | नेड्डं, नीडं. |
| नखा | नक्खा, नहा |
| निहित | निहित्तो, निहिओ |
| व्याहृत | वाहित्तो, वाहिओ |
| मृदुकम् | माउक्कं, माउअं |
| एक | एक्का, एआ |
| कुतूहलम् | कोउहल्लं, कोउहलं |
| व्याकुल | वाउल्लो, वाउलो |
| स्थूल. | थुल्लो, थोरो. |
| हूतम् | हुत्तं, हूअं |
| दैवम् | दइव्वं, दइवं |
| तूष्णीक | तुण्हिक्को, तुण्हिओ |
| मूक | मुक्को, मूओ |
| | खण्णू ठाणू |

स्त्यानम्
थिण्ण, थीणं
अस्मदीयम
अम्हकेर, अम्हदं
चव नेअ
च्चेअ चेअ
चित्र
चिन्धअ, चिन्ध

नीचे आपला शब्दने छिन्न धातु नथी —

धृष्टद्युम्न
धट्ठज्जुण्णा
इस
दन्ति...

नीचे आपला शब्दमा स्वरूप भाग छे —

करणू
कणेरू
वाराणसी
वाणारसी
आलान
आणाला
अचलपुरम
अलचपुर
महाराष्ट्रम्
मरहट्ठ
ह्रद्
द्रहो
हरिताल
हलिआल,
हरिआल
लघुकम्
लहुअ, लहुअं
ललाटम
णडाल, णलाड

नीचे आपला शब्दा निपात सिद्ध छे —

गा
गाव
गाओ गावा
गवीनई
गावीआ
आप
पट्टा
पञ्चपञ्चाशत्
आऊ
पञ्चावण्णा, पणपन्ना

| | |
|---|---|
| त्रिपचाशत | तेवण्णा |
| त्रिचत्वारिंशत | तेआलीसा |
| व्युत्सर्ग | विउसग्गा |
| व्युत्सर्जनम् | वोसिरण |
| बहिर्मैथुन वा | बहिद्धा |
| कार्यम् | णामुक्कसिअ |
| क्वचित | कत्थइ |
| उद्वहति | मुव्वहइ |
| अपस्मार | वम्हलो |
| उत्पल | कन्दुट्ट |
| धिक धिक | छि छि, द्धि द्धि |
| धिगस्तु | धिरत्थु |
| प्रतिस्पर्द्धी | पडिसिद्धी, |
| | पाडिसिद्धी |
| स्थासक | चच्चिय |
| निलय | निहेलण |
| मघवान | मघोणो |
| साक्षी | सक्खिणो |
| जन्म | जम्मण |
| महान | महन्तो |
| भवान | भवन्तो |
| आर्शी | आसीसा |
| बृहत्तरम | वड्डयर |
| हिमोर | भिमोरा |
| क्षुल्लक | खुड्डुओ |

| | |
|---|---|
| गायन | गायणा |
| यष्ट | यट्ठी |
| ककुदम | ककुध |
| प्रकाशकम | अन्धष |
| लज्जावना | लज्जालुइणी |
| कुतूहल | कहु |
| चुन | मायन्दा |
| विष्णु | भट्टियो |
| श्मशानम | करसा |
| असुरा | अगया |
| खेल | गेड्ड |
| पाप्प रज | निगिन्डि |
| ष्निम | अह |
| समर्थ | पथला |
| पदक | नेलच्छो |
| कर्पास | पल्हो |
| वली | उज्जल्लो |
| ताम्बुलम | असुर |
| पुंश्चली | छिड्ई |
| शाखा | माहुलो इत्यादि |

धातुना आदेशो

संस्कृत धातुयाना प्राकृत आदेशो नीचे प्रमाणे थाय छे —

(स्वरान्त धातुत्रा)

ज्ञा— जाण, मुण पक्षे णा

| | |
|---|---|
| पा— | पिज्ज, उल्ल, पट्ट, घोट्ट पक्षे- पिअ |
| स्था— | ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प |
| उद्+स्था— | उट्ठ, उक्कुक्कर |
| स्ना— | अब्भुत्त, पक्षे-ण्हा |
| श्रद्+धा— | सद्दह |
| उद्+ध्मा— | उद्धमा |
| उद्+वा— | ओरुम्मा, वसुआ पक्षे-उव्वा |
| नि+द्रा— | ओहीर, उङ्घ पक्षे-निद्दा |
| आ+घ्रा— | आइग्घ पक्षे-अग्घा |
| निर्+मा— | निम्माण, निम्मव |
| प्र+स्था+णि— | पट्ठव, पेण्टव पक्षे पट्ठाव |
| वि+ज्ञा+णि— | वोक्क, अवुक्क पक्षे-विण्णव |
| या+णि— | जव पक्षे जाव |
| क्षि— | णिज्झर पक्षे झिज्ज |
| क्रा— | किण |
| वि+क्री— | विक्के, विक्किण |
| भी— | भा, बीह |
| आ+ली— | अल्ली |
| नि+ली— | णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क ल्हिक्क, पक्षे-निलिज्ज |
| वि+ली— | विरा पक्षे-विलिज्ज |
| रु— | रुञ्ज, रुण्ट पक्षे-रव. |
| श्रु— | हण पक्षे सुण |
| धू— | धुव पक्षे-धुण. |
| हु— | हो, हुव, हव पक्षे-भव. |

भू— हु (वि उपसर्ग वर्जीने)
,,— णिव्वड (पृथक् तथा स्पष्टीकरण म
प्र+भू— पहुप्प (प्रभुत्व अर्थमां)
दू+णि— दूम
सं+भू+णि— आसंघ, पक्षे- संभाव
कृ— कुण, पक्षे- कर
,,— णिआर. (एक आंखे जोवाना अर्थमां,
,,— णिट्ठुह (निष्टम्भ अर्थमां)
,,— संदाण (अवष्टम्भ अर्थमां)
,,— वावम्फ (श्रम अर्थमां)
,,— णिव्वोल (क्रोधथी मुख मलिन करवा अर्थमां)
,,— पयल्ल (ढीला थवा तथा लटकी जवाना अर्थ
,,— णीलुञ्छ (पडवु तथा छुटी जवु अर्थमां)
,,— कम्म (क्षौर करवाना अर्थमां)
,,— गुलल (खुशामत करवाना अर्थमां)
स्मृ— झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर
सुमर पयर, पम्हुह पक्षे सर
वि+स्मृ— पम्हुस, विम्हर, वीसर
व्या+हृ— कोक्क, पोक्क पक्षे वाहर
प्र+सृ— पयल्ल, उवेल्ल पक्षे पसर
,, ,— महमह (गन्ध प्रसरवाना अर्थमां)
निर्+सृ— णीहर, नील, धाड, वरहाड पक्षे-
नीसर
जागृ— जग्ग पक्षे जागर
व्या+पृ— आअड्ड पक्षे वावर.

सम्+वृ— साहर, साहट, पक्षे सवर.
आ+दृ— सन्नाम पक्षे-आदर
प्र+हृ— मार पक्षे पहर
अव+तृ— ओर, ओरस, पक्षे-ओअर
नि+वृ+णि – णिव्वोड पक्षे निवार
ध्यै— झा
गै— गा
सम्+स्त्यै— सखा
म्लै— वा, पव्वाय, पक्षे- मिला,
(पुनरुक्त धातुओ)
शक— चय, तर, तीर, पार पक्षे सक
फक्— थक
श्लाघ – सल्लह
खच् – वेअड, पक्षे-खच
पच— सोल्ल, पउल (पउल्ल) पक्षे-पय
मुच— छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रअव
णिल्लुञ्छ, धसाड पक्षे मुअ
, — णिव्वल (दुःख ने छोडवानां अर्थमां)
वच्— वेहव वेलव, जूरव, उमच्छ, पक्षे- वच
रच्- उग्गह, अवह, विडविड्ड (ड) पक्षे- रय
समा+रच्— उवहत्थ, सारव, समार, केलाय
पक्षे-समारय
सिच्— सिंच सिम्प पक्षे- सेअ
वि+रिच्+णि- ओलुंड उल्लुंड, पल्हत्थ पक्षे
विरेअ.

| | |
|---|---|
| मच्छ्— | पुच्छ. |
| गर्ज— | वुक्क पक्षे गज्ज |
| ,,— | ढिक्क (वलदनी गर्जनाना अर्थमां) |
| राज्— | अग्घ, छज्ज, सह, रीर, रह पक्षे राय. |
| मस्ज— | आउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड, खुप्प पक्षे मज्ज |
| पुज— | आरोल, वमाल पक्षे पुज |
| लस्ज्— | जीह पक्षे-लज्ज |
| तिज्— | ओसुक्क |
| मृज— | उग्घुस, लुञ्छ, पुञ्छ, पुस, फुस, लुह, हुल, रोसाण पक्षे-मज |
| भज्— | वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड विर, पविरज, करज, नीरज प भज. |
| व्रज— | वच्च |
| अनु+व्रज— | पडिअग्ग, पक्षे- अणुवच्च |
| रुज— | सिर |
| अर्ज— | विढव पक्षे अज्ज |
| युज्— | जुज, जुञ्ज, जुप्प |
| भुज— | भुंज, जिम्म, जेम, कम्म अण्ह समाण, चमढ, चड्ड |
| वट्+विज— | उन्निय |
| उप+भुज— | कम्मव पक्षे उवहुंज |
| वीज— | वाज्ज पक्षे वीज |

रज+णि— राव पक्षे-रज
वेष्ट— वेढ
सम्+वेष्ट— संवेल्ल
उद+वेष्ट— उव्वेल्ल पक्षे उव्वेढ
घट— गढ पक्षे-घट
सम्+घट— संगल पक्षे-संघट
स्फुट्— मुर (हास्य करण होय ता)
घट्+णि— परिवाड पक्षे-घड
उद+घट्+णि— उग्ग पक्षे-उग्घाड
वेष्ट+णि— परिआल पक्षे-वेढ
मृद्— चिच, चिचअ, चिंचिल्ल, रीड, टिविडिक्क पक्षे-मट
तुड— ताड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड, उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर पक्षे तुट
तड+णि— आहोड, विहोड पक्षे-ताड
घूर्ण्— घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल
वि+वृत्— ढंस पक्षे विवट्ट
पत्+णि— णिहोड पक्षे पाड
कथ— अट्ट पक्षे-कढ
ग्रन्थ— गण्ठ
मन्थ— घुसल, विरोल पक्षे-मथ
कथ्— वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह पक्षे-कह

| | |
|---|---|
| कथ्— | णिक्खर (दु ख कहेवाना अथमा) |
| रोमन्थ+णि— | ओगाल, वग्गोल पक्षे- रोमन्थ |
| मद्— | मच |
| ह्लाद्— | अवअच्छ |
| खाद्— | खा ( एकवचनमा ) |
| नि+सद्— | णुमज्ज |
| छिद्— | दुहाव, णिच्छल, णिज्झोड, णिव्वर णिल्लूर, लूर पक्षे छिन्द |
| आ+छिद्— | आअन्द, उद्दाल, पक्षे-अच्छिन्द |
| मृद्— | मल मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड |
| स्पन्द् | चुलुचुल, पक्षे- फन्द, |
| निर+पद्— | निव्वल, पक्षे निप्पज्ज |
| विस+वद्— | विअट्ट, विलोट्ट, फंस पक्षे- विसव |
| शद्— | झड, पक्खोड |
| मद— | मड |
| सम+पद् – | सपज्ज |
| आ+क्रन्द— | णीहर, पक्षे अक्कन्द |
| खिद्— | जूर विसूर, पक्षे खिज्ज |
| सिद्— | सिज्ज |
| ह्लाद्+णि— | अवअच्छ |
| छद्+णि— | णुम, नूम, सन्नुम, ढक, ओम्वाल, पव्वाल पक्षे छाय |
| रुध— | उत्थंघ, रुम्भ, रुज्झ, पक्षे रुन्ध |
| नि+षिध— | हक, पक्षे निसेह |

| | |
|---|---|
| क्रुध्— | जूर, पक्षे- कुज्झ |
| गृध्— | गिज्झ |
| सिध्— | सिज्झ |
| जन— | जा, जम्म |
| तन— | तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल, पक्षे -तण |
| तृप्— | थिप्प |
| उप+सृप् | अल्लिअ, पक्षे- उवसप्प |
| सम्+तप् | झंख, पक्षे संतप्प |
| वि+आप | ओअग्ग, पक्षे- वाव |
| सम्+आप् | समाण, पक्षे समाव |
| क्षिप— | गलत्थ अड्डक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल परी घत्त, पक्षे खिव |
| उद+क्षिप— | गुलगुछ उत्थंघ अल्लत्थ, उब्भुत्त उस्सिक्क हक्खुव, पक्षे-उक्खिव |
| आ+क्षिप् | णीरव, पक्षे अक्खिव |
| स्वप्— | कमवस, लिस लोट्ट पक्षे- सुअ |
| वेप्— | आयम्ब, आयज्झ पक्षे- वेव |
| वि+लप् | झंख, वडवड पक्षे विलव |
| लिप्— | लिम्प |
| गुप्— | विर, णड पक्षे गुप्प |
| क्रप्+णि— | अवहाव |
| प्र+दीप्— | तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त पक्षे पलीव |
| — | विच्छोल, पक्षे-कम्प |

अर्प्+णि— अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम पक्षे अप्प

दुह्— मभाज पक्षे - दुहम.

क्षुभ्— खउर, पड्डुह पक्षे - खुभ

आ+रभ्— आरभ, आढव, पक्षे-आरभ

उपा+लभ्— झंख पचार, वेलव पक्षे उवालम्भ

जृम्भ् — जम्भा

नम्— णिसुढ, पक्षे - णव (यहां भा ... व्यादलाराव वा)

गम्— जच्च

वि+श्रम् — णिव्वा पक्षे-वीसम

आ+क्रम् — ओहाव, उत्थार, छुन्द पक्षे अक्कम,

भ्रम्— टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल, ढण्ढल्ल, चक्कम्म, भम्मड भमड, भमाड, तलअण्ट, झण्ट, झप, भुम, गुम, फुम, फुम ढुम, ढुम, परी, पर पक्षे-भम

गम्— अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्ड, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ रम्भ, परिअल्ल वोल, परिअल, णिरिणास, णिवह अवसेह, अवहर पक्षे- गच्छ

आ+गम्— अहिपच्चुअ, पक्षे आगच्छ

सम्+गम्— अब्भिड पक्षे संगच्छ

अभि+आ+गम्— उम्मत्थ पक्षे अब्भागच्छ

प्रत्या+गम— पलोट्ट पक्षे-पच्चागच्छ.
शम्— पडिसा, परिसाम पक्षे- सम
रम— रखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिकिंच,
कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल पक्षे -
रम
कम्+णि— णिहुव पक्षे-काम
भ्रम्+णि— तालिअंट तमाड पक्षे-भाम,
भमाड, भमावे
उद्+नम्+णि—उत्थंघ, उल्लाल, गुलुगुछ, उप्पेल
पक्षे-उन्नाव
पूर्— अग्घाड, अग्घव, (उग्घव) उद्धुम,
अंगुम, अहिरेम पक्षे-पूर.
क्षर्— खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल,
णिट्टुअ
त्वर— तुवर, जअड.
,,— तूर ( त्यादि तथा शतृ प्रत्यय आगरा
होय ता)
,,— तुर (त्यादिभिन्न प्रत्यय आगल होय तो)
मिश्र्+णि— वीसाल, मेलव पक्षे-मिस्स
उद्+छल् — उत्थल्ल
वि+गल् — थिप्प, णिट्टुह पक्षे-विगल.
दल्— विसट्ट पक्षे-दल.
वल्— वम्फ पक्षे-वल
धवल्+णि— दुम. पक्षे-धवल
तुल्+णि— ओहाम पक्षे-तुल.

उद्+धूल+णि-गुण्ठ पक्षे-उद्धूल
दुल्+णि— रङ्खोल पक्षे-दोल
धाव्— धा (एक वचनमां)
प्लु+णि— ओम्बाल, पव्वाल पक्षे-पाव
भ्रंश्— फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल
पक्षे-भंस
नश्— णिरणास, णिवह, अवसेह,
पडिसा, सेह, अवहर पक्षे-नस्स
अव+काश—ओवास
सम्+दिश्— अप्पाह पक्षे-संदिस
दृश्— निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ,
अवयज्झ, वज्ज, सव्वव,
देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख,
अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ, निअ
अवआस, पास
स्पृश्— फास, फंस, फरिस, छिव छिह,
आलुंख, आलिह
प्र+विश्— रिअ पक्षे-पविस
प्र+मृश्— पम्हुस
नश्+णि— विउड, नासव, हारव, विप्पगाल,
पलाव पक्षे-नास
दृश्+णि— दाव, दंस, दक्खव पक्षे दरिस
वि+कोश+णि—पक्खोड पक्षे-विकोस
प्रकाश्+णि— णुव्व पक्षे-पयास
प्र+मुष्— पम्हुस

पिष्— णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चट्ट पक्षे पीस
भष्— भुक्क, बुक्क पक्षे- भस.
कृष्— कड्ढ, साअड्ढ, अञ्च, अणच्छ, अयञ्छ, आइंछ पक्षे-करिस
,,— अक्खोड (म्यान माथ तलवार खेंचवाना अर्थमा)
गवेषु — ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त पक्षे-गवेस
श्लिष् — सामग्ग, अवयास, परिअन्त पक्षे-सिलेस
मुक्ष् — णीरव पक्षे- बुहुक्ख
म्रक्ष् — चोप्पड पक्षे- मक्ख
काङ्क्ष् — आह, अहिलंघ, अहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प पक्षे-कंख.
प्रति+ईक्ष्—सामय, विहीर, विरमाल पक्षे-पडिक्ख
तक्ष्— तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ पक्षे-तक्ख
वि+कस्— कोआस, वोसट्ट पक्षे- विअस.
हस्— गुञ्ज पक्षे- हस
स्रंस्— ल्हस, डिम्भ पक्षे- संस
त्रस्— डर, वोज्ज, वज्ज पक्षे- तस
नि+अस्— णिम, णुम.

परि+घस्— पल्होट, पह्नट पल्हत्थ,
निर्+श्वस्— झर पक्षे- नीसस.
उद्+ल्लस — ऊसल, ऊसुम, णिल्लस, पुलआअ,
गुजोल्ल, आरोअ पक्षे- उल्लस
भास — भिस पक्षे- भास
ग्रस — घिस पक्षे- गस
जुगुप्स् — झुण, दुगुच्छ, दुगुञ्छ पक्षे-जुउच्छ
अव+ गाह्— ओवाह पक्षे- ओगाह
आ+ रुह— चड, वलग्ग पक्षे- आरुह.
मुह्— गुम्म, गुम्मड पक्षे- मुज्झ
दह — अहिऊल आलुङ्ख पक्षे- डह
ग्रह— वल, गेण्ह, हर, पग, निरुवार,
अहिपच्चुअ
स्पृह्+णि — सिह
आ+रुप्+णि—वल पक्षे आराव

# परिशिष्ट

## बोधपाठ १ लो

### शौरसेनी भाषा

सामान्य नियमो

१ अनादि असंयुक्त तकारनो शौरसेनीमां प्राय दकार थाय छे जेमके—पितरो–पिदरो
क्वचित् प्रयोगानुसार संयुक्त तकारनो पण दकार थाय छे जेमके—

मरन्तो—मरन्दो    अनेउरं- अन्देउर,
निचिन्तो—निचिन्दो.

अनादि थ नो विकल्पे ध थाय छे जेमके—
कथम्— कध, कह
राजपथ —राजपधो, राजपहो

र्यने स्थाने विकल्पे य्य थाय छे जेमके—
आर्यः— अय्यो, अज्जो पर्याकुल —परयाउलो, प:
उलो. सूर्य—सुय्यो

अकारान्त नामने पंचमीना एकवचनमा दु तथा
प्रत्यय लागे छे जेमके—
अय्यादु, अय्यादो

नकारान्त शब्दथी संबोधनना एकवचननो लोप अ
नकारनो अनुस्वार विकल्पे थाय छे जेमके—
भो राय! सुकम्म! पक्षे—भो राय! सुकम्म!

भवत् अने तेना जेवा भगवत् आदि शब्दोना अंत
व्यंजननो प्रथमाना एकवचनमां अनुस्वार थाय छे
अने एकवचनना प्रत्ययनो लोप थाय छे जेमके—
एदु भवं, समणे भगवं महावीरे, मघवं पागसासणे
कयत इत्यादि

इन्प्रत्ययान्त शब्दोना नकारना संबोधनना एकवचन-
मा विकल्पे आकार थाय छे जेमके—
भो कंचुइआ!, भो सुहिआ! पक्षे—भो कंचुइ!,
भो सुहि!

अकार सिवाय स्वरांत धातु थकी वर्तमानादि
कालमा प्रथम पुरुषना एकवचन तरीके दि प्रत्यय

अने अकारान्त धातु थकी दि तथा दे प्रत्यय थाय छे जेमके—

नेदि, देदि, हादि, गच्छदि, गच्छदे, रमदि, रमदे

९. मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकारनो विकल्पे धकार थाय छे जेमके—

भवध-होध, होध इह-इध, इह

१० भविष्य कालमा त्रणे पुरुषमा प्राकृतना हिने स्थाने स्सि प्रत्यय लागे छे जेमके—भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि

११ भू धातुना हकारनो विकल्पे भकार थाय छे जेमके—भवति—भादि, हादि, भुवदि, हुवदि, भवदि, हवदि

१२ सम्बन्धक क्त्वा प्रत्ययने स्थाने इय तथा दूण आदेश विकल्पे थाय छे जेमके—भविय, भादूण, हविय, होदूण, पढिय पढिदूण रमिय रन्दूण पक्षे—भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता

१३ कृ तथा गम् धातुथी पर क्त्वा प्रत्ययने अडुअ आदेश विकल्पे थाय छे, अने ते थाय छे त्यारे धातुना आद्य व्यजन सिवाय बाकीना लोप थाय छे जेमके—कडुअ, गडुअ पक्षे—करिय, करिदूण गच्छिय, गच्छिदूण,

१४ अन्य मकारथी पर णकार आगम विकल्पे थाय छे, इकार के एकार पर होय तो जेमके—जुत्तमिण, जुत्तणिमण, सरिसमिण, सरिसणिमण, किमेद, किणेद एवमेद, एवणेद

१५ नीचे अपेल अव्ययो नीचे प्रमाणे शौरसेनीमा वपराय छे

इदानीम्—दाणि "दाणि आणवेदु अय्यो"

तस्मात्— ता "ता अल एदिणा माणेण"

एव— य्येव "मो य्येव एसो"

ननु— ण "ण भव मे अग्गदो चलदि"

तावत्— दाव, ताव

१६. नीचे आपेला अव्ययो खास शौरसेनीमाज वप-राय छे

हञ्जे— दासीना आमंत्रणमा

हीमाणहे—विस्मय तथा निर्वेदना अर्थमा

अम्महे— हर्षमा

हीही— विदूषकने हर्ष बताववो होय तेमा वपराय छे

आ शिवाय बाकीनो सर्व विधि प्राकृतनी माफक शौरसेनीमा थाय छे

शब्दो

कदकच्च(कृतकृत्य) त्रि०— सिद्धप्रयोजनवालो,

थाम(स्थामन्) न०— पराक्रम

अपुरव(अपूर्व) त्रि०— अपूर्व

सुमरण(स्मरण) न०— स्मरण

अज्जिद(अर्जित) त्रि०— मेळवल

सग्ग(स्वर्ग) न०— स्वर्गलोक

अव्ययो

हो— संबोधनना अर्थमां

खु— निश्चित

त्ति— इति

अने अकारान्त धातु पछी दि तथा दे प्रत्यय थाय छे जेमके—

नेदि, देदि, मोदि, गच्छदि गच्छदे, रमदि, रमदे

९ मध्यम पुरुषना ह प्रत्यय तथा इह शब्दना हकारने विकल्पे धकार थाय छे जेमके—

भवध-होध, हाध इह-इध, इह

१० भविष्य कालमा त्रणे पुरुषमा प्राकृतना हिने स्थाने स्सि प्रत्यय लागे छे जेमके – भविस्सिदि, करिस्सिदि गच्छिस्सिदि

११ भू धातुना हकारना विकल्पे भकार थाय छे जेमके— भवति–भोदि, होदि, भुवदि, हुवदि, भवदि, हवदि

१२ सम्बन्धक क्त्वा प्रत्ययने स्थाने इय त ण दूण आदेश विकल्पे थाय छे जेमके—भविय, भोदूण, हविय होदूण, पढिय पढिदूण, रमिय रन्दूण पक्षे-भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता

१३ कृ तथा गम धातुओ पर क्त्वा प्रत्ययने अडुअ आदेश विकल्पे थाय छे, अने ते थाय छे त्यारे धातुना आद्य व्यजन सिवाय बाकीना लोप थाय छे जेमके— कडुअ, गडुअ पक्षे–करिय, करिदूण, गच्छिय, गच्छिदूण,

१४ अन्त्य मकारथी पर णकार आगम विकल्पे थाय छे, इकार के एकार पर होय तो जेमके—जुत्तमिण, जुत्तमिणम, सरिसमिण, सरिसमिणम किमेद, किण्णेद एवमेद, एवण्णेद

१५ नीचे आपेला अव्ययो नीचे प्रमाणे शोरसेनीमा वप-राय छे.

इदानीम्—दाणिं "दाणिं आणवेदु अय्यो"
तस्मात्— ता "ता अल पदिणा माणेण"
एव— य्येव "मो य्येव पमो"
ननु— ण "ण भअमे अगदो चलदि"
तावत्— दाव, ताव

१६. नीचे आपेला अव्ययो खास शोरसेनीमाज वपराय छे

इञ्जे— दासीना आमन्त्रणमा
हीमाणहे—विस्मय तथा निर्वेदना अर्थमा
घम्महे— हर्षमा
हीही— विदूषकने हर्ष बताववो होय तेमा वपराय छे

आ शिवाय बाकीना सर्व विधि प्राकृतनी माफक शोरसेनीमा थाय छे

शब्दो

कदकच्च(कृतकृत्य) त्रि०— सिद्धप्रयोजनवालो
थाम(स्थामन) न०— पराक्रम
अपुरव(अपूर्व) त्रि०— अपूर्व
सुमरण(स्मरण) न०— स्मरण
अज्जिद(अर्जित) त्रि०— मेळवेल
सग्ग(स्वर्ग) न०— स्वर्गलोक

अव्ययो

हहो— संबोधनना अर्थमा
खु— निश्चित.
इअ— इति

गाथाओ

तइ इन्दो निचिन्दो विरइदु अन्तेउरम्मि सो दाव।
इन्दम्म नाथ मित्त रञ्जेमि महिसामिआ! तुमय ॥१॥
एसो मणम्मि राय ज अत्र भयवनि विसरेदि मव।
रज्जिअउ तेग तुम जिणाराहणा मेहणीरवर! ॥२॥
अग्घावत्ते मयले कदकज्जा न हु धामम्मिरिणाए।
जिणनाथसुमरणे इथम अज्ञिदइहलोअपरलोअ ॥३॥
तावथ समग्गपुहवि तायए सग्गपि मोदु तुए भद।
होदु जयसोत्तमो तुए कित्तीए अपुरवाए ॥४॥
सत्तीइ थपुत्ताए हादूण हरिन्त हविय सेसोव्व।
होत्ता भरहोव्व तुम णगचक्क कुणहु रज्ज ॥५॥
करियावणिउद्धार गुरुभार गहुय कट्ठुय चलिपन्थ।
गच्छिय लच्छिम् उविन्दो भोदि भव भोदु इन्दसमो ॥६॥
अम्हेहि तुए पसमा किज्जदि अन्नेहि किज्जदे न कए।
कित्ती रमिस्सिदि तुए सग्गादु रसातलादोवि ॥७॥
दाणि तुए तुट्ठा ता देमि वर इअ तुमम्मि जुत्तम् इम।
जुत्त णिम खु मग्गसु इए किं पोन्नि मा चिन्त ॥८॥
भणिओ निवो किम् णद् निट्ठयणरज्जपि तुमइ तुट्ठाए।
तुज्झस्स्येव पसाया सुरीओ रञ्जेत्ति भणन्ति ॥९॥
हीमाणहे देवि! तुम सि दिट्ठा हीमाणहे हचकिदो भवादो।
ण अम्महे किं वि भणोपदेस हीही भणन्तावि समन्ति जेग

पु च सप्तम सर्गे ९३–१०२ –

## बोधपाठ २ जो

### मागधी भाषा

सामान्य नियमो

१ रेफनो ल् अने असयुक्त स्नो श थाय छे जेमके-

नरः— नले, सुत.— शुदे
करः— कले पुरुष —(पुरिसो)पुलिशे
हसः— हशे

२ ग्रीष्म शब्द सिवाय सयुक्त ष् ना स् थाय छे. जेमके—

शुष्कम्—शुस्कं विष्णु —विस्नु
कष्टम्— कस्ट

३ ट तथा ष्ठनो स्ट थायछे जेमके—

पट्टः— पस्टे सुष्ठु— शुस्टु.

४ स्थ तथा र्थनो स्त थाय छे जेमके—

उपस्थित:—उवस्तिद अर्थपति.—अस्तवदी.
सुस्थितः—शुस्तिदे सार्थवाह —शस्तवाहे

५. ज, तथा द्य नो य थाय छे अने य नो य रहे छे जेमके—

जानाति—याणदि मद्यम्— मय्य
जनपदः—यणवदे अद्य— अय्य
अर्जुन — अय्युणे विद्याधर —विय्याहले
दुर्जन — दुय्यणे याति— यादि
वर्जितः— वय्यिदे यानपात्रम्—याणवत्त.

६. न्य, ण्य, ज्ञ तथा ञ्ज नो ञ्ञ थाय छे जेमके—

अभिमन्युः—अहिमञ्ञू. प्रज्ञा पञ्ञा सर्वज्ञ शब्दञ्ञे

अन्यः— अञ्ञे　　अवज्ञा— अवञ्ञा
सामान्यम्—शामञ्ञ　अञ्जलिः— अञ्जली
पुण्यवान्— पुञ्ञवन्ते　धनञ्जयः—धणञ्जए.

७ (क) अनादि च्छ नो श्च थाय छे जेमके—
उच्छलति—उश्चलदि　पिच्छिल —पिश्चिले
पृच्छति— पुश्चदि

(ख) लाक्षणिक च्छ नो पण श्च थाय छे जेम के—
स०　　प्रा०　　मा०
तिर्यक् प्रेक्षते　तिरिच्छि पेच्छइ　तिरिश्चि पेस्कदि

८ अनादि क्ष नो जिह्वामूलीय ≍क थाय छे जेमके—
यक्षः— यःके　　राक्षसः—लःक्शे

९ पुँल्लिङ्गमा अकारान्त नाम थकी प्रथमाना एक वचन तरीके ओ ने बदले ए प्रत्यय थाय छे जेमके—
देवे, जिणे, वयर, सव्वे

१० अवर्णान्त नाम था पर षष्ठी एक वचनने आह अने बहुवचनने आहँ आदेश विकल्पे थाय छे जेमके—
जिणाह, जिणस्स कम्माह, कम्मस्स जिणाहँ, जिणाण कम्माहँ, कम्माण

११ अस्मद् शब्दने प्रथमाना एकवचन अने बहुवचनमा विभक्तिसहित हगे आदेश थाय छे जेमके—
अहं क्षत्रिय —हगे क्षत्तिए वय पुरुषा —हगे पुलिशा

१२ व्रज् धातुना जकार नो ञ्ञ थाय छे जेम के—
व्रजति वञ्ञदि

१३. प्रेक्ष् तथा आचक्ष्ना क्षनो स्क थाय छे जेमके—
प्रेक्षते— पेस्कदि　आचक्षते— आचस्कदि.

१४ तिष्ठने स्थाने चिष्ठ थाय छे जेमके—

तिष्ठति— चिष्ठदि

शौरसेनीना बधा नियमो मागधीने लागु पडे छे, अने बाकी प्राकृतनी माफक जाणवा.

शब्दो.

विघस्टण (विघट्टन) न०—अपनयन.
शलश्शदी (सरस्वती) स्त्री०—विद्यानी अधिष्ठात्री देवी
विवय्यिदकशाअ (विवर्जितकषाय) त्रि० क्रोधादिरहित.
लहिद (रहित) त्रि०—शिवाय
निशादपञ्ञ (निशातप्रज्ञ) त्रि०—कुशाग्र बुद्धिवालो-
यय (जगत्) न०—दुनिया
श(स्व) त्रि०—पोतानु
पउदव्व (प्रयोक्तव्य) त्रि०—योजवा योग्य

गाथाओ

कधिदे शुभोरदेशे शलश्शदीए तद्दो अपश्खलिदे ।
भवकाटनिम्टपदहणविघस्टणे शुस्दुमेवेत्र ॥१॥
अदिशुस्तिद निविस्टे चदुस्तवग्ग विवय्यिदकशाए ।
शाअय्ययागलहिदे शाहू शाहदि अणञ्ञमणे ॥२॥
पुञ्ञे निशादपञ्ञे सुपञ्ञले यदि पधेण वञ्जन्ते ।
शयलयपशञ्लत्त गश्चन्ते लहदि पलमपद ॥३॥
शापलविवरकालहिदे पेस्कन्ते सव्वम् ओह्लदिस्टीए ।
मिदपियम् आचस्कन्ते चिष्ठदि मग्गम्मि मोस्कस्स ॥४॥
पुदस्स यध कलिमो भत्ति एदाह इदि मदी जाएँ ।
ताण दोण्ह पि हगे हिदेत्ति बुद्धी पउदव्वा ॥५॥

—कु० च० अष्टमे सर्गे

भवति भोति. ददाति तेति.
नयति नेति

१२. अकारान्त धातुथी पर प्राकृतना इ तथा ए ने स्थाने अनुक्रमे ति तथा ते आदेश थायछे जेमके—
लपति-लपति, लपते गच्छति-गच्छति, गच्छते.
आस्ते-अच्छति, अच्छते रमते-रमति, रमते

१३ भविष्यकालमा प्रथमपुरुषना एकवचन तरीके एय्य प्रत्यय थाय छे जेमके—
भविष्यति हुवेय्य

१४ (क) भावकर्ममा थता क्य प्रत्ययने इय्य आदेश थाय छे. जेमके—
गीयते—गिय्यते रम्यते—रमिय्यते
दीयते—दिय्यते पठ्यते—पढिय्यते

(ख) कृ धातुने क्यप्रत्यय सहित की
जेमके—
क्रियते कीर [illegible]

१५ (क) सम्बन्धार्थक क्त्वाने स्थाने तून एवं
जेमके-मन्तुन, रन्तून, हसितून, पा[illegible]
(ख) ष्ट्वाने स्थाने द्धून, तथा त्थून [illegible]
जेमके—

नष्ट्वा-नद्धून, नत्थून दृष्ट्वा-तद्धून [illegible]

आ शिवाय बाकीना शौरसेनी भाषाना व[illegible] पैशाची भाषाने लागु पडे छे मात्र नियमावालिनी मी कलमथी ३१ मी कलम सुधीना व्यंजन लोप अने व्यंजन विकारना—सामान्य नियमो. अने तेना अप-

पादरूप विशेष आदेशो शौरसेनीने लागु पडे छे पण पैशाचीने लागु पडता नथी

### पैशाचीना शब्दो—

हितपक (हृदयक) न०–हृदय

उज्झित (उज्झित) त्रि० त्यक्त

कतकपट (कृतकपट) त्रि०–जेणे कपट करलु छे एहवु

### धातु

वल (वल्) पछा आववु वलवु

### चू० पै० ना शब्दो

अनालम्भ (अनारम्भ) त्रि० आरंभ रहित

लाच (राजन)–राजा

पन्धु (बन्धु) पु०–बान्धव

आलम्पित (आलम्बित) त्रि० आश्रित

### चूलिका पैशाचीना नियमो.

१ वर्गना त्रीजा अक्षर ने स्थाने प्रथम अक्षर अने चोथा अक्षरने स्थाने द्वितीय अक्षर थाय छे' जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| नगरम् | नकर | व्याघ्र. | वक्खो. |
| गिरितटम् | किरितट | निर्झर. | निच्छरो |
| राजा | राचा | झर्झर' | छच्छरो |

१ केटलाएक आचार्यना मत उपरना नियम अनादि अक्षरने ज लागु पडे छे आदिभूत तृतीय तथा चतुर्थनो अनुक्रमे प्रथम तथा द्वितीय अक्षर थतो नथी जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| गति | गती | धर्म | धम्मा |
| जीमूत | जीमूतो | झर्झर | झच्छरो |
| डमरुक | डमरुको. | ढक्का | ढक्का |
| [illegible] | दामोतरो | भगवती | भकवती |

| | | | |
|---|---|---|---|
| जर्जरम् | चच्चरं | गाढम् | काठं |
| जीमूतः | चीमूतो | ढक्का | ठक्का |
| तडागम् | तटाकं | षण्ढः | सण्ठो. |
| डमरुक. | टमरुको | मधुरम् | मथुर. |
| मदन | मतनो | बान्धव' | पन्थवो. |
| कन्दर्प | कन्तप्पो | धूलिः | थूली. |
| दामोदर | तामोतरो | रभस | रफसो. |
| बालक | पालको | रम्भा | रम्फा |
| मेघ | मेखो | भगवती | फकवती |

२. र्नो ल् विकल्पे थाय छे जेमके—

गौरी–गोली, गोरी चरणम्—चलन, चरनं

आ शिवाय बाकी बधु पैशाची माफक जाणवुं.

पैशाचीनी गाथाओ.

पञ्ञान राचिआ गुननिधिना रञ्ञा अनञ्ञपुञ्ञेन ।
चिन्तेतव्वं मतनातिवरिनो किल विजेतव्वा ॥१॥
सुद्धाकसायपिसितपरू जित करन कुतुम्ब चेसटो योगी ।
मुक्ककुटुम्बसिनेहो न चलति पन्तून मुक्खपत ॥२॥
पन्ति कमाया नत्थून यन्ति नट्ठून सच्चकम्माइ ।
ममसलिलसिनातान वज्झिकतकरुपदमरियान ॥३॥
पति अरिहपरममन्तो पढिय्यते कीरते न जीववधो ।
यातिस तातिस जातो ततो जनो निव्वुतिं याति ॥४॥
अच्छति रन्ने सेलेवि अन्जते दट्ठतप तपन्तोवि ।
ताव न लभेय्य मुक्ख याव न विसयान तूरातो ॥५॥
तूरातु नेन पेच्छति मुत्तिसिरी नाह योगकिरियाए ।
चत्तारिमगलपमुतिमन्तम् उक्खसो समानेन ॥६॥

कु० च० अष्टमे सर्ग ६–११.

चूलिकापैशाचीनी गाथाओ

वन्दू सठासठेसुवि आलम्बितउपममो अनालम्फो।
स वन्मलाचचलने अनुझायन्तो हवति योगी ॥७॥
मच्छरडमरुकभेरीढक्काजीमूतगफिरघोसावि।
पम्हनियोजितमा ग्रप्प जस्स न टोलिन्ति सो धन्नो ॥८॥

-कु० च० अष्टम सर्ग १२-१३

## बोधपाठ ४ थो

### अपभ्रंश भाषा

सामान्य नियमो

१. अपभ्रंशमा एक स्वरने बदले बीजो स्वर प्रायः थायछे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| वचन— | वेण, | वीण | |
| कृत्य— | कच्चु, | काच | |
| बाहु— | बाह, | बाहा, | बाहु |
| पृष्ठ— | पुट्ठि, | पिट्ठि, | पट्ठि |
| तृण— | तणु, | तिणु, | तृणु |
| सुकृत— | सुकिदु, | सुकिओ, | सुकृदु |
| क्लिन्न— | किन्नओ, | किलिन्नओ | |
| रेखा— | लिह, | लेह, | लीह |
| गौरी— | गउरि, | गोरि | |

२ विभक्तिनी पूर्व नामना अन्त्य दीर्घ स्वरनो ह्रस्व अने

१ सुकृतो पण विभक्तिमा समावेश थायछे

ह्रस्व स्वरनो दीर्घ विकल्पे थाय छे जेमके—

श्यामल— सामला, सामल
दीर्घ— दीहा, दीह
स्वर्णरेखा— सुवण्णरेह, सुवण्णरेहा
निद्रया— निद्दए, निद्दाए

३ अनादि, असंयुक्त तथा स्वरथी पर कनो ग्, खनो घ्, तनो द्, थनो ध, पनो ब्, फनो भ्, थायछे जेमके—

विक्षोभकर–विच्छोहगर शपथ—सवध
सुख— सुघ सफल—सभल
कथित— कधिद्

४ अनादि तथा असंयुक्त म्नो वँ विकल्पे थाय छे जेमके—

कमल— कवॅल, कमल
भ्रमर— भवॅर, भमर

५ (क) संयुक्त र्नो विकल्पे लोप थायछे जेमके—

प्रिय — पिय, प्रिय

(ख) क्वचित् संस्कृतमा रेफ न होय तोपण अपभ्रंशमां आवे छे जेमके—व्यास–ब्रास, वास

६ प्राकृतमा थयेल म्हनो अपभ्रंशमा म्भ् विकल्पे थाय छे जेमके—

| संस्कृत | प्राकृत | अपभ्रंश |
| --- | --- | --- |
| ग्रीष्म— | गिम्ह | गिम्भ, गिम्ह |
| श्लेष्म— | सिम्ह | सिम्भ, सिम्ह |
| ब्राह्म— | बम्ह | बम्भ, बम्ह. |

७ अनादि तथा असंयुक्त य तथा वनो लोप थायछे,

अने तेने बदले आगला स्वरनो अनुक्रमे ए तथा ओ थाय छे जेमके—

| संस्कृत | प्राकृत | अपभ्रंश |
|---|---|---|
| वचन— | वयण, | वेण |
| शयन— | सयण, | सेण |
| नयन— | नयण, | नेण |
| नवनीत— | नवणीअ, | नोणीअ |

तद्धित प्रत्ययो

८ पुंल्लिंग तथा नपुंसक लिंग वाचक नामने स्वार्थमां अ, अड, उल्ल, अडअ, उल्लअ तथा उल्लडअ प्रत्यय लागे छे जेमके—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दृष्ट— | दिट्ठअ | हृदय— | हिअडअ |
| दोष— | दोसड | चूड— | चूडुल्लअ |
| कुट— | कुडुल्ल | बल— | बलुल्लडअ |

९ नामने संबंधार्थमा केर अने तण प्रत्यय लागे छे जेमके—

जसुकेरु ( ), अम्हह तणु ( )

१० युष्मद् तथा अस्मद् शब्दने संबंधार्थमा आर प्रत्यय लागे छे जेमके —

| | | | |
|---|---|---|---|
| त्वदीय— | तुहार | मदीय— | महार. |
| युष्मदीय— | तुम्हार | अस्मदीय— | अम्हार |

११ नामने भाव अर्थमा प्पण तथा त्तण प्रत्यय लागे छे. जेमके—

वृद्धत्व— वड्डुप्पण, व:

भद्रत्व— भल्लप्पण, भल्लत्तण

पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा— | उ, ओ, ०(लुक्) | ०(लुक्) |
| द्वितीया— | उ, ०(लुक्) | ०(लुक्) |
| तृतीया— | एण, एण, ए | एहिं, हिं |
| पञ्चमी— | हु, हे | हुं |
| षष्ठी— | सु, स्सु, हो, ०(लुक्) | हं, ०(लुक्) |
| सप्तमी— | इ, ए | हिं |
| संबोधन— | उ, ओ, ०(लुक्) | हो, ०(लुक्). |

जिण शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | जिणु, जिणो, जिण, जिणा | जिण, जिणा |
| द्वि० | जिणु, जिण, जिणा | जिण, जिणा |
| तृ० | जिणेण, जिणेण जिणे | जिणेहिं, जिणाहिं, जिणहिं. |
| प० | जिणहु, जिणाहु, जिणहे, जिणाहे | जिणहुं, जिणाहुं |
| ष० | जिणासु, जिणसु, जिणस्सु, जिणाहो, जिणहो, जिण, जिणा | जिणाहं, जिणहं, जिण, जिणा |
| स० | जिणि, जिणे | जिणाहिं, जिणेहिं |
| सं० | जिणु, जिणो, जिण, जिणा | जिणहो, जिणाहो, जिण, जिणा |

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोना रूपो जिण शब्द माफक जाण

इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंग शब्दोना प्रत्ययो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | ०(लुक्) | ०(लुक्) |
| द्वि० | ०(लुक्) | ०(लुक्) |
| तृ० | ण, म्, णा, णा | हिं |
| प० | हे | हु |
| प० | ०(लुक्) | हु, हं |
| स० | हिं | हु, हिं |
| सं० | ०(लुक्) | हो, ०(लुक्) |

इसि शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | इसि, इसी | इसि, इसी |
| द्वि० | इसि, इसी | इसि, इसी |
| तृ० | इसिण, इसीण, इसिं, इसीं, इसिणा, इसिणं, इसीणा, इसीणं | इसिहिं, इसीहिं |
| प० | इसिहे, इसीहे | इसिहु, इसीहु |
| प० | इसि, इसी | इसिहु, इसीहु, इसिहं, इसीहं |
| स० | इसिहि, इसीहि | इसिहिं, इसीहिं, इसिहु, इसीहु |
| सं० | इसि, इसी | इसिहो, इसीहो, इसि, इसी |

इकारान्त पुल्लिंग शब्दोना रूपो इसि माफक जाणवा.

### गुरु शब्दना रूपो.

| | ए० | ब० |
| --- | --- | --- |
| प्र० | गुरु, गुरू | गुरु, गुरू |
| द्वि० | गुरु, गुरू | गुरु, गुरू |
| तृ० | गुरुण, गुरूण, गुरु, गुरू, गुरुणा, गुरुण गुरूणा, गुरूणा, | गुरुहिं, गुरूहिं |
| प० | गुरुहे, गुरूहे | गुरुहुं, गुरूहुं |
| ष० | गुरु, गुरू | गुरुहुं, गुरूहुं, गुरुहं, गुरूहं |
| स० | गुरुहि, गुरूहि | गुरुहिं, गुरूहिं. गुरुहुं, गुरूहुं |
| सं० | गुरु, गुरू | गुरुहो, गुरूहो, गुरु, गुरू |

उकारान्त पुल्लिंग शब्दोना रूपो गुरु शब्द माफक जाण

### अकारान्तनपुंसकलिंग शब्दोना प्रत्ययो

| | ए० | ब० |
| --- | --- | --- |
| प्र० | उ,० (लुक्) | इं |
| द्वि० | उ,० (लुक्) | इं |
| सं० | उ,० (लुक्) | हो, इं |

बाकीना प्रत्ययो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा

### नेत्त शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
| --- | --- | --- |
| प्र० | नेत्तु, नेत्त, नेत्ता | नेत्तइं, नेत्ताइं |
| द्वि० | नेत्तु, नेत्त, नेत्ता | नेत्तइं, नेत्ताइं |
| सं० | नेत्तु, नेत्त, नेत्ता | नेत्तहो, नेत्ताहो, नेत्तइं, नेत्ताइं. |

बाकीना रूपो अकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा ।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोनां रूपो नेत्तशब्दनी माफक जाणवा

इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंगना प्रत्ययो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | ० (लुक) | इं |
| द्वि० | ० (लुक) | इं |
| स० | ० (लुक) | हो, इं |

बाकीना प्रत्ययो इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा

अच्छि शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | अच्छि, अच्छी | अच्छिइं, अच्छीइं |
| द्वि० | अच्छि, अच्छी | अच्छिइं, अच्छीइं |
| स० | अच्छि, अच्छी | अच्छिहो, अच्छीहो, अच्छिइं, अच्छीइं |

बाकीना रूपो इकारान्त पुल्लिंगनी माफक जाणवा ।

इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दना रूपो अच्छि शब्द माफक जाणवा

धणु शब्दनां रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | धणु, धणू | धणुइं, धणूइं |
| द्वि० | धणु, धणू | धणुइं, धणूइं |

सं० धणु, धणू	धणुहो, धणूहो,
धणुइं, धणूइं

बाकीना रूपो उकारान्त पुलिंगनी माफक जाणवां
उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोना रूपो धणु शब्द माफक जाणवा

जेने छेडे कनो उकृत्त अ होय एवा शब्दोने नपुंसक लिंगमा प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमा शब्द ना उने बदले मात्र उ प्रत्यय लागे छे जेमके—

नेत्तअ (नेत्रक) शब्द

प्र० द्वि० नेत्तउ,	नेत्तअइं, नेत्तआइं
बाकीना रूपो नेत्त शब्द माफक जाणवां.

अच्छिअ (अक्षिक) शब्द

प्र० द्वि० अच्छिउ	अच्छिअइं, अच्छिआ

धणुअ (धनुष्क)शब्द

प्र०-द्वि० धणुउ	धणुअइं, धणुआइं.



# बोधपाठ ५ मो

## अपभ्रंश भाषा–चालु

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्दो

### स्त्रीलिंगना प्रत्ययो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | ०(लुक्) | उ, ओ |
| द्वि० | ०(लुक्) | उ, ओ |
| तृ० | ए | हिं |
| पं० | हे | हु |
| ष० | हे, ०(लुक) | हु, ०(लुक्) |
| स० | हि | हिं |
| सं० | ०(लुक्) | हो, ०(लुक्) |

१ स्त्रीलिंगवाचक नामने स्वार्थमा ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय लागे छे जेमके—

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली =माल्लुल्ली, माला+अडिआ=मालडिआ, माला+उल्लिआ= माल्लुल्लिआ माला+उल्लडिआ=माल्लुल्लडिआ



मालडिआ (माला) शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | मालडिआ, मालडिअ | मालडिआउ, मालडिअउ, मलडिआओ, मालडिअओ |

| | | |
|---|---|---|
| द्वि० | मालदिआ, मालदिअ | मालदिआउ, मालदिअउ, मालदिआओ, मालदिअओ |
| तृ० | मालदिआए, मालदिअए | मालदिआहिं, मालदिअहिं |
| प० | मालदिआहे, मालदिअहे | मालदिआहु मालदिअहु |
| प० | मालदिआहे, मालदिअहे, मालदिआ, मालदिअ | मालदिआ, मालदिअ, मालदिआहु, मालदिअहु |
| स० | मालदिआहिं मालदिअहिं | मालदिआहिं, मालदिअहिं |
| सं० | मालदिआ, मालदिअ | मालदिआहो, मालदिअहो, मालदिआ, मालदिअ |

आकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोना रूपो मालदिआ शब्द माफक जाणवा

---

बुद्धि शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | बुद्धि, बुद्धी | बुद्धिउ, बुद्धिओ, बुद्धीउ, बुद्धीओ |
| द्वि० | बुद्धि, बुद्धी | बुद्धिउ, बुद्धीउ, बुद्धिओ, बुद्धीओ |
| तृ० | बुद्धिए, बुद्धीए, | बुद्धिहिं, बुद्धीहिं |
| प० | बुद्धिहे, बुद्धीहे | बुद्धिहु, बुद्धीहु |
| प० | बुद्धिहे, बुद्धीहे, बुद्धि, बुद्धी | बुद्धिहु, बुद्धीहु, बुद्धि, बुद्धी |
| स० | बुद्धिहिं, बुद्धीहिं | बुद्धिहिं, बुद्धीहिं |

स० बुद्धि, बुद्धी. बुद्धिहो, बुद्धीहो, बुद्धि, बुद्धी.

इकारान्त स्त्रीलिंगशब्दोना रूपो बुद्धि शब्द माफक जाणवां

---

कुड्डली शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | कुड्डली, कुड्डलि | कुड्डलीउ, कुड्डलिउ, कुड्डलीओ कुड्डल्लिओ |
| द्वि० | „ | „ |

बाकीना रूपो बुद्धि शब्दनी माफक जाणवा

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोना रूपो कुड्डल्ली शब्द माफक जाणवा

---

धेणु शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | धेणु, धेणू | धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ |
| द्वि० | धेणु, धेणू | धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ |
| तृ० | धेणुए, धेणूए | धेणुहिं, धेणूहिं |
| प० | धेणुहे, धेणू हे | धेणुहु, धेणूहु |
| ष० | धेणुहे, धेणूहे, धेणु, धेणू | धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू |
| स० | धेणुहि, धेणूहि | धेणुहिं, धेणूहिं |
| स० | धेणु, धेणू | धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू |

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोना रूपो धेणु शब्द माफक जाणवा

चमू शब्दना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | चमू, चमु | चमूउ, चमुउ, चमूओ, चमुओ |
| द्वि० | ,, | ,, |

बाकीना रूपो धेणु शब्दनी माफक जाणवा

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोना रूपो चमू शब्द माफक जाणवा

## सर्वनाम शब्दो

अकारान्त सर्वादि शब्दोना रूपो सामान्य रीते जिण शब्दनी माफक थाय छे, खास फेरफार थाय छे, ते नीचे प्रमाणे छे.—

१ इदम् शब्दने आय आदेश थाय छे अने सर्व शब्दने साह तथा किम् शब्दने कवण तथा काइ[1] आदेश विकल्पे थाय छे

२ अकारान्त सर्वादि शब्दाने पचमीना एकवचनमा हां तथा सप्तमीना एकवचनमा हिं प्रत्यय लागे छे जेमके- सव्वहां, सव्वाहां, सव्वहिं सव्वाहिं बाकीना रूपो जिण शब्द माफक जाणवा

३ यद् तथा तद् ने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमा विभक्ति सहित अनुक्रमे ध्रु तथा त्र आदेश विकल्पे थाय छे

४ किम् शब्दने पचमीना एकवचनमा विभक्तिसहित किहे आदेश विकल्पे थाय छे पक्षे काहां, कहां

५ एतद् तथा अदस् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना

---

१ काइ शब्दना रूपो इकारान्त माफक जाणवा

बहुवचनमां विभक्ति सहित अनुक्रमे एइ तथा ओइ आदेश थाय छे

६ एतद् शब्दने प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमा विभक्ति सहित पुल्लिंगमा एहो, स्त्रीलिंगमा एह तथा नपुंसकलिंगमा एहु आदेश थाय छे

७ यद्, तद् तथा किम् शब्दने स्त्रीलिंगमां षष्ठीना एकवचनमा विभक्ति सहित अनुक्रमे, जहे, तहे तथा कहे आदेश थाय छे

८ इदम् शब्दने नपुंसक लिंगमा प्रथमा तथा द्वितीयाना एकवचनमा विभक्ति सहित इमु आदेश थाय छे

नोंध—स्त्रीलिंगमा सर्वादि शब्दाने ई तथा आ प्रत्यय लागवाथी सव्वी तथा सव्वा यनशे, अने तेना रूपो कुडुल्ली तथा मालडिआ माफक जणवा

तुम्ह (युष्मद्) ना रूपा

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | तुहु | तुम्हइ, तुम्हे |
| द्वि० | पइ, तइ | तुम्हइ, तुम्ह |
| तृ० | पइ, तइ | तुम्हेहिं |
| प० | तउ, तुज्झ, तुध्र | तुम्हह |
| ष० | तउ, तुज्झ, तुध्र | तुम्हह |
| स० | पइ, तइ | तुम्हासु |

अम्ह (अस्मद्)ना रूपो

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | हउ | अम्हइ, अम्हे. |

| | |
|---|---|
| द्वि० मई | अम्हइ, अम्हे. |
| तृ० मइ | अम्हेहिं |
| प० महु, मज्झु | अम्हह |
| ष० महु, मज्झु | अम्हह |
| स० मइ | अम्हासु |

## शब्दना आदेशो

२ नीचे आपेला संस्कृत शब्दोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे —

| | |
|---|---|
| आपद्—आवइ | अवस्कन्द—दडवड |
| विपद्—विवइ | मूढ—नालिअ, वढ |
| संपद्—संपइ | यादृश—जइस, जेह |
| वर्त्म—विच्च | तादृश—तइस, तेह |
| कौतुक—कोड्ड | कीदृश—कइस, केह. |
| क्रीडा—खेड्ड | ईदृश—अइस, एह |
| दृष्टि—द्रेहि | यावत्—जाम, जाउ, जामहिं, जेवड पक्षे जेत्तुल |
| नवाक्षत—नवख | तावत्—ताम, ताउ, तामहिं, तेवड पक्षे तेत्तुल |
| हे सखि—हेल्लि | इयत्—एवड, पक्षे एत्तुल |
| भय—द्रवक | कियत्—केवड, पक्षे केत्तुल, |
| असाधारण—सड्ढल | एतावत्—एत्तुल |
| गाढ—निचट | परस्पर—अवरोप्पर. |
| अद्भुत—ढक्करि | अन्यादृश—अनाइस, अवराइस. |



शब्दो

धम्मक्खर (धर्माक्षर) न० धर्मन अक्षर
खाणि (खनि) पु० खाण
कयकिच (कृतकृत्य) त्रि० धन्य पुरुष। साध्यो छे अर्थ एवो पुरुष
हार ( ) पु अग्रह
अथिर (अस्थिर) त्रि० जल न थाम थवु
तुण्ट ( ) पु० घुरेरा
विहव (विभव) पु० वैभव

धातुओ

जोअ (ज्ञुत)—जो।
पिच्छ (दृश्)—जोवु
तडप्फड ( ) तडफडवु

अव्ययो

निरु ( ) अ० निश्चित
निरुत्तउ ( ) अ० निश्चित

गाथाओ

जो जहा होतउ सो तहां होतउ सत्तुवि मित्तुवि किंहे वि ह आवउ।
जहिंवि ह तहिंवि ह सग्गे लीणा, एहउ दिट्ठिहि दोसिवि जोअह ॥१॥
कासुवि जासुवि तासुवि पुरिसहो, कहेवि ह जहेवि ह तहेवि ह नारिहे।

य हितु वयणु चविज्जइ थोवउ वि परिणमइ समत्त-
पयारेहिं ॥२॥
त बोहिअइ जु सच्चु पर इमु धम्मक्खरु जाणि ।
एहा परमत्था एहु सिवु एह सुहरयणह खाणि ॥३॥
एइ सुसावग ओइ मुणि, पिच्छइ तवहिं तवाइ ।
आपहो जम्महो एहु फलु नायउ विसय सुहाइ ॥४॥
साहुवि लोउ तडप्फडइ सन्तुवि पण्डिउ जाणु ।
कवणुवि एहु न चिन्तवइ काइवि अ निव्वाणु ॥५॥
सव्वहो कासुवि उवरि तुहु एहु चिन्तसु निम्मोह ।
तुम्हे म निरटहु भवगहणि तुम्हइ सुहिआ होह ॥६॥
तुम्हे निक्खउ अप्पु जिम्वँ तुम्हइ जिम्वँ अप्पाणु ।
पइ अणुसासउ पसमु करि तइ नेउ अक्खउ ठाणु ॥७॥
पइ करिअव्वी जीवदय तइ बोल्लेवउ सच्चु ।
पइ छुहु तइ कल्लाण तउ तउ हाविमि कपकिच्चु ॥८॥
सेवेअव्वा साहु पर तुम्हेहिं इह जम्मम्मि ।
तुज्झु समत्तणु तुध खम तउ सजमु चिन्तेमि ॥९॥
कलिमलु तुज्झु पणामिहो तउ वचेहो पावु ।
मुक्खुवि तुध न दूरि ठिउ करि धम्मक्खरि हावु ॥१०॥
तुम्हह मुक्खु न दूरि ठिअ जइ सजमु तुम्हासु ।
इउ तुम्ह बन्धवु इअ भणिवि एहु जम्पहु सव्वेसु ॥११॥
अम्हे निन्दउ कोवि जणु अम्हइ वण्णउ कोवि ।
अम्हे निन्दहु कवि नवि नम्हइ वण्णहु कवि ॥१२॥
मइ मिल्लेवा भवगहणु मइ थिर एही बुद्धि ।
सत्था हत्थउ सुगुरु मइ पावउ अप्पहो सुद्धि ॥१३॥
अम्हेहिं केणवि तिहिवसिण एहु मणुअत्तणपत्तु ।

मन्कु अट्ठे होउ लिवु मइ दघउ मिच्छत्तु ॥१४॥
अम्हह मोह परोहु गउ मजमु हुउ अम्हासु।
निसय न लोलिम मइ करहि म करहि इय वीमासु॥१५॥

—सु० च० अष्टमे सर्गे २६–४०.

× × × × × × ×

कायकुडुल्ली निरु अथिर जीवियडउ चलु एहु।
ए जाणिवि भवदोसडा असुहउ भावु चएहु ॥१६॥
ते धन्ना कन्नुल्लडा हिअउल्ला ति कयत्थ।
जे खणि खणिवि नवुल्लडअ घुण्टहि धरहिं सुअत्थ ॥१७॥
पट्टी कन्नि जिणागमहो वत्तडिआवि हु जासु।
अम्हारउँ तुम्हारउँ वि एहु ममत्तु न तासु ॥१८॥
जीवु जित्तुलु जिअइ जियलोइ जइ तित्तलु दमु करइ।
गणइ विहवु एत्तुलु न केत्तुलु तो इत्तहे नाणु लहि जाइ
लोइ तेत्तहि निम्मत्तउ ॥१९॥

—सु० च० अष्टमे सर्गे ७२–७५

# बोधपाठ ६ ठो.

## (अपभ्रंश भाषा-चालु)

### धातुओ

१. वर्तमानकालना प्राकृत तथा शौरसेनी करता विशेष प्रत्ययो नीचे प्रमाणे छे —

| | ए० | ब० |
|---|---|---|
| प्र० | × | हिं |
| म० | हि | हु |
| उ० | उं | हुं |

२. आज्ञार्थमां प्राकृत उपरांत मध्यम पुरुषना एकवचनमां इ, उ तथा ए प्रत्यय विशेष लागे छे

३. भविष्यकालमां प्राकृतना हि ने स्थाने स विकल्पे लागे छे

४. नीचे आपेला संस्कृत धातुओने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे —

| | |
|---|---|
| गर्ज्—बुक्क | तक्ष्—छोल्ल |
| भू—हुच | दृश्—प्रस्स. |
| ब्रू—ब्रुव | ग्रह्—गृण्ह |

### कृदंतो

५. कृ धातुने कर्ममां वर्तमान कालना उत्तम पुरुषना एकवचनमां प्रत्यय सहित कीसु आदेश विकल्पे थाय छे पक्षे क्रियउ (क्रिये)

६ तव्य प्रत्यय ने इएव्वउं, एव्वउं तथा एवा आदेश थाय छे जेमके—

कर्तव्यम्—करिएव्वउं, करेव्वउं, करेवा

७ क्त्वा प्रत्ययने इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि तथा एविणु आदेश थाय छे

८ गम् धातुथी एप्पिणु तथा एप्पिना एकारनो विकल्पे लोप थाय छे जेमके—गम्प्पिणु, गमेप्पिणु, गम्प्पि, गमेप्पि

९ तुम् प्रत्ययने एवि, एविणु एवि, एविणु, एवं अण, अणह तथा अणहिं आदेश थाय छे

१० धातुथकी कर्ता अर्थमा अणअ प्रत्यय थाय छे जेमके—मारणअ

११ नीचे आपेला कृदन्तने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे.—

विपण्ण—वुन्न रम्य—रवण्ण

उक्त—वुत्त

अव्ययोना आदेशो

१२. नीचे आपेला अव्ययोने नीचे बताव्या प्रमाणे आदेशो थाय छे —

| | |
|---|---|
| कथम्—किम, किवँ, केम, केवँ, किध, किह | मनाक्—मणाउ |
| | यावत्—जाम, जाउ, जामहिं |
| यथा—जिम, जिवँ, जेम, जेवँ, जिध, जिह | तावत्—ताम, ताउ, तामहिं |
| | किल—किर |
| तथा—तिम, तिवँ, तेम, तेवँ, तिध, तिह | दिवा—दिवे |
| | अथवा—अहवइ |

यत्र—जेत्थु, जत्तु, जेत्तहे
तत्र—तेत्थु, तत्तु, तेत्तहे
कुत्र—केत्थु, केत्तहे
अत्र—एत्थु, एत्तहे
सर्वत्र—सव्वेत्तहे
परत्र—परत्तहे.
एतर्हि—एत्तहे, एतेत्तहे
प्रायश—प्राउ, प्राइव,
प्राइम्व, पग्गिम्व
अन्यथा—अनु, पक्षे अन्नह
कुत:—कउ, कहन्तिहु
तत—तो
तदा—तो
एवम्—एम्व
परम्—पर
समम्—समाणु
ध्रुवम्—ध्रुवु
मा—म

सह—सहु
नहि—नाहिं.
पश्चात्—पच्छइ
एवमेव—एमइ.
एव—जि
इदानीम्—एम्वहिं
प्रत्युत—पच्चलिउ.
इत—एत्तहे
शीघ्रम्—वहिल्ल
पुन—पुणु
विना—विणु
अवश्यम्—अवसें, अवस
एकश—एक्कसि
इव—नणि, नणु, न, नउ, नाइ
नावइ
पृथक् पृथक्—जुअ जुअ
यदि—छुडु
माभैषी—मब्भीसा

१३ नइ, खाइ, इत्यादि पादपूरणार्थक निपातो अपभ्रंशमा कोइ कोइ ठकाणे वपराय छे

१४ केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, तणेण ए पाच निपात तादर्थ्ये चतुर्थीना अर्थमा वपराय छे

१५ हुहुरु आदि शब्दानुकरणमा अने घुग्घादि चेष्टानुकरणमा वपराय छे

### शब्दो

आलडी (आलि) स्त्री० पारकी आदिनी प्राप्तिनारूप अनर्थ
निरुकुअ (निश्चय) पु० शंका रहित
पहाण (प्रधान) ०० मुख्य
बम्भ (ब्रह्म) न० शील
मणोसामअ (मनापामृत) न० मतापरूपी अमृत
दुक्कयकम्म (दुष्कृतकर्म) न० नठारां कर्म
पच्छायाव (पश्चात्ताप) पु० पस्तावो
कसरक्क (कसरक्क) पु० जमतो वखते कराया आवता एक जातनो अवाज
पावद्दह (पाचहृद) पु० पापरूपी तलाव
मक्कड (मर्कट) पु० वांदरो
परिग्गह (परिग्रह) पु० वस्तुओना संग्रह
अलिअ (अलीक) न० कूड नथ्य
तुरिअ (त्वरित) वि० उत्सुक
अणाउलअ (अनाकुलक) त्रि० आकुल नहि तेवु
अयप्पलअ ( ) न० मद्य
झाण (ध्यान) न० ध्यान
निम्ममत्त (निर्ममत्व) न० ममत्व रहित
भद्दत्तण (भद्रत्व) न० भद्रता, भलाई
सामाइअ (सामायिक) न० सामायिक व्रत

### धातुओ

जोअ (द्युत) प्रकाशवु

### अव्ययो

इणपरि ( ) अ० आ रीते
निरानिउ ( ) अ० निश्चित.

## गाथाओं.

रे मण करमि कि आलसु विसया अच्छहु दूरि ।
गरणाइ अन्छइ रुप्पिअइ कट्टइ नि रम्मु भूरि ॥१॥
इणपरि अप्पउ सिक्खविसु तुह आराहु परमत्थु ।
सुमरि जिणागम धम्मु करि संजमु गहु पसत्थु ॥२॥
संजम लाणिण मा म्मालहु निच्छइ भमइ तासु ।
पिय सलि कासु भणन्ति पउ पाइ पहुचहि जासु ॥३॥
सचइ पमाइ जा मुयइ उवसमु चुयइ पमाणु ।
परमदि सत्तुवि मित्तु जिमँ सा गृन्हइ निव्वाणु ॥४॥

— धु० ७० प्रथम भा० ४१-४४

× × × × ×

* धम्मु अणम्माइसु चरइ जो समणराइसन्निसु ।
पाइय पावइ तहि जि भवि सो निव्वाणु पवित्तु ॥५॥
पाइमय भवि सुहु दुल्लहउ परिणमइ जण सुहत्तु ।
त मनासामण्ण विणु पाउ पमायहि मुद्ध ॥६॥
रयणत्तउ फुड्ड अणुसरहु अजर मुत्ति फलंति ।
भणइ लब्भहि पउर धण अनु कि नरउ पडन्ति ॥७॥
कइ यह भमिअइ भवगहणि? सुरय फलन्तिहँ होइ ।
एहु जाणिवउ जइ मणसि ता जिण आगम जोइ ॥८॥
चवल सयप धुवु माणु स तुवि णर भणेइ ।
मिलिवि समाणु महामुणिहि पर संजमु न करेइ ॥९॥
मकरि मणाउवि मणु विरसु म करि दुक्खयकम्मु ।
पायारम्भुवि मा करहि जइ किर इच्छसि सम्मु ॥१०॥
तिहियत्ति अच्छउ अरव पांप अरयइ निअगेहवि ।

दिवेदिवे करइ जु जीवदय सो सिज्झइ रुचोवि ॥११॥
तव मह मजसु नाहि जसु एम्वइ गम्वइ जु दीह ।
पच्छइ तासु न जो करइ तासु फुसिज्जइ लीह ॥१२॥
सिज्झइ सो नरु गम्वहि जि एत्तहि माणुस जम्मि ।
जो पडिक्कलिवि कुव करइ पच्छिउ गयधम्मि ॥१३॥
जइ ससारहो विवि ठिउ वुद्धउ वुत्तु मा एहु ।
पवणवहिल्लउ अप्पणउ मणु वइ सुथिरु करेहु ॥१४॥
निअमविहूणा रत्तिदिवि खाहिं जि कसरक्केहिं ।
इहरु पडन्ति ति पावइहि भमडहि भवलक्खेहिं ॥१५॥
तव परिपालणि जसु मणु वि मक्कड घुग्घिउ देइ ।
आहर जाहर भवगहणि सो घट नह प्राम्वेइ ॥१६॥
सग्गहो केहि करि जीवदय दमु करि मोक्खहो रेसि ।
कहि कसु रेसिं तुहु अवर कम्मारम्भ करेसि ॥१७॥
कसु तेहिं परिगहु अलिउ कासु तणेण कहसु ।
जसु विणु पुणु अवमे न सिवु अवस तम् इक्कसिलेसु ॥१८॥

—कु० च० अष्टमे सर्ग ५८–७१

× × × × ×

भल्लत्तणु जइ महमि भल्लप्पणु पसमेण ।
जइ करिएव्वउ पसमु विजउ तो करेव्वउ करणह ॥१९॥
जइ अ करेवा करणविजउ तो मणु निचलु धरहु ।
निचलु मणु पुणु धरहु करिउ जउ रागदोसह ॥२०॥
तह विजउ करहि रागाइअह अविचलु सामाइउ करिवि ।
अविचलु सामाइउ करहि निम्ममत्तु निम्मलु करवि ॥२१॥
घन्तु करेप्पि निरानिउ कोहहो अन्तुकरेप्पिणु सव्वह
माणहो ।

मन्तु करेविणु मायाजालहो अन्तु करेवि नियतनु
लोहहो ॥२२॥

जइ चण्व मणसि ससारु सिवसुक्खु भुञ्जण तुरिउ ।
तो किर सगु मुयणाहि करि मणु ।
तह सुह गुरु सेवणाह निम्ममत्तु अइ दढु करेविणु ॥२३॥
चित्तु करेवि अणाउलउ वयणु करेप्पि अचप्पलउ ।
कम्मु करेप्पिणु निम्मलउ झाणु पजुञ्जहु निच्चलउ ॥२४॥
जमणु गमेप्पि गमेप्पिणु जन्हवि गम्पि मरहमइ गम्पि
णु नर्मद ।
लोउअजाणउ अ जलि बुड्डइ न पसु कि नीरइ सिवम
मंद ॥२५॥

--पु० र० अपभ्रं० भा० ७६-८०

## प्रशस्ति

गीति-

इमिआ रइआ माला, गिरिरसणिहिणहमिअम्मि वरिसम्मि
मडणपुरम्मि कच्छे गुलाबसीसेण मुणिरयणेणं ॥१॥
ससोहिआ पुणा लिहिआ एगासुत्तरगुणवीसाए।
पोस सुक्किलपढमाए झालावाडोमेरडागामम्मि ॥२॥

इति श्री प्राकृत-पाठमाला समाप्ता

---

१ नोट-झालावाडप्रदेशान्तगते उमरडाग्रामे इत्यर्थः

# बोधपाठमां आवेलां प्राकृत वाक्योनो गुजराती तथा गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद.



## बोधपाठ २ जो.

(प्राकृत वाक्योनो गुजराती अनुवाद)

१ तीर्थंकरो मोक्षे जाय छे २ आचार्य मार्गे जाय छे ३ तु अवसर जाणे छे ४ उपाध्याय मोक्षमार्ग कहे छे ५ अमे महावीरस्वामीना गुणो जाणीए छीए ६ माणस गुणोथी प्रमोद मेलवे छे ७ अमे धर्म वडे वधीए छीए ८ तमे साधुनो धर्म पालो छो ९ कृपणो लोभने लीधे नरकमां पडे छे १० क्षत्रिय लोकोने दुःखमांथी बचावे छे ११ तमे अधर्ममांथी अमने बचावो छो १२ हुं धर्मना पथमां रहुं छुं १३ तु गृहस्थाश्रममां रहे छे. १४ क्रोधथी अथवा लोभथी अमे बोलता नथी १५ तु श्रावकोना नियमो भणे छे

(गुजरातीना प्राकृत वाक्यो)

१ अम्हे धम्मस्स पहे गच्छामो । २ तुम्हे वीरस्स धम्मं बुज्झह । ३ कोहेण जणो णरए लहइ । ४ अहं तुम्हे बचामि । ५ तुम्हे मोक्खस्स मग्गं गच्छित्था । ६ तुम्हे ण पढह । ७ तुमं अहम्मेण णरए पडसि । ८ किविणो धम्मं ण रक्खइ । ९ किलेसेण कोहो वड्ढइ । १० आय-

अन्नु करविणु मायाजालो अन्नु करवि नियत्तणु लोरहो ॥७२॥

जइ चंचल मणसि ससारु मिच्छसुक्खस मुज्झगा तुरिउ ।
तो किर मग्गु मुचगहिं करि मणु ।
तह सुइ गुरु सेवणइ निम्ममत्तु अइ दढु करेविणु ॥७३
चित्तु करवि अणाउल्लउ वयणु करवि अचवलउ ।
कम्मु करेप्पिणु निम्मलउ झाणु पउञ्जसु निच्चलउ ॥७४
जमणु गमेप्पि गमेप्पिणु जरवि गम्पि मरणसइ गमि णु नमंद ।
लोउअजाणउ ज जलि बुड्डइ न पत्तु कि नीरइ मिवस मेंद ॥७५॥

—कु० च० भाग मा ७६—८०

## प्रशस्ति

गीति—

इमिआ रइआ माला, गिरिरसणिहिणयणमिअम्मि वरिसम्मि
मदणपुरम्मि कच्छे गुलाबसीसेण मुणिरयणेण ॥१॥
ससोहिआ पुणो लिहिआ एगारसुत्तरएगुणवीसाए।
पोस सुक्किलपढमाए झालावाडोमरडागामम्मि ॥२॥

इति श्री प्राकृत-पाठमाला समाप्ता

———

१ नोट-झालावाडप्रदेशान्तर्गते उमरडाग्रामे इत्यर्थ

# बोधपाठमां आवेलां प्राकृत वाक्योनो गुजराती तथा गुजराती वाक्योनो प्राकृत अनुवाद.

## बोधपाठ २ जो.

(प्राकृत वाक्यो नो गुजराती अनुवाद)

१ तीर्थंकरो मोक्षे जाय छे २ आचार्य मार्गे जाय छे ३ तु अवसर जाणे छे ४ उपाध्याय मोक्षमार्ग कहे छे ५ अमे महावीरस्वामीना गुणो जाणीए छीए ६ माणस गुणोथी प्रमोद मेलवे छे ७ अमे धर्म वडे वधीए छीए ८ तमे साधुनो धर्म पालो छो ९ कृपणो लोभने लीधे नरकमा पडे छे १० क्षत्रिय लोकोने दु'खमांथी बचावे छे ११ तमे अधर्ममाथी अमने बचावो छो १२ हु धर्मना पथमा रहु छु १३ तु गृहस्थाश्रममा रहे छे. १४ क्रोधथी अथवा लोभथी अमे बोलता नथी. १५ तु श्राव-कोना नियमो भणे छे

(गुजरातीना प्राकृत वाक्यो)

१ अम्हे धमस्स पहे ॰ २ तुम्भे वीरस्स
धम्म बुज्झइ । ३ कोहेण जणो लहइ । ४ अह
तुम्हे बचामि । ५ तुम्भे मोक्खस्स गच्छित्था । ६ तुम्भे
ण पढइ । ७ तुम अहम्मेण पडमि । ८ किविणो
धम्म ण रक्खइ ॰ किलेसेण वड्ढइ । १० माय-

छीए. ४ तु क्षत्रिय छे. ५ तमे वेपारी छो ६ भव्यजनं
महावीरस्वामीना वचनो साभले छे ७ तमे तलावमा पाणं
पीश्रो छो ८ राजा धनुष वडे बाण फेंके छे ९ राजा
बाण जगलमा पडे छे १० साधुनु दर्शन हृदयने पवित्र क
छे ११ वेपारी धनवडे वस्त्रो खरीदे छे १२ सूर्य प्रकाश
वडे टाढने दूर करे छे १३ शास्त्रना श्रवण वखते मा
धुणे छे १४ धर्ममा सुख छे १५ बालक दहिं साथे भा
खाय छे १६ पवनथी आखमा रजकण पडे छे १७
आखनी दवा करे छे १८भव्यजन मनमा तीर्थंकरनु दर्श
इच्छे छे १९ माणस सुख अथवा दु ख पूर्वभवना कर
अनुसार भोगवे छे २० पडितो सदा हित, मित ता
मधुर वचन बोले छे २१ तमे साचु बोलो छो. २२ अ
जुठु कोइ पण वखते बोलता नथी

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ अम्हे वणम्मि मुणीण दसण कुणेमो । २ वय वत्थस्स वावार करामु । ३ महुराइ वयणाइ हियअस्स दुह हरन्ति । ४ तेणा वणम्मि वत्थाइ हरन्ति । ५ किविणा धणस्स लोहेण दुह लहन्ति । ६ अम्हे रिमउ म्हो । ७ तुम्भे मुणी अत्थि । ८ अह वम्णो म्हि । ९ तुम्भे गामम्मि सत्थ सुणेह । १० जल सराओ वहिं गच्छइ । ११ पोत्तस्स दुहाउ मिर धुणइ । १२ वय पोत्तस्स ओसह कुणिमो । १३ तुम्भे अम्हे मणेण इच्छह । १४ कुसला जणा हिअ मिअ सच (श्च) वयन्ति । १५ वाणिआ कुसला अत्थि । १६ तुम वाणिओ सि ।

# बोधपाठ ६ ठो.

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ सारथी वनमां रथने भमावे छे २ तु गाममां अमने भमावे छे ३ राजा नोकरने काम देखाडे छे ४ हुं जिनदासने हस्तिनापुरनो मार्ग देखाडुं छुं ५ तु भव्य जनाने शास्त्रनो अर्थ देखाडे छे ६ अधर्म कंकाश (करावी) हृदयने सतावे छे ७ भमरा पुष्पमाथी पराग (लेवा) इच्छे छे ८ तमे बोध वडे श्रावकोने रंजन करो छो ९ तीर्थंकर भव्यजनोना कर्मोनो नाश करे छे १० कृपण दान करवामा ढील करे छे ११उपाध्याय शिष्योने शास्त्र भणावे छे १२ तमे अमने उत्तराध्ययन भणावो छो १३ राजा धनुष वडे शत्रुने बीवडावे छे १४ पडित विस्तारथी शास्त्र समजावे छे १५ मुनिओ बोध वडे धर्म करावे छे १६ साहुकारो विवाहमा ज्ञातिजनोने जमाडे छे

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ तुब्भे लोहेण अम्हे भमाडेह । २ तुब्भे सया हिअमग्ग दसित्था । ३ मुणिणो कयावि अहम्मम्म मग्ग णा दावेन्ति । ४ णिवा लोहेण जणे दूमन्ति । ५ भविअ-जणा मोक्ख सिहिंरे । ६ सारही णिव रावइ । ७ वय णिवस्स अरिणो गामग्गेम । ८ किंकरो आलस्सेण काल जवइ । ९ पडिआ धान्ने पाडेन्ति । १० वाणिआ धयेण वत्थाइ किणावेन्ति । ११ गुरवो अम्हे सत्थ सुणावन्ति ।

## बोधपाठ ७ मो

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ वनिता माथामां फूलनी माला धारण करे छे २ मुनि भूखने तथा तरसने सहन करे छे ३ पंडित बुद्धिने परीक्षा करे छे ४ देवांगनाओ स्त्रीओनी परिषदमां ऊभी रहे छे ५ तीर्थंकरनी वाणी लोकोनुं कल्याण करे छे ६ चतुर माणस क्षमा वडे क्रोधने जीते छे, ७ नीति द्वारा आचार माणसने मोक्षमार्गे लई जाय छे ८ धीरज लोभना विस्तारनो नाश करे छे ९ गुरुओनी कृपा शिष्योनुं हित माटे छे १० तुं सूक्ष्म दृष्टिथी काम करे छे ११ अमे गुरुओ साथे प्रेमथी वर्तीए छीए १२ तमे परिषदोमां धर्म कहो छो १३ मुनिओ सभामां नीतिना बोध करे छे १४ उत्तराध्ययनसूत्रमां गाथाओ छे १५ धीरजथी मनमां प्रमोद थाय छे १६ तमे शास्त्रनुं पुनरावर्तन करो छो १७ चोर वस्त्रने धरे छे

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ अम्हे गुरूहि सह धम्मं पुच्छामु । २ इत्थीओ घरेसु कज्जं कुणन्ति । ३ जिणस्स वाणी पाइएण दावेइ । ४ गुरुणो पीईए सत्थस्स बोहं करावेइ । ५ सुहुमाए दिट्ठीए सत्थस्स गेहं दंसेइ । ६ सिवस्स गोईए जणाण सुहं साहेइ । ७ पोईए थोवो हियअ पुराइ । ८ जिणस्स किरा जणाणं हिअं साहेइ । ९ खमाइ जणा सया जिणाइ । १० तुम्हे सत्थस्स गाहाओ पढह । ११ वयं सभाए धाइ सुणिमु । १२ परिसाए इत्थीओ (चि) आगच्छन्ते । १३ छुहा पिवासा य मए दूमिरे ।

## बोधपाठ ८ मो

### (प्रा० गु० अनुवाद)

१ जुवानो मानसिक बल वडे काम (विकार) ने जीते २ बालको प्रातःकालमा बापने नमे ३ तमे सामायिक करो ४ राजाओ नीति द्वारा लोकोनु हित साधे ५ शिष्य गुरुनो विनय करे ६ तु उतावलथी पुनरावर्तन कर ७ तुं विनयने न छोडतो ८ तमे दोषसहित अथवा असत्य (वचन) न बोलता ९ उपाश्रयमा अशुद्ध कपडा पहेरीने न आवता १० तु दोषने त्याग (अने) गुणने ग्रहण कर ११ क्षमा वडे क्रोधने जल्दी तज १२उपाध्याय विनीत शिष्योने सूत्र भणावे १३ शत्रुओनु पण कल्याण थाओ एम इच्छु छु. १४ विनयथी अथवा मृदुताथी अभिमाननो नाश करे १५ हृदयमा संतोष राखो १६ हु कजुमाइ नहि करु १७ अमे शुद्ध अध्यवसायथी हृदयशुद्धी करीए १८ तु धर्मस्थानकमा शयन नहि कर

### (गु० प्रा० वाक्यो)

१ तुब्भे सुत्तस्स अट्ठं पढावेह । २ वय सज्झाय कुणिमो। ३ भविअजणा मोक्खमग्गं लहन्तु । ४ मुणिणो असुद्ध वत्थ ण गेण्हेज्जा । ५ तुब्भे देहस्स असुद्धिं परिहरह । ६ (तुब्भे) पभायम्मि सया उवस्सयम्मि आगच्छह । ७ (तुब्भे) सामाइअम्मि असच्च मा वयह । ८ (तुब्भे) संतोसेण लोह चयह । ९ विणेआ अज्झवसाअनलेण हियअसुद्धिं कुणिज्जाह । १० खमाए वुड्ढीए परिक्कमं कुणह । ११ तुब्भे छुह पिवास अ सहेह । १२(तुब्भे) पीढए पह कयावि मा चयह। १३ (तुब्भे) सुद्देण अज्झवसाएण मण पुणेह ।

## बोधपाठ ९ मो.

### (प्रा० गु० अनुवाद).

पिता पुत्रने प्रीतिथी रमाडे छे २ पिता साथे पुत्र क्रीडा करे छे ३ नथी ईश्वर लोकनो कर्ता ४ जीव कर्मोनो कर्ता छे ५ मायातोना यलथी राजा युद्ध करे छे ६ माताना खोलामा बालक उभो छे ७ माताओ पुत्रोनी पेठे जमाई प्रति पण प्रीति राखे छे ८ दियर भोजाईनी साथे ककाश करे छे ९ माता साथे ककाश न कर १० एवी रीते फरी फरीने शु करे छे? ११ (ते) हमणा ज पिताने घेर जाय छे १२ हमणा ज नणद् आवे छे १३ (तुं) वृथा खेद मा कर १४ माताओ घरमाथी बहार जाय छे १५ मृगावतीनी नक्की जयन्ती नणद् थाय छे १६ उदायन चेटकनो दोहितरो तथा जयतीनो नक्की भत्रीजो थाय छे १७ जयंती सहस्रानीकनी पुत्री, शतानीकनी बहेन तथा उदायननी फोइ थाय छे १८ मृगावती जयन्तीनी भोजाइ थाय छे १९ हु देराणी साथे क्लेश नथी करती

### (गु० प्रा० वाक्यो)

१ अम्हे अहुणा चेअ गच्छाम। २ पिआ, अज्ञचिअ पुत्त सिक्खेज्ञा ३ माआओ पुत्ते किणो सिक्खन्ति। ४ तुब्भे भाऊहिं सह किलेस माइ कुणह। ५ भाउरा सुहस्स कत्तारा अत्थि। ६ वय इत्थ सामाइअ कुणेमो। ७ अम्हे पुत्ता विणय ण करेज्ञा। ८ अम्हे अहुणाच्च आगच्छिमो ये ९ बालो पिउत्थाण गिह गच्छइ। १० लोअस्स कत्ता अत्थि किणो ?। ११ चेडगस्स धम्म् जुज्झइ। १२ खत्तिआ बाह

गोर्हि सह मा जुज्झन्तु, १३ किन्तु सया गोडपड़े चिट्ठन्तु। १४(न) गिहाओ वहिं गच्छइ। १५ फिकरा भाअरस्स पुत्ते रमावेन्ति। १६ भाउज्जाओ णणादाए विणय कुणन्ति। १७ देवरो भाउज्जायाए वादइ।

## बोधपाठ १० मो

(ग्रा० गु० अनुवाद)

१ सज्जनो लोकोने अभ्युदय नरवा प्रवृत्ति करे छे २ भाग्यशाली पुरुषो परमार्थ करतां परलोकनु कार्य साधे छे. ३ (ते) स्नान करीने भोजन करे छे. ४ (ते) सामायिक करीने घरार जाय छे. ५ (ते) हाथमां फल लइने परदेश प्रति प्रयाण करे छे ६ सुवर्णनी मुद्रिका लेवा बालक रा र लवाने छे. ७ मा गुना वचनो सद्बुद्धिवडे ग्रहण करवा. ८ बालक माताने कहेवा इच्छे छे ९ (ते) दू रपाइ जमीने भात जमवा इच्छे छे १० साधुए हम्मेश सरस सरस भोजन न करवु ११ तीर्थंकर कर्मो मुकीने मोक्षे जाय छे १२ (ते) कषायने शमाववा इन्द्रियोनु नियमन करे छ १३ धर्मनु फल-सुख जोइने तत्त्व प्रति आस्था राखे छे. १४ भाजन करतो बाला वरसादने जोवा घरार जाय छे. १५ आपत्तिमा पण पुरुषोए न रडवु १६ मद्यपान करतो गृहिणी पति उपर क्रोधे भराती ऊभी छे. १७ प्रमाद भोजनी स्त्री पगले पगले ठोकर खाय छे १८ अग्र भागी उपाय घणाना प्रवृत्ति करे छे.

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ अन्नजणा धम्ममायरिऊण सुहाय गच्छन्ति। २

पिआ पुत्ते पाढवित वाञ्छइ। ३ उवज्झाओ सत्थस्स अट्ठं कहिउ वाञ्छइ। ४ गाम गच्छमाणो जणा मग्गे चिट्ठइ। ५ पिअर पामनो पुत्तो पढे चरइ। ६ मुणी भविअजणे बोहेउ गामम्मि वसन्ति। ७ भुजमाणो वालो काल जवइ। ८ तुम्भेहिं सत्थस्स अट्ठा वेत्तव्वा। ९ पइ कुप्पमाणा इत्थी गिहस्स कज्ज कुणइ। १० वाणिआ धणमज्जिउ वावार करन्ति। ११ अह गुरुमगामे वागरण पढिऊण कव्व सिक्खामि। १२ तुम्हे गाममिम गच्छित्ता घरिमागच्छह। १३ पिआ पुत्त रमावेउ वणम्मि गच्छइ। १४ अम्हे बोह सुणिऊण मण रावेमो। १५ असुद्धमग्गं मोत्तु सच गेण्हइ। १६ तुम्मे परिसाण वोत्तु वाञ्छह।

## बोधपाठ ११ मो

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ जुवान जुवान साथे लडे छे २ रस्तामा उभेला साधु धर्मनो उपदेश करे छे ३ बालक पण पोतानु हित विचारे छे ४ तीर्थंकर आत्माथकी कर्मोने जुदा करे छे ५ भव्यजनो पोतानी मेले धर्म करे छे ६ शिष्य पोतानामा गुरुओनी शिक्षा धारे छे. ७ राजानी कृपा पण घनाश्रितोनु सुख साधे छे ८ परस्पर लडता राजाओना मनमा क्लेश वधे छे ९ कुतरो तलावमा पाणी पीए छे १० तमे राजानु फरमान बजावता ढील करता नथी ११ श्रेणिकराजाना वचनो साभलीने मुनि कहे छे के हे श्रेणिक! तु पोते पण अनाथ छो १२ नीचे उभेला मायासना माथा उपर पर्वत परथी पत्थराओ पडे छे १३ निर्मल शिला उपर साधु बेसे

छे. १४ सारथी बलदोने रथमां जोडे छे १५ सूर्यनो प्रकाश अधकारने दूर करे छे १६ सूर्य पासेथी लोको प्रकाश मेलवे छे १७ वनस्पतिओने पोषवा सूर्य समर्थ छे. १८ माणस पोताना बलथी जेटलो वधे छे तेटलो बीजाना बलथी वधतो नथी १९

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ जुवाणेहिं गुरुस्स सिक्ख गिण्हिऊण णीइपहे गच्छिअव्व। २ रण्णा अप्पणो दीणजणेसु किवा कायव्वा। ३ साणो तडाअम्मि जल पाउ गच्छइ। ४ उज्जाणम्मि ठिओ अणाहिमुणी सेणिअराअमुवण्सइ। ५ उच्छाणो णीरअम्मि णायाणम्मि अच्छइ। ६ पूसणो पआसो अधआर पराजयइ ७ रण्णो आएसेण सारही रह णिओअइ। ८ पूसा अप्पणो पआसेण वणप्फइ पूसइ। ९ (ते) परोप्पर ण जुज्झिज्जा तहा उवण्सइ।१० सिस्सा गुरुणो पाअम्मि अप्पणो मुद्धाण णावेन्ति। ११ तम्हा हेट्ठ अच्चुमाया जण (मो) पासइ।

## घोषपाठ १२ मो

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ रमणा तु केम देखातो नथी? २ माराथी जैनशास्त्रो संभलाय छे ३ आकाशमा मेघनो ध्वनि सभलाय छे ४ राजाथी जगलमा चोर हणाय छे ५ साधुथी सूक्ष्म पण जीव हणातो नथी ६ चोरथी साहुकारना घरमाथी धन हराय छे. ७ नदीना प्रवाहथी गाममा जतो माणस अटकावाय छे. ८ आत्मा कर्म रूपी रज्जु थी बधाय छे ९ पुत्रा-

ठथी मालो माणस कपट वडे थाय छे १० मुनिथी नजीवु पण पाप नथी करातु. ११ ज्ञानथी संसारसागर तराय छे १२ तेनाथी वचननु रहस्य नथी समजातु १३ माराथी गुरुना वचनो वस्तुत समजाय छे. १४ पाप करतो तु तीर्थंकरथी जोवाय छे १५ स्तवन कहेवा माराथी आरंभाय छे १६ तेनाथी दरक्षणे कर्मो एकठा कराय छे १७ अनाश्रितना घरमाथी थोडु पण धन चोरोथी मा चोराओ. १८ चंडालोथी तु रथे अडकातो. १९ तपस्यारूपी इन्धनथी कर्मो बली जाओ

(गु० प्रा० वाक्यो).

१ धम्मेण अहम्मो हम्मइ । २ रज्जूए पसवो विद्धावेण जणा वज्झन्ति । ३ सचरस पहम्मि दुज्जणेहिं सज्जणा ण रुम्भन्ति । ४ साहुजणेहिं सज्जणा थुव्वन्ति । ५ मेहिणा पण तेणेहिं हीरइ । ६ अप्पणो सुद्धीए सत्थस्स सत्ताणि विहप्पन्ति । ७ मुद्धत्तम्मि जरा सिप्पइ । ८ वयन्तेहिं वयन्तेहिं हम्मइ । ९ गच्छन्तेहिं गच्छन्तेहिं रुव्वइ । १० णिरिक्खणेण सत्थस्स रहस्स णज्जइ । ११ गुरुणो वाहेण सरा णज्जइ । १२ तुम्भे साहूणा जोहेण णेज्जइ । १३ बम्हणेहिं चण्डाला ण छिप्पइ । १४ जुवाणेणं णई तीरइ । १५ पडिसमए अह जिणेहिं दीसामि । १६ पआसेण अंधआरो हीरइ ।

## बोधपाठ १३ मो

(प्रा० गु० अनुवाद).

१ नंगा अप्पजीवो सिद्ध थाय छे २ ग्रामादि तें

पुण्यो त्या उभा न्हे? जेटला माटे गामना वधाये लोको तेमनो मार्ग जुए न्हे. ३ काण कहे छे के जैनधर्म बीजा वधा धर्मो करता उत्तम नथी ४ जे धर्म करे न्हे ते सुख पामे छे ५ शा कारणथी तमे हसीने वोलो छो? ६ जे हेतुथी पण स्त्रीओनो पहेरवेश विकार पामेलो देखाय छे ७ शा कारणोने लइने ते तेमना माथाओ कापे छे? ८ केटलाएक लोको पोतानो व ग थाय छतांये असत्य वोलता नथी ९ तेज्यामाटे तेना मनमा वेर प्रगटे छे १० कया गाममा ते कुटुम्ब साथे रहे छे ११ जे गाममा नथी कोई पण चोर १२ त्या राजा कोण छे? तेनु नाम शु छे? १३ ज्यारे गाय दोहे छे त्यारे ते वेर आवे छे. १४ ज्या राजा पोते अपराध करे छे, त्या बीजा लोकोनी शी वात? १५वेगाथी कयागाममा ते लोकोनु रहेठाण थवानु छे १६बीजे कया सुखथी अमे रहीए १७ ते कयी स्त्रीनो भरथार छे? १८ जेनु मुख जोइने खुशी थाय छे तेनो भरथार. १९ बीजाओनी निन्दा न कर २० (ते) कोनाथी बीए छे? जेमनु मुख भयकर छुए छे तेमने जोईने बीए छे

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ अम्हे सव्वे मुणी पाविमो। २ तुम्भे कस्स गिह गच्छह। ३ अण्णेहिन्तो तेसिमाआरो वरो अत्थि। ४ जे ग पढन्ति ण ते सुहं लहन्ति। ५ किणा ते णरअम्मि गच्छन्ति। ६ तम्हा तुम्भे ते कहह। ७ सव्वेसिं हिअ कत्थ रक्खिअइ। ८ जास मणं धम्मम्मि रमइ सो जणो अप्पणो हिअ साहेइ। ९ जत्थ तुम्भे वसह तत्थ अम्हे वसामो। १० कम्मिजणम्मि

सव्वे दोसा णसीयन्ति । ११ तुब्भे दोसु कयर जण वांछह। १२ सव्वेसु जणेसु जिणो सेट्ठो अत्थि । १३ पमायम्मि काम सुह णिरिक्खिऊण वहिं णिगच्छइ । १४ सो ज णिरिक्खइ त णवइ । १५ तुब्भे इअरेहिन्तो बोहिऊण गच्छह १६ सव्वे जणा णेत्तेण णिरिक्खन्ति मणेण य चिन्तन्ति । १७ सव्वेहिं अप्पाणस्स हिअ साहिज्जइ । १८ जेण सुह होज्जा त सया कुणह ।

## बोधपाठ १४ मो

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ हु गुरुनी पासे शास्त्र भण्यो २ ते धर्म करीं आत्माने पवित्र कर्यो ३ गोवालीओ गायोने वनमा ल गयो ४ आचार्य मुनिओने सयम मार्गे लइ गया ५ पहेला व्यवहारमा जेवो चतुर हतो हमणा तेवो नथी ज्यारे तु पुत्र साथे बोल्लो हतो त्यारे हु उपाश्रये गयो । ७ शु देवदत्त घरमा न हतो? ८ शामाटे माता साथे बालक रह्या? ९ महावीरस्वामीना घणा शिष्योनी सद्गति थई १० तजेला कामभोगो, नाश पामेलु ममत्व, छोडेला विषयो जीवने सुख आपे छे ११ ते गाममा मुनिए धर्मनो अभ्युदय कराव्यो १२ बालके स्कन्दकना शिष्योने घाणीमा पील्या १३ तेमनी विशुद्ध भावे करीने सद्गति थई १४ रावण साथेना युद्धमा रामचन्द्रजी जीत्या १५ रावण रामचन्द्रजीनी पत्नी सीताने हरी गयो १६ शेठे व्यापारमा घणु धन एकठु कर्यु १७ पगथी दबाएला जीवडाए ऊँचे उठवा प्रयास कर्यो १८ उडता पक्षीए पर्वत उल्लघ्यो १९ विकसेला कमले गुजता भमराने आकर्यो २० चडालथी

अभडाएलो ब्राह्मण न्हाईने जम छे २१ चोरेलु धान्य वेपारी धनवडे खरीदे छे २२ राजाए धर्मनु मकान बधाव्यु

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ मए मुणीण पोरो सुणिओ। २ तए देहो पिय धम्मो रक्खिओ। ३ खत्तिओ धम्मणेहिं सह जुज्झीअ। ४ जणा पुरा इड्ढिमन्ता अहेसि। ५ सिरि महावीरो धम्मस्स तिउ-त्तमन्तुदओ करीअ। ६ मो साहुसेवाए फल लहीअ (तेण लहिअ)। ७ सेट्ठी किंकराण विउल धण देसी। ८ अम्हे वि पहे तेहिं सह आमि। ९ सव्वे जणा सह वसीअ। १० अम्हे रण्णो पासाए अच्छीअ। ११ तेहिं विउल धणमज्जिअ। १२ वाणिआ धणमज्जिउ परएस गच्छीअ। १३ सज्जणा गुणेहिं सग्गइ गआ। १४ सेट्ठिणा विउलधणेण पासाओ कराविओ।

## बोधपाठ १५ मो

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ ऐ साधु आ श्रावकने शु कहे छे? २ आ माणस पात्रे घणु दान करे छे ३ आना जन्म तथा जीवणी सुकृत वडे सफल थाय छे ४ आणे खरेखर सारो मनुष्य जन्म मेळव्यो ५ एमना हृदयमा उन्नत विचारो छे. ६ अहिं कयो पुरुष उभो छे? ७ एओ पेलानी साथे मैत्री राखे छे ८ पेली स्त्री सर्व कार्यमा निपुण छे. ९ पेलो माणस सदाय परमार्थना कार्यो करे छे १० पेलु फल भर्तृहरिए पिंगलाना हाथमा आप्यु हतु ११ आ गणिका जुवानोनु धन हरी लेछे १२ पेलु लश्कर कोणिक राजाने साहाय्य करे छे १३ आ

भवमां करेला धर्म परभवमां सुख आपे छे १४ आ युद्धमां कोणिकराजा जाते छे १५ आ बालक ते माणसनो न्हानो भाई थाय छे १६ ए माणस तरफथी तुं सुख न पाम्यो १७ आ ठेकाणे घणा राजाओए राज्य कर्यां १८ पेला गाममां केटला संघवादीओ छे? १९ एनाथी वधारे बीजुं शुं दुःख होय? २० ए प्रसंगे गयो अने कह्युं. २१ आ मार्गमां घणा कांटा होय छे २२ पेलानी दृष्टि (नजर) ए पुरुषने जुए छे.

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ इमिणा जणेण धम्मस्स बहूणि कज्जाणि कआणि । २ तुब्भे एअं सच्चं दाएह । ३ एएण अरस वारिदस्स धम्मं सासनिआ । ४ अरस णामधेय धम्मसिंह त्ति अत्थि । ५ एएसिं सव्वेसिं धम्माण सत्थाणि विविहाणि । ६ इमस्सि सव्वेसिं रहस्स मागच्छइ । ७ तत्थाहे अप्पणो णो अहिओ अत्थि । ८ इमिणा अम्हे सया पमाइआ । ९ थेणा धम्मत्थाणि सुद्धं थोहिज्जाणि । १० इमो जणो अहिओ सुणिउणो अत्थि । ११ तुब्भे इम अहिअं म पीडह । १२ इमे लोआ सव्वेसु कज्जेसु कुसला अत्थि १३ अम्हाहिं पत्थो जगावआ दिट्ठो । १४ इमेहिन्तो तुब्भे सणम्मि मा बीहह । १५ अम्हाहिं सह मेत्ती ववहारम्मि अइ सुद्धं अत्थि । १६ जे गुणा (आवस्सआ) ते सव्वे अम्हि अत्थि । १७ अम्हेसु एगा रीई अइसुद्धं अत्थि ।



## बोधपाठ १६ मो.

(प्रा० गु० अनुवाद)

१ आ माणस महापुरुषोना सगथी महापुरुष थशे २ तेओ साधुओनी पासे कठिन शास्त्रो भणशे ३ तु अहिं तमो रहीने शु करशे ? ४ तेओ सुपात्रे उचित अन्न आपशे. ५ हु गुरुना दर्शन करवा सोरठ जइश ६ अमे हृदय शुद्धि करीने आप्तवचनो साभलीशु ७ हु नित्य अध्यात्म शास्त्रो साभलीश ८ तमे आगल जता इष्ट पुरुषने जोशो ९ ज्यारे शेठ पूछशे त्यारे काम कर्या विना तु शु कहेशे ? १० अकार्यना परिणामे पापनो प्रादुर्भाव थतां तु घणो रडीश तोपण कोइ छोडावशे नहि ११ त्यारे तु पापनु फल जाणशे, ज्यारे जमो त्हारा हाथ, पग, नाक, जीभ तथा कान कापशे १२ जो तु कुत्सित भोजन, मास अथवा दारु कोइ पण वखते खाशे तो तेनु परिणाम भयकर आवशे १३ तु जो नीतिमार्गे चालशे तो त्हने हु घणु धन आपीश. १४ अधर्म करशे तो विपरीत फल पामशे १५ जेटलो धर्म करशे करावशे तेटला सुख शाति मेलवशे १६ना प्रतापथी बधो कंकाश शमी जशे १७ओ सर्वत्र गाममा अथवा संघमां कंकाशने शमावशे १८आनाथी ए झाड भेदाशे नही १९ आ पटेल उद्यमवडे धनवान् थाय छे

(गु० प्रा० वाक्यो)

१ तुम्हे धम्मस्स कज्ज कया करिहित्था ? । २ तुम्हे जं हणाए, सो तुम्हे हणिहिइ तया तुम्हे किं ण कहिहिह ? । ३ मच्चू आगच्छिहिइ चे तुम्हे ण मोच्छिहिह । ४ कुडुंबं

धण वा किंचिवि मए ण आगच्छिहिइ । ५ धम्मो कुणिओ चे मोक्खेश्च सागच्छिहिइ । ६ कस्स वि जतुणो पाणा मा हरिहि । ७कवि नेच्छिहिइ छेच्छिहिइ वे तुम्हे छिन्दिस्सिहि भिन्दिस्सिहि । ८अम्हे धणमज्झिऊण दीणजणे दाहामो । ९ तुम्हे वि सुपुत्तम्मि दाहित्था ? । १० वय सया एएहिं सह चलिहामु । ११ ते परमत्थस्स कज्जे अईव साहज्ज दाहेहिन्ति । १२ (तुम्हे) कस्स वि हरिअ दव्व मा किणिहिह । १३ जहा करिहित्था तहा लहिहित्था । १४ साहवो उवएसिहिन्ति समणोवासआ अधम्मकज्जाणि करिहिन्ति । १५ पाव करिहिइ चे तस्सोदअम्मि विरूव तप्परिणाम दच्छिहित्था । १६ धण लहिअ चे भोअगामत्तेण मा पमोअह किन्तु अणवो भोआवेहित्था । १७ धम्मम त्थाणि सुणिहित्था चे अप्पणो सुद्धी होहिइ ।

## बोधपाठ १७ मो.

(मा० गु० अनुवाद)

१ जो ! बे ब्राह्मणो अहिं उभा छे २ बे पारा बडे पक्षी उडे छे ३ पुरुषोने बे हाथ, बे पग अने एक मोढु होय छे ४ आनी बे आखो तथा बे कानो रमणीय छे ५ आ राजा अपराधी तेमज निरपराधी बन्नेने दड दे छे ६ चडाले कम लावतीना बे हाथ ककण सहित कापी नाख्या ७ बे हाथ विना ते घणो दु खी थइ ८ राम अने लक्ष्मण बे भाइओमा घणी प्रीति हती ९ ते लाबा वखत सुधी नरकादि चार गतिमा विविध योनिओमा भम्यो १० दश सोथी हजार थाय छे ११ अरे ! ते आत्मा पीभत्स कार्य करीनेज कारा

गृहमा पड्यो. १२ पांच पुरुषो जे कहे ते साचु १३ अरे! केम आ अकार्य कर्यु १४ तेमाथी कोइ एक बीजानो विरह सहन करवाने समर्थ नथी १५ साधुओनी पासे त्रण पात्र होय छे -१६ आ तो त्रण लाडुआ मोढामा नाखे छे १७ त्रण पुरुषोथी आ (माणस) जगलमा मरायो १८ चार गतिओ, चार कषायो, चार सर्व घात कर्मो छे १९ जे क्रिया चार गतिओ साधे छे, ते अध्यात्म क्रिया नथी २० जे चार कषायोने जीते छे, ते मक्षरूप थाय छे २१ हा धिक्! आत्माये ससार चार कर्मोथी जीतायो छे २२ आ चारथी वधाये बीए छे २३ पाच आंगली वडे हाथ शोभे छे २४ दरेकने विभाग करीने सोपवु २५ माणस सो, हजार, लाख रूपीआ मेलवे छे तोपण सतोष पामतो नथी २६ ते पदर कर्मादान करी नरकमा पड्यो २७ कागडाओ बे पाखवडे उडे छे

गु ० प्रा क्यो

१ अम्हे तत्थ दुवे जणा माणा पासीअ । २ तुम्भे तिण्णि जणा सह चेअ उच्छीअ । ३ पच जणा सह चलमाणा आलवमाणा गच्छ । ४ ते अप्पणा सह चत्तारि गावीओ णेन्ति । ५ घण तिण्ह जणाण अत्थि । ६ जत्थ पच जणा तत्थ परमेसरो अत्थि । ७ पच इदिआणि जेऊण मण णियच्छइ । ८ पचमहव्वयाइ पालेन्ति । ९ बारसण्ह मासाणमेगो वरिसो , एगसि वच्छरे अ तीणि सआणि सट्ठीओ दिणाणि अत्थि । १० गावी चऊहिं पाएहिं चलइ । ११ णरो पाएहिं चलइ । १२ प-क्खी पक्खेहिमागासे । १३ अरस जणस्स छ

करो छो, ते अमे खरेखर जाणीए छीए १५योद्धानां सम्
हमां प्रवेश करता म्हने रोकवाने कोण समर्थ छे? १६ ता
रावी म्होटो शेठ बीजो कोण छे? १७ कोइ पण शुभ कार्यमा
कदापि म्हारी ना नथी १८ धर्ममार्गमां अमारी सदा एक
ज रीति हाय छे १९ म्हारा मनमां लेश पण गर्व नथी २०
अमारामां कोण म्होटो अथवा कोण जीतशे ते अमे जा
णता नथी २१ तमारी पासे केटला पुरुषातु बल छे? २२
म्हारा उपर जो तमारी कृपा थशे तो तमे म्हने शु दर्शन
नहि आपो? २३ तुं अत्यात सोनी देखे छे

## गु० प्रा० वाक्यो

१ मो मज्झे पासामो किन्तु कोवि अम्हे ण पासइ। २
तुम्ह सयइ अंसिं गामम्मि किं वावार कुणह?। ३ तुम्ह
कास विस्सासो णत्थि?। ४ अम्ह जाव सच णयइ ताव
मणिमो। ५ तुमेसु आलस्स णत्थि तो मे सव्वन्ध जिणेह।
६ जइ किंचिवि आलस्स होहिइ तया त तुम्हाण भयअर
दुह दाहिइ। ७ तुज्झे त जहातहा ण जाणह सो णो
भयअरो अरी अत्थि। ८ को वयइ ज तुम्हे पडिआ णत्थि।
९ अम्हेहिं ज करिउ सक्क त मे कुणिमो। १० तुम्ह सिरि
महावीरस्स सासणमाराहेह तो तुम्हाण कल्लाण होहिइ।
११ तुहेसु अम्ह पुण्णो विस्सासो अत्थि। १२ तुम्भेहिं
सव्वेसिं हिअ साहिज्जइ। १३ अम्हाण किं णाण, अम्ह उ
अप्पा बुद्धी अत्थि। १४ तुब्भाण हिअ साहिउ तुम्हाण
सणासे सत्ती अत्थि। १५ तुमाणमन्तिए जाव अत्त
वलमत्थि तेण तुम्ह किंकिं करिउ ण सक्कह। १६ सने
वले ण किंचि उज्जम कुणह तचेअ तुहाण दुहसा।

## बोधपाठ २० मो.

### प्रा० गु० अनुवाद

१ जे स्नेहाल होय छे ते दयालु अथवा लज्जाशील थायछे २ ईर्ष्याखोरनुं मन पारकी समृद्धि जोईने सदा पोतानी मेलेज तपेछे ३ ते कुलीन स्त्री अकार्यमा लज्जाशील रहे छे. ४ कदरूपो पण वस्त्रालंकार सिवाय पण विद्या वडे शोभितो देखाय छे ५ हे रसाल फल' तु शामाटे रस छोडतो नथी ? ६ पवन राजानो पुत्र हनुमान् रामचंद्रजीनो भक्त हतो ७ श्रीमन्ता पण जो धन वडे परमार्थ न करे तो पछी बीजानी शी वात ? ८ गर्विष्ठ माणस गर्वने लीधे विनयथी भ्रष्ट थायछे ९ म्हें सो वार तेहेने कह्यु तोपण अभिमानी माणस मानतो नथी १० अहो! जव खावाने लीधे आ धकरानी केवी पुष्टता छे! ११ आ गरीब वाछरडानी कृशता–दुर्बलता आज सुधी पण न मटी १२ एक तरफथी धर्मीओ धर्मोपदेश करेछे, बीजी तरफथी अधर्मीओ अधर्म करेछे, एमा कोण जीतशे ? १३ ज्या वाणीआओ रहेछे त्या तेनु घर छे १४ आ रखडेल बालक अमारु वचन मानतो नथी १५ ते गामडीओ माणस शहेरी लोकोनी वातमा शु जाणे ? १६ आत्मिक आनन्दने ज्यां सुधी जाणता नथी, त्या सुधी थोडा विषयसुखोमा लोको आसक्त रहेछे १७ पाजरामा रहेलु पक्षी आकाशमां उडवा इच्छे छे १८ श्रावको दिवसमा जमेछे रात्रिए कदापि न जमतु १९ प्रभातमा सूर्यना किरणोवडे पल्लवित थएला वृक्षो शोभेछे २० ते हाथ वडे मुखने ढाकी ने भयथी कपेछे. २१ अरे एना हृदयनी केवी मृदुता, ज्यो ते दुनी

आने प्रिय थयो २२ धनवानोना घर आगल पंडितो पण नोकर पेठे उभा रहे छे २३ प्राणनो नाश थाय तो पण अ-कार्य करतो नथी

गु० प्रा० वाक्यो

१ बुद्धिमन्तो जणो सव्वत्थ विजअं लहइ। २ दयालू जणो सव्वेसिं जणाण वल्लहो होइ। ३ तस्स मुहम्मि सया आणंदिल्लो दीसइ। ४ तस्स भाअरा अईव सिरिमन्ता अत्थि। ५ पुरिल्ला जणा णिउणा पंडिआ अ हवन्ति। ६ णगओ सहिरत्तणा दीसइ अण्णत्तो कोलग्गी पसरिओ अत्थि। ७ धणावन्तेहिन्तो विज्जावंतो जणो सेट्ठो अत्थि। ८ धम्मिणो जणा णीईए पह कया वि ण मुअन्ति। ९ सो सव्वे जन्तुणो अप्पव्व पासइ। १० स परित्थि माउव्व भइणीव्वअ मण्णइ। ११ अम्हे गामिल्लेहिं सह वसामु। १२ जत्थ कोवि णिसेहं ण कुणइ तत्थ अम्हे वसामो। १३ गुरुभत्तिमंतो जणो अप्पुल्लभावाद रहइ।

## बोधपाठ २१ मो

### प्रा० गु० अनुवाद

(नगर वर्णन)

१ लटकती लुमोवाला वेलना आश्रयथी थयाल तोरणो-ने लीधे जेना किरणोनो विस्तार अटकाववामां आव्यो छे एवो सूर्य वरसादऋतुनी माफक शरदऋतुमां पण ज्यां देखातो नथी (२) ज्यां चौलुक्यवंशना मूलराज आदि राजा ओनुं सर्वत्र व्यापीरहेलुं सुवासथी उत्पन्न थएलुं यश आकाशने सुगंधि बनावनी फुलनी मालानी पेठे दिगूरमणी-

ओना मस्तकने सुरभि बनावे छे, अर्थात् लोकना प्रांत भाग सुधी यश पसरी रह्यु छे (३) सर्व अवस्थाओमा जेम मध्यम (युवा) अवस्था, सर्व जातना फूलोमां जेम जाइनां फूल, सर्व सुखोमा जेम मुक्ति सुख श्रेयस्कर छे तेम पृथ्वी उपरना सर्व नगरोमा जे नगर श्रेष्ठ छे (४) जेने चर्मचक्षु नथी किन्तु ज्ञानचक्षु छे, एवा मुनिओना नेत्रो पण जे नगरने जोवामाटे विकसित थाय छे त्यारे बीजाना नेत्रोनी शु वात करवी! (५) जे नगरमांना विद्वानोने जोया नथी त्यासुधी बृहस्पतिनां वचनो वचनरूप छे, माहात्म्य माहात्म्यरूप छे अने गुणो गुणरूप छे अर्थात् बृहस्पति करता पण जबरा विद्वानो त्या रहे छे (६) जे नगरमा हरि हर ब्रह्मा तेमज बीजा पण सूर्य नाग वगेरे देवो वसे छे एना महिमाथी सुरपुरी-अलकानो महिमा उतरी गयो छे (७) ज्याना माणसो याचकोने सोनु अने रत्नो अजलि भरीने आपे छे तो पण तेमनो सुवर्णनिधि अने रत्ननिधि अक्षीण रहे छे

ग्रीष्मऋतु -वर्णन

(८) अथ राजाए पुछेल द्वारपाले एम कह्यु के हा उद्यानमा ग्रीष्मऋतुनी शोभा (देखावा लागी छे) हे राजन् कदली वनमां उष्ण पण शीतल प्रतीत थाय छे ते आप फरीवार जुओ (९) 'अमने विदेशमा जवु पडे ए खेदनी वात छे, प्रिया जीवे छे के नही? अरेरे शु प्रियाने पण अमे मुकी दीधी, नक्की तेनु मृत्यु थशे धूर्त ईश्वर ग्रीष्मगणि यमरूप छे' एम मुसाफरो लव्या करे अरो करतो पाकेली द्राक्षनो आ सुगध ल्यो'' एम बोलता हे

२९ अप्रगट ज्ञानने प्रगटावनारा, लोकमा आंद पण रावनारा, विस्तृत गुणथी भरेला उपाध्यायो श्रुतजलने वरसावो ३० जे भवबन्धनथी छुटवाने मनने वश करी तेने साम्य अवस्थामा लइ जना नथी रोष करता तेम नथी एकदम खुशी थता, एवा विनीत साधुवर्गने हु नम स्कार करु छु

(३१) जे अश्रद्धालुमा पण श्रद्धा उत्पन्न करे छे, अने धर्मनी प्राप्ति करावे छे तेवा साधुनेज ससारनो नाश करवाने इच्छनारो हु गुरु तरीके मानु छु.

## बोधपाठ २२ मो

### प्राकृत कथानो गुजराती अनुवाद

अथ कोइ एक वखते ते उदायन राजा पौषधशालामा पौषध करेल एकला अछिताय पाखीना पौषधनु सम्यक्प्रकारे पालन करता थका विचरे छे तेवामा आगली रात अने पाछली रातना अतराल (मध्यरात्र) समयमा जागरिका करता ते राजाने एवा प्रकारनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के " धन्य छे ते गाम नगरने के ज्या श्रमण भगवान् महावीर प्रभु विचरे छे अने धर्मकथा करे छे, धन्य छे ते राज प्रभृति पुरुषोने के जे श्रमण भगवत महावीर प्रभुनी पासे केवलिप्ररूप्यो धर्म साभले छे,तेमजपाच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप बार प्रकारनो श्रावकधर्म स्वीकारे छे , एमज दीक्षित थइने आगार धर्ममाथी अणगार धर्मनी प्रव्रज्या ले छे " तो जो कदाच श्रमण भगवत महावीरस्वामी अनुक्रमे विहार करता २ आदि वीत-

चंपानगरे पधारे तो हुं पण भगवंतनी पासे मुंड थइने प्रव्रज्या लउ . तिवारे भगवंत महावीरस्वामी उदायनराजानो उपरनो अभिप्राय जाणीने, चंपानगरीथी नीकली ने ज्यां वीतभय नगर छे, ज्यां मृगवन नामे उद्यान छे त्यां पधार्या गाममांथी प्रखदा निकली, उदायन राजा पण निकल्या त्यार पछी उदायन राजा महावीरस्वामीनी पासे धर्म सांभलीने खुशी थइ संतुष्ट थया थका एम कहेवा लाग्या के "मात्र मोटा दीकरानो राज्याभिषेक करी आपनी पासे प्रव्रज्या लउ" प्रभु कहे छे "जेम तारा आत्माने सुख थाय तेम कर, विलंब न कर त्यार पछी उदायन राजा आभियोगिक हस्तिरत्न उपर बेसीने पोताने घेर आव्यो त्यार पछी उदायनने एवो विचार थयो के "जो अभिजित् कुमारने राज्यमां स्थापी हुं प्रव्रज्या लउ तो अभिजित् कुमार राज्य, राष्ट्र अने जनपद तेमज मनुष्य संबंधी कामभोगमां मूर्छित थयो थको अनादि अनन्त संसार रूप अटवीमां परिभ्रमण करशे, एटलामाटे सारो रस्तो ए छे के मारा पोताना भाणेज केशीकुमारने राज्यनो भार सोंपीने मारे प्रव्रज्या लेवी" आवी रीते मनमां विचार करीने सारी तिथि, सारु करण अने सारा मुहूर्तमा हजुरी माणसोने बोलावीने एम कह्यु के "जल्दी केशीकुमारना राज्याभिषेकनी तैयारी करो" त्यार पछी म्होटी धामधुमथी अभिषेक करेल केशीकुमार राजा थयो यावत् प्रजा उपर शासन चलावतो विचरे छे त्यार पछी उदायन राजा केशिराजाने पुछे छे के "हे देवाणुप्पिया! हुं , " उद्वेग पामीने प्रव्रज्या लउ छुं" त्यार.

पछी केशिराजाए हजुरी माणसोने बोलावी एम कह्युं के " उदायनराजाना घणा इनडूयावाला , म्होटाने अने तेवा दीक्षा महा-सवनी जल्दी तैयारी करो " त्यार पछी घणी विभूतिथी अभिषेक कर्यो शिबिकामां बेसीने महावीर भगवतनी पासे जइने उदायन राजाए प्रव्रज्या लीधी यावत् घणा उपवास छठ अट्ठम चार पांच उपवास , मासखमण, अर्द्धमासखमण आदि तपश्चर्या करता थका विचरे छे

त्यार पछी ते उदायनअणगार घणा वरससुधी श्रमण प्रव्रज्या पालीने साठ भक्तनो (एक मासनो) संथारो करी जे कार्य माटे दीक्षा लीधी हती ते कार्य सिद्ध कर्युं यावत् सर्व दुःखनो अंत करी मोक्ष पहोंच्या .

## बोधपाठ १ लो

### गीं० गु० अनुवाद

(१) त्यार पछी ते प्रसिद्ध इन्द्र निश्चिन्त थयो थको भले अंत पुरमां रहे हे पृथ्वीपते! तुं हवे इन्द्रनो मित्र थयो छे (२) हे मनस्विन् राजन्! तुं 'भगवान मारुं रक्षण करे' एम कहीने जेने विनवे छे ते जिनेन्द्र प्रभुथी हे पृथ्वीना इन्द्र! तारुं रक्षण थाओ (३) हे पराक्रमलक्ष्मीना नाथ! आ जगतमां जिनेंद्र भगवाननुं स्मरण करे थके हे आलोक अने परलोक बन्ने लोकने सफल करनार! आरा आर्यावर्तमां तुं कृतकृत्य थयो छे (४) हे राजन्! समग्र पृथ्वीनुं पालन कर स्वर्गनुं पण रक्षण कर तारुं कल्याण थाओ तारी अपूर्व कीर्तिथी जगतनो मुगट बनो' (५) हे राजन्! अपूर्व,

[अथि]वह तु इन्द्रना जेवो शोपना जेवो के भरत चक्रवर्तीना
[ज]ेवो थइने एकल लघु राज्य कर (६) पृथ्वीनो उद्धार क-
[री]ने, गुरु भाव (गौरव) मेलवीने, बलि (बलवान शत्रु) नु
[द]मन करीने लक्ष्मी पासे जइने तु उपेन्द्र थाय छे, अथवा
[इ]न्द्र समान था (७) हे राजन्! अमारा जेवा तारी प्रशसा
[क]रे तो पछी बीजा केम न करे? तारी कीर्ति आ पृथ्वी
[उ]पर थइने ठेठ स्वर्ग सुधी रमण करशे (८) हे राजन!
[कृ]पणा भगवती तुष्टमान थएली छे 'माटे वरदान आपु छु'
[ए]म तारा प्रत्ये तेनु कहेवु युक्त छे तेमज 'माग माग' एम
[क]हेवु पण उचितज छे आ प्रसगे 'ज्मा शु' एम उपेक्षा
[क]र (९) राजा कहेवा लाग्यो हे भगवति! तमे तुष्टमान
[थ]या एटले आ त्रण भुवननु राज्य पण कइ विसातमा नथी
[का]रके तमारा प्रसादथीज देवीओ पण दासी तरीके बोलावाय
(१०) हे श्रुत देवते! देवि! आश्चर्य थाय छे के मने तारा
[दर्श]न थया हवे हु ससार-भव भ्रमणथी थकित थइ गयो
माटे हे देवि! हर्ष सहित कइ पण उपदेश मने आप
तेथी 'ही ही' शब्दनो पोकार करता विदूषको पण शांत
थाय

## बोधपाठ २ मो

### मा० गु० अनुवाद

(१) ज्यार पछी सरस्वतीए भव दुःख रूप ग्रीष्मताप
टाळी देरामा मारा मेघना जेवो अस्खलित शुभ
[उपदे]श देवा मांड्यो (२) कपाय वर्जित, सावद्य योग
[रहि]त, एक परमात्मानी साथे मने जोडनार साधु अत्यन्त

स्वास्थ्य पूर्वक धर्मध्यानमा तत्पर थाय छे तो चतुर्थवर्ग-निर्वाणपदनो साधना करे छे (३) पुण्यशाली, तीक्ष्णबुद्धि वालो, सरल स्वभावी, साधुने पथे विचरतो सज्जन आखा जगत्नु वत्सलपणु मेलवतो परमपद-मोक्षने मेलवे छे (४) स्वपरनी विवक्षा—भेदभाव रहित अर्थात् शत्रु मित्रमा समभाव राखतो सर्वने करुणा दृष्टिथी जोता परिमित अने मिष्ट वचन बोलतो माणस मोक्षना मार्गमा स्थिर थाय छे (५) एनो वध करु अने एनी भक्ति करु एवी जेनी बुद्धि छे ते बन्नेना तरफ आत्मभावनी बुद्धि राखवी जोइए अर्थात् घातक के भक्त बन्ने मारा समान ज छे एम मानवु

## बोधपाठ ३ जो.

### वै० गु० अनुवाद

(१) प्राज्ञ पुरुषोना नायक, गुणनिधान, अनुपम पुण्यशालि राजाए मदन आदि आन्तर शत्रुओने चोक्कस जितवा एम चिंतववु जोइए. (२) शुद्ध अने कषाय रहित जेनु हृदय छे अने इन्द्रिय रूप कुटुम्बनी चेष्टा जेणे जीती छे, कुटुम्ब स्नेहथी जे मुक्त थएल छे एवो योगी मोक्ष पदने पामीने त्याथी पाछो वलतो नथी (३) शम-शान्ति रूप पाणीमा स्नान करेल, अने कृत्रिम कपटरूप स्त्री नो त्याग करनारना कषायो अने सर्व कर्मो नष्ट थइ चाल्या जाय छे (४) जो परमेष्ठि मन्त्रनो पाठ कराय अने जीवनो वध न कराय तो जेवी तेवी जातनो पण माणस निर्वाण पदने पामे छे (५) गमे तो. जंगलमा बेसे, गमे तो पर्वत उपर बेसे, भले

आकरी तपस्या पण करे, पण ज्या सुधी विषयथी दूर नहीं थाय त्या सुधी मोक्ष मेलवशे नहीं.(६) चत्तारि मंगल इत्यादि मन्त्रनी उद्घोषणा करता तेणे योगक्रियानी पेठे दूर रहेली पण मोक्ष लक्ष्मी ग्रहण करी छे अर्थात् स्वाधीन करी छे (७)

सर्वज्ञराज–जिनेन्द्रना चरणने ध्यावतो योगी शठ अने अशठ बन्नेनो बन्धु, उपशमनो आश्रय करनार अने आरंभरहित होय छे (८) झर्झर, डमरुक, भेरी, ढक्कादि वाजित्रो अने मेघनो गभीर शब्द परमात्मामा लीन थएल जेना आत्माने चलायमान नथी करतो ते धन्यवादने योग्य छे

## बोधपाठ ५ मो.

### अप० गु० अनुवाद

सरस्वतीनो राजाने उपदेश

(१) जे जेमाथी थतु हो ते तेमाथी थाओ, शत्रु हो के मित्र हो, क्याथी पण आवो, जे ते मार्गमा–गमे ते पंथमा लीन हो तथापि ते बन्ने तरफ एकज दृष्टिथी–समदृष्टिथी जो (२) कोइ पण जे ते पुरुष, कोइ पण जे ते स्त्री अर्थात् गमे ते पुरुष के गमे ते स्त्री हो तेने ते हित वचन कहेवु के जे बधी रीते रुचिकर थाय (३) 'जे परम सत्य होय ते बोलवु' ए धर्मनु रहस्य तु जाण एज परमार्थ, एज कल्याण अने एज सुख अने रत्ननी खाण छे (४) जो आ सुश्रावको अने आ मुनिओ तप तपी रह्या छे आ जन्मनु एज फल छे विषयसुख ए तेनु फल नथी (५) सर्वलोको प्रयत्न

करी रह्या ने तेम थया पण पहिलां छे एम हे राजन् [illegible]
जाय परन्तु तेमानो काइ पण एम नथी विचारतो क निर्वा
थानु शु स्वरूप छे?

(६) (श्रुतदेवी कुमारपालने कहे छ के आ जीवन
उपदेश सर्वने कर्ण सभलाव्जे) हे निर्मोह' तुं सर्व कोइन
उपर आ चिन्तव अर्थात् सर्वने कहे क तमे ससार
अटवीमा पडो नहि किन्तु तमे सुखी थाओ (७) तेम
आत्मानी पेटे तमने जोइने अने तमारी माफक आत्मा
जोइने अर्थात् समभावरागीने तने अक्षय स्थान प्रत्ये
जवाने तनेज शिरामणि दृढ सु के "तु समभाव रास
(८) तारे जीवदया पालवी तारे साचु बोलवु तेथी तारा
सुख अने कल्याण थशे तेथी (तु) कृतकृत्य थइश (
आ जीदगीमा केवल तमारे साधुओनी सेवा करवी (ए
तारु सम्यक्त्व (एज) तारी क्षमा, (एज) तारो, सयम
मानु छु (१०) धर्माक्षर--धर्मसिद्धान्तमा आग्रह रा
(एथी) कलिरूप मल तारी पासेथी नष्ट थशे, पाप चा
जशे, मोक्ष पण तारथी दूर नहीं रहे (११) जो तमारा
सयम होय तो तमारो मोक्ष दूर नथी रहेल 'हु तम
बान्धव छु' एम कहीने सर्वने आ कहे (१२) कोइ '
मारास अमने निन्दो के कोइ पण अमारी स्तुति करो
तो कोइने पण नहि निन्दो र तेमज कोइने पण नहि स्त
(१३) 'मार गहन ससार मुकशो' एवी मति मारामा
थाओ सुगुरु मारे माथे हाथ मुको के (जेथी) आत्म
शुद्धि मेलवु (१४) अमे कोइ पण विधिने दशे आ मनु
पणु मेलव्यु मोक्ष माराथी अदूर हो. मिथ्यात्व मारी पा

मागी जाओ. (१५) मोहनो अकुर अमारी पासेथी चाल्यो गयो अमाराममा सयम उत्पन्न थयो विषयो मने लपट नहि करे, एम विश्वास न राख

(१६) काया झुपडी नक्की अस्थिर छे आ जींदगी क्षणिक छे ए बन्ने ससारना दोषोने जाणीने अशुभ भावने त्यजी दे (१७) ते कानने धन्य छे, ते हृदय कृतार्थ छे के जे क्षणे क्षणे नव नवा शास्त्रना पदो ने साभले छे अने धारण करे छे (१८) जेना कानमा जिन आगमनी वात पेठी तेने अमारु ने तमारु एवु ममत्व रहेतु नथी (१९) जीव जेटलो वखत जीवलोकमा जीवे छे तेटलो वखत जो दमन करे अने आटला वैभवने न कइ अर्थात तुच्छ गणे तो आ समाज ज्ञान प्राप्त करी ते लोकमा—मोक्षमा नक्की जाय

## बोधपाठ ६ मो

अप० गु० अनुवाद

(१) रे मन! शामाटे तु परस्त्रीनी प्रार्थना करे छे ? रे विषयो! तमे दूर जइने बेसो हे इन्द्रियो! तमे नियन्त्रित बनी बेसो केमके हु पुष्कल मोक्षनु फल (मारी तरफ) जतु छु-मेलवु छु (२) एवी रीते आत्माने शीखव जिन आगमने सभार धर्मनु अनुष्ठान कर प्रशस्त सयमप्रत्ये तारो परमार्थ अमे कहीए छीए (३) हे प्रिय! हु तमारी दासी छु' एम बोलती वनिताओ सयम लीन थएल जे मुनिने चलावी शक्ती नथी ते पुरुषने चोक्कस मोक्षनु सुख मळशे (४) जे सत्य वचन बोले छे, प्रधान—श्रेष्ठ उपशम भावने पामे छे, शत्रुने पण मित्र समान जुए छे, ते शाश्वत निर्वाणपदने ग्रहण करे छे

(५) जेनु चित्त बीजाना जेवु चपल नथी एवो जे माणस लोकोत्तर ब्रह्मचर्य पाले छे, ते माणस प्राये तेज भवमा प वित्र निर्वाण पद पामे छे (६) ससारमा प्राये सुख दुर्लभ छे माणसो घणे भागे सुखमा लुब्ध थएल छे मुग्धज्ञान-विक मनुष्यो प्राये सतोष रूप अमृतनु पान कर्या विना ते सु ने शोधे छे (७) ज्ञान दर्शन चारित्र रुपी त्रण रत्नने च रुखीरीते अनुसरो,अन्यथा मुक्ति क्याथी होय! भाण्ड-कार्य आगा वगेरे वस्तु होय तो घणु धन मले अन्यथा शु आ काशमाथी पडे? (८) गहन ससारमा शाथी भमाय छे अ मोक्ष शाथी थाय? ए जाणवाने हे मूढ! जो इच्छतो हो तो जिन आगम जो (९) सपत् चचल छे अने मरण निश्चे छे एम बधाए कहे छे, पण महामुनिओनी साथे मलीने कोइ सयम पालतो नथी (१०) मनने जरी पण विषय ल म्पट न कर दुष्कृत्य कर्म पण न कर वचननो आरभ पण न कर जो निश्चे मुक्ति सुख इच्छतो हो त। (११) वनमा जइने बेसे अथवा घरमा बेसे के तीर्थ स्थले बेसे पण जे माणस दररोज जीवदया पाले छे ते सर्व सिद्धिपद पामे छे (१२) जेने तपश्चर्यानी साथे सयम नथी किन्तु सयम विना एमने एम जे दिवसो गुमावे छे अने तेना माटे जे परतावो करतो नथी तेनी साधुवर्गमा गणना थती नथी अर्थात् साधुपणानी तेनी रेखा भुसाइ जाय छे (१३) जे मनुष्य पुण्यहीन अने प्रतिकूल वर्तनार उपर पण दया राखे छे ते आ मनुष्य जन्ममा हमणाज सिद्धि मेलवो (१४) जो ससारना मार्गमा रहेलो प्राणी खिन्न थाय छे तो मे आ कह्यु छे के हे मूर्ख! पवन जेवी शीघ्र गतिवालु पोतानु मन स्थिर कर (१५)

नियम वगरना जे माणसो 'कसर कसर' करतां रातें पण खाय छे ते माणसो हु हु करता पापरूप द्रहमा पडे छे अने लाखो भव (ससारमा) भमे छे (१६) जेनु मन तपनुं पालन करवामा वांदरानी घुग्घिका-चेष्टा (उत्सुक पणु) आपे छे ते गहन ससारमा आवर जावरनी क्रिया नथी पामतो अर्थात् तेनी गत्यागति बंध थाय छे (१७) स्वर्गने माटे जीवदया कर (पाल) मोक्षने माटे इद्रिय दमन कर तुं कहे के कोनामाटे बीजा कर्मनो आरंभ करे छे (१८) कोना माटे परिग्रह अने कोना माटे जुठु(बोले छे,)ते कहे जेना विना वलि अवश्य मोक्ष न मले, ते आवश्यक मोक्षसाधन उपशमादिक एकवार पण ले (अगीकार कर)

(१९) जो तु कल्याण इच्छतो हो तो प्रशम-प्रकृष्ट शातिथी कल्याण छे जो प्रशम करवो होयतो करण-इन्द्रियोनो विजय करवो जोइए जो इद्रियोनो विजय करवो होय तो निश्चल मनने धर वली राग द्वेषनो विजय करीने निश्चल मन राख तेमज अविचल सामायिक व्रत आचरीने रागादिनो विजय कर निर्मल अममत्व भाव करीने अविचल सामायिक कर (२०) निश्चे क्रोधनो अन्त करीने, सर्वथा माननो अत करीने, माया जालनो अत करीने, अने लोभनो अन्त करीने तु निवृत्त था (२१) जो ससारने छोडवा धारतो हो अने मोक्षसुख भोगववा उतावल होय तो चोक्स पुत्र कलत्रादिनो सग मुकवाने, शुभ गुरुनी सेवना करवाने अने ममत्व रहित वनवाने मनने अति दृढ कर (२२) चित्तने अनाकुल करवाने वचनने अचपल बनाववाने, कार्य निर्मल करवाने निश्चल

ध्यान—धर्मध्यानादिनो प्रयोग कर (२३) जमुना नदीए जइने, गगाए जइने, सरस्वतीए जइने अने नर्मदाए जइने, अजाण लोक पशुनी माफक जे पाणीमा डुबकी मारे छे, ते पाणी शु मोक्षनु सुख आपे छे?



# शब्द कोश



अ अ० (च) अन
अअ पु० (अज) बकरो
अइ अ० (अति) बहु, घणु
अइ अ० संभावनाना अर्थमा
अइ उप० (अति) हद बहार, उल्लंघन उत्कर्ष, अतिशय
अइच्छ दे०धा० जवु, गमन करवु
अइवाअ धा०(अति+पात्) हिंसा करवी
अइसरिअ न० (ऐश्वर्य) पराक्रम
अईव अ० (अतीव) अत्यन्त घणुज
अकज्ज न० (अकार्य) न करवा लायक काम
अकासि अ० निषेधमां, नहि ए अर्थमां
अग्ग न० (अग्र) आगल
अग्गि पु० (अग्नि) अग्नि
अच्छ धा० (आस्) बेसवु
अच्छ न० (दे०) जल्दी, तरत
अच्छि न० (अक्षि) नेत्र, आंख
अच्छि पु० स्त्री० न० (अक्षि) आंख
अज्ज अ० (अद्य) आज
अज्ज धा० (अर्ज्) एकठु करवु, मेलववु
अज्जव न० (आर्जव) मृदुता
अज्झत्थ न० (अध्यात्म) आत्मतत्त्व संबंधी
अज्झवसिय न० (अध्यवसित) अध्यवसाय, परिणाम

अज्झप्प न० (अध्यात्म) अध्यात्म आत्मतत्त्व संबन्धी
अज्झवसाअ पु० (अध्यवसाय) परिणाम
अट्टज्झाण न० (आर्तध्यान) माठु ध्यान
अट्ठ पु० (अर्थ) शब्दनो वाच्य
अट्ठ स० वा० (अष्टन्) आठ
अट्ठारस स०वा०(अष्टादश)अढार
अडणी स्त्री० (दे०) मार्ग, रस्तो
अण अ० निषेधमां, 'नहि' ए अर्थमां
अणवयग्ग त्रि०(अनवदग्र) अनन्त
अणाह वि० (अनाथ) अनाथार
अणु उप० (अनु) पाछल, सरखु, समीप
अणुजाण धा० (अनु+ज्ञा) अनुमोदवु, संमति आपवी
अणुवग्ग त्रि० (अणुप्रतिक) अणुव्रतयुक्त।
अण्ण स० (अन्य) बीजो
अण्णहा अ० अन्यथा, नहि तो
अण्णी स्त्री० (दे०) दरांती [२] नणंद [३] फईबा
अत्त पु० (आत्मन्) आत्मा, पोते
अत्तवयण न० (आप्तवचन) प्रामाणिक वचन
अत्थरिअ पुं० (दे०) नोकर
अद्ध पु०(अध्वन्) मार्ग रस्तो
अद्धाण पु० (अध्वन्) मार्ग, रस्ता

अलाजम्भ त्रि० (अनारम्भ) आरंभ रहित ।
अंतरबल न० अन्दरनु बल मानसिक बल
अंतिअ न० (अन्तिक) नजदीक, पास
अप्पणो अ० स्वय पोते पोतानी जाते
अप्प पुं० (आत्मन्) आत्मा, पोते
अप्प वि० (अल्प) थोडु
अप्पसाहग पु० (आत्मसाधक) आत्मार्थी
अप्पाण पु० (आत्मन्) आत्मा पोते
अप्पुल्ल वि० (आत्मिक) आत्मिक, आत्म सम्बन्धी
अयीअ त्रि० (अद्वितीय) एकाकी ।
अब्भुदअ पु० (अभ्युदय) चडती, उदय
अम्मा अ० आश्चर्य
अम्हे स० (अस्मान्) अमने
अम्हे स० (वय) अमे आपण
अरि पु० (अरि) शत्रु दुश्मन
अरे अ० संबोधन कलह
अलमञ्जुल त्रि० (दे०) आलसु
अल अ० निषधमा, नहि ए अर्थमा
अलंकार पु० (अलंकार) घरेणां, दागीना
अलाहि अ० निषधमा, नहि ए अर्थमा
अलि पु० (अलि) भमरा
अव उप० (अव) नीचे निश्चय
अवत्था स्त्री० (अवस्था) वय, दशा ।
अवयासिणी स्त्री० (दे०) नासारज्जु
अवराह धा० (अप+राध) अपराध करवो,

अवजिअ दे० खोटु, मिथ्या
अव्वो अ० सूचना, दुःख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, तथा पश्चात्तापना अर्थमां
अस धा० (अस) थवु, होवुं
असगय दे० वस्त्र
असुद्ध वि० (अशुद्ध) शुद्ध नहीं, मेल
अस्स पु० (अश्व) घोडो
अह न० (दे०) दुःख
अहम्म (अधर्म) पु० धर्म विरुद्ध कार्य
अह स० हुं
अहिअल (दे०) गुस्सो
अहिअ वि० (अधिक) वधारे
अहि उप० (अधि) उपर, अधिकार
अहि उप० (अभि) तरफ, पासे, वारवार
अहिल्ल त्रि० (दे०) धनवान
अहुणा अ० (अधुना) हमणा
अंग न० (अङ्ग) आचारांगादि सूत्र [२] शरीर अवयव
अंगुलि स्त्री० (अंगुलि) आंगली
अंजलि पु० (अञ्जलि) हथेली
अंधआर पु० (अन्धकार) अंधारु
आआर पु० (आचार) आचार
आइच्च पु० (आदित्य) सूर्य
आ उप० (आ) हद मर्यादा अभिव्याप्ति, थोडु उलटापणु
आएस पु० (आदेश) हुकम, फरमान
आ+करिस धा० (आ+कृष्) खेंचवु आकर्षवुं

आकारि धा० (आ+कृ+णि) बोलावबु साद करवो
आगच्छ धा०(आ+गम्) आवबु
आगास न० (आकाश) आकाश
आरुहाम धा० (आ+क्रन्द्+णि) रोवबु, प्यारबु
आरम्भ धा० (आ+रम्) आरभबु शरूआत करवो
आणंद पु० (आनन्द) आनन्द
आणंदाराम पु०(आनन्दाराम) आनन्दरूप बगीचो
आम अ० अभ्युपगम, स्वीकार
आ+यर धा० (आ+चर्) आचरबु अनुष्ठान करबु
आयरिअ पु० (आचार्य) साधुगणना नायक
आरणाल न० दे० कमल
आलम्पित त्रि० (आलम्बित) आश्रित
आलव धा० (आ+लप) आलाप सलाप, बोलबु
आलस्स न०(आलस्य) आलस,सुस्ती
आवण पु० (आपण) दुकान बजार
आवत्ति स्त्री० (आपत्ति) आपद
आवत्ति स्त्री०(आवृत्ति) पुनरावर्तन
इ अ० पादपूरणमां
इअर त्रि० (इतर) अन्य, बीजुं
इच्छ धा० (इष्) इच्छा करवी, चाहबु.
इट्ठ वि० (इष्ट) इच्छित, प्रिय
इड्ढिमत त्रि० (ऋद्धिमत्) वैभववालो

इतरहा अ०(इतरथा)अन्यथा नहितो
इत्थ अ० (इत्थ) एवीरीते
इत्थी स्त्री० (स्त्री) मनुष्य, स्त्री
इन्दिअ न० (इन्द्रिय) चक्षु आदि इन्द्रियो
इर अ० सभावना, निश्चय
इरमदि पु०(दे०)उष्ट्र
इल पु० (दे०) पटावालो, चपरासी
इव अ० इवार्थक, सादृश्य, तुल्य, पेठे
इसि पु० (ऋषि) धर्मगुरु, साधु,मुनि.
इहरा अ० अन्यथा
ईस न० (दे०)खीला
ईसर पु० (ईश्वर) प्रभु,समर्थ
ईसा स्त्री० (ईर्ष्या) अदेखाइ
उ (तु) अ० तो
उअ अ० जो नजर कर
उचिअ वि० (उचित) योग्य, लायक
उच्चिणिरी स्त्री० (उच्चेत्री) वीणनारी
उच्छ पु० (उक्षन्) बलद
उच्छग पु० (उत्सग) खोला गोद
उच्छाण पु० (उक्षन्) बलद
उज्जम न० (उद्यम) उद्यम
उज्जाविय त्रि०(दे०) विकसित थयेल
उज्जाण न० (उद्यान) बगीचो
उज्जोमिआ स्त्री० (दे०) किरण
उज्झल पु० (दे०) उद्यम
उज्झित त्रि० (उज्झित) त्यक्त
उज्जोअ पु० (उद्योत) प्रकाश
उट्ठ धा०(उत्+स्था) उठवु, उभाथबु
उड्डे धा० (उत्+डी) आकाशमां उडबु

उत्तरज्झयण न० (उत्तराध्ययन) एक सूत्रनु नाम
उद् उप० (उत्) उंचे, उदय, विशेष
उदय पु०(उदय) प्रादुर्भाव चढती
उदायण पु०(उदायन) सम्यक्त्वना धारक कौशांबीना राजा
उन्नय त्रि० (उन्नत) उंच चढेलु
उम्मीलण त्रि० (उन्मीलन) व्यक्त करवा
उल्लस धा० (उत्+लस्) प्रफुल्ल प्रसारवु
उव उप० (उप) पास समीप
उवएस धा० (उप+दिश्) बोध आपवो
उवंग न० (उपाङ्ग) उववाइ आदि सूत्र
उवज्झाय पु० (उपाध्याय) अध्यापक शास्त्रशिक्षक
उववज्ज धा० (उप+पद्) उपजवु, उत्पन्न थवु
उवस्सय पु० (उपाश्रय) धर्मस्थानक
ऊ अ० गर्हा, आक्षेप विस्मय तथा सूचनाना अर्थमां
ऊ उप० (उप) पासे, समीप
एक्कारस स०धा०(एकादश) अगीयार
एक्कसरिअं अ० सम्प्रति अर्थमां
एग स० (एक) कोइ एक
एग स० धा० (एक) एक
एगुणवीसा स० धा० (एकोनविंशति) ओगणीस
एण्हिं अ० संप्रति अथवा
एत्ताहे अ० संप्रति अथवा
एत्थ अ० (अत्र) अहिं
एव अ० एवी रीते
ओ अ० सूचना पश्चात्ताप
ओयाण न०(आदान) भात.
ओ उप० (अव) नीचे निश्चय
ओ उप० (उप) पास, समीप
ओसह न० (औषध) ओसड, दवा
क स० (किम्) काण शुं, प्रश्न
कअर स० (कतर) बेमांनाएक
कइ न०(कति) केटला
कइअव न० (कैतव) कपट
कज्ज न० (कार्य) काम काज.
कण्ण न० (कर्ण) कान
कनकपट त्रि० (कृतकपट) जेणे कपट करेलुं छे एवु
कत्तार त्रि० (कर्तृ) करनार
कत्तु त्रि० (कर्तृ) करनार
कत्थ धा० (कथ्) कहेवु बोलवु
कप्पाड पु० (दे०) पुरा
कमलावई स्त्री० कमलावती आ नामना एक सती
कम्म न० (कर्म) ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म
कम्मआयाण न० (कर्मादान) श्रावकने वर्जनीय आचार
कम्हिअ पु० (दे०) माली
कयन्न न० (कदन्न) खराब भोजन
कयली स्त्री० (कदली) केल
कयावि अ० (कदापि) काइ पण वखते
कर पु० (कर) हाथ

आग श्री पुस्तक

कर धा० (कृ) करवुं
करि पु० (करि) हाथी
करडा स्त्री० (दे०) भमरा
कलय पु० (दे०) सुवर्णकार, सोनी
कलयदि त्रि० (दे०) प्रख्यात
कल्लाण न० (कल्याण) श्रेय मोक्ष
कव्व न० (काव्य) कविता
कसाअ पु० (कषाय) क्रोधादिकषाय
कह धा० (कथ्) कथन करवु, कहेवुं
कह अ० (कथ) क्या रीते
कहा स्त्री० (कथा) कथा, वार्ता
कंचणार पु० (काञ्चनार) कोविदार
Chart of नामनु झाड
कंटअ पु० (कण्टक) कांटो
कंदोट्ट न० (दे०) कमल
कंप धा० (कम्प्) ध्रुजवु कंपवु
कामभोअ पु०(कामभोग) इन्द्रियना
विषय भोग
कारण न० (कारण) हेतु कारण
कारागिह न०(कारागृह) कदखानुं
काल पु० (काल) समय वखत
कालय त्रि० (दे०) ठग धूर्त
किण धा० (क्री) खरीदवुं
किणो अ० प्रश्नमां
किच्च न० (कृत्य) काय
किन्तु अ०परन्तु
किर अ० संभावना निश्चय
किरण पु० (किरण) किरण
किरिआ स्त्री० (क्रिया) अनुष्ठान
किल अ० संभावना निश्चय
किलेस पु० (क्लेश) कंकास,दु ख

किवा स्त्री०(कृपा) कृपा महेरबानी
किविण पु०(कृपण) लोभी,कंजुस
किस वि० (कृश) पातलुं
किसीवल पु० (कृषीवल) खेडुत
किंकर पु०(किङ्कर) नोकर,चाकर
कीड धा० (क्रीड्) क्रीडा करवी,
clear of रमत करवी
कीर धा० (कृ) करवुं
कुडुंब न० (कुटुम्ब) वालवचां
कुठार पु० (कुठार) कुहाडो
कुण धा० (कृ) करवु
कुप्प धा०(कुप्) कोप करवो खीजववु
कुल्ल त्रि० (दे०) चतुर
कुरूव वि० (कुरूप) कदरूपु
कुलीण वि० (कुलीन) खानदान
कुसल पु० (कुशल) डाह्यो
माणस चतुर
केअई स्त्री० (केतकी) केवडो
केआर पु० (केदार) खेतर, घासनुं
वीड
केरिस वि०(कीदृश)केवा,कनाजेवो
कोणिअ पु० श्रेणिक राजानो पुत्र
कोणिक
कोसल्ल न० (कौशल्य) आरोग्य
कुशलता
कोहग्गि पु०(क्रोधाग्नि) क्रोधरूपी
अग्नि
कोहसत्तु पु०(क्रोधशत्रु)क्रोधरूपी
दुश्मन
खओल पु०(दे०) वाघ

खत्तिअ पु० (क्षत्रिय) क्षत्रियजाति पुरुष
खम धा० (क्षम्) खमवुं सहनता राखवी
खमा स्त्री० (क्षमा) सहनशीलता
खम्म धा० (खन्) खादवु खणवुं
खल धा० (स्खल्) अटकवुं ठस लागवी
खलु अ० निश्चय
खन्दक पु० (स्कन्धक) जैन गुरुमां प्रसिद्ध एक आचार्य
खिप्पामेव अ० (क्षिप्रमेव) सत्वर
खिव धा० (क्षिप्) फेंकवुं
खु अ० निश्चय
खेअ पु० (खेद) परिश्रम विषाद दिलगिरि
गअ पु० (गज) हाथी
गइ स्त्री० (गति) नरक आदिनी गति
गच्छ धा० (गम्) जवु गमन करवु
गण्ह धा० (ग्रह्) ग्रहण करवुं लेवु
गणिआ स्त्री० (गणिका) वेश्या
गम धा० (गम्) जवुं चालवुं
गयण न० (गगन) आकाश
गरीअ पु० (गरीयस्) अतिशय, गुरु मोटु
गव्व पु० (गर्व) अभिमान
गव्व पु० (गर्व) मद अभिमान
गहण नं० (गहन) कठिन, आकरु
गामिल्ल नि० (ग्राम्य) गामडीआ
गाव पु० (ग्रावन्) पत्थर
गावाण पं० (ग्रावन्) पत्थर

गावी स्त्री० (गो) गाय
गाहा स्त्री० (गाथा) श्लोक
गिज्झ धा० (गृध्) आसक्त थवुं तल्लीन थवुं
गिम्ह पु (ग्रीष्म) गरमीनी ऋतु
गिरि पु० (गिरि) पर्वत
गिह न० (गृह) घर, मन्दिर
गिहत्थ पु० (गृहस्थ) गृहस्थ, साहुकार
गिहासम पु० (गृहाश्रम) गृहस्थाश्रम
गिहिणी स्त्री० (गृहिणी) धणी आणी
गुण पु० न० (गुण) गुण
गुण पु० (गुण) गुण
गुरु पु० (गुरु) धर्ममार्गने बतावनार
गुञ्ज धा० (गुञ्ज्) गुंजारव शब्द करवा
गोवच्छ पु० (गोवत्स) वाछरडुं
गोवाल पु० (गोपाल) गोवाळीआ
घेप्प धा० (ग्रह्) ग्रहण करवुं स्वीकारवु
चउ स० वा० (चतुर्) चार
चउद्दस स० वा० (चतुर्दश) चौद
चमू स्त्री० (चमू) सैन्य, लश्कर
चम्म न० (चमन्) चामडी
चय धा० (त्यज्) छोडवु तजवुं मुकादेवु
चर धा० (चर्) फरवु विचरवुं
चल धा० (चल्) चालवु

चिट्ठ धा० (स्था) उभा रहवुं, स्थिर रहवुं
चिण धा० (चि) चणाववुं गाठववु एकठु करवु
चिम्म धा० (च्चि) वाणवु
चिंत धा०(चिंत्) चिंतववु विचारवुं
चिर अ० लाबा वखत सुधी
चुलुक पु०(चौलुक्य) चौलुक्यवश
चे धा० (चि) चणाववु गाठववुं एकठु करवु
चे अ० (चेत्) यदि जा
चेअ अ० नक्की निधारणा
चेडग पु० (चेटक) विशाला नगरीना राजा,महावीरना मामा
चार,पु० (चोर) हर लुंटारा
चड वि० (चयड) विकराल भयकर
चंडाल पु० (चण्डाल) चण्डाल
च अ० नक्की निधारण
चिअ अ० नक्की निधारण
चेअ अ० नक्की निर्धारण
छ स० वा० (षट्) छ
छिन्द धा० (छिन्द) छेदवु कापवु
छिप् धा० (स्पृश) अडकवु स्पर्शवु
छुप्प धा० (छुप्) स्पर्श करवा
छुहा स्त्री० (क्षुधा) भूख
जग न० (जगत्) दुनिया
जण पु० (जन) मनुष्य माणस
जणवअ पु० (जनपद) देश
जन्तु पु (जन्तु) जाव जन्तु
जम पु० (यम) परमाधामी यम
जम्म न० (जन्मन्) जन्म उत्पत्ति
जय धा० (जि) जीत मेळववी
जयन्ती स्त्री० उदायनराजाना फोइ महावीर स्वामीनी मोटी श्राविका
जरा स्त्री० (जरा) वृद्धावस्था
जल न० (जल) पाणी
जव धा०(या+पि) वखत काढवा ढील करवी
जव पु० (यव) जव, धान्यविशेष
जस पु० (यशस्) यश, कीर्ति
जहा अ० (यथा) जेम जवीरीत जेवु
जाइ स्त्री० (जाति) जाइनु फूल
जामाअर पु० (जामातृ) जमाई
जामाउ पु० (जामातृ) जमाई
जाव अ०(यावत्) ज्या सुधी
जिण पु० (जिन) तीर्थङ्कर
जिण धा० (जि) जीत मेळववा
जिणदास पु० (जिनदास) एक माणसनुं नाम
जिम्म धा० (जिम्) खावुं भोजन करवुं
जार धा० (जृ) जीर्ण थवु
जीव पु० (जीव) जीव, आत्मा
जीवणिकाय पु० (जीवनिकाय) जीव समुदाय
जीविअ न० (जीवित) जीवितव्य, जिंदगी
जीहा स्त्री० (जिह्वा) जीभ

जुज्झ धा० (युध्) युद्ध करवु लडाई करवी
जुद्ध न० (युद्ध) लडाई
जुव पुं० (युवन) जुवान नरुण पुरुष
जुवाण पु० (युवन जुवान तरुण पुरुष
जे अ० पादपूरणमां
जोणि स्त्री० (योनि) उत्पत्तिनुं स्थान
जोह पु० (योध) योद्धा, लडवैया
झगिति अ० सत्वर जलदी
झा धा० (ध्यै) ध्यावुं चिंतववुं
ठा धा० (स्था) उभा रहेवुं स्थिर रहेवुं
ठाण न० (स्थान) ठेकाणुं
ठिअ वि० (स्थित) उभेला
डज्झ धा० (दह) बळवुं दाझवुं
णरअ पु० (नरक) नरक दुःख स्थान
ण अ० (न) नहीं
णइ अ० नकार निषेध
णई स्त्री० (नदी) नदी
णज्ज धा० (ज्ञा) जाणवुं समजवुं
णणंदा स्त्री० (ननान्दृ) नणंद
णत्तुअ पु० (नप्तृ) दीकरा, दीकरीना दीकरा
णत्थि धा० (नास्ति न+अस्ति) नथी
णयर न० (नगर) शहेर
णर पु० (नर) माणस
णरिन्द पु० (नरेन्द्र) राजा

णम धा० (नम्) नमे स्पर्शुं प्र... करवो
णवर अ० केवल अथवा ...ं विशे...
णवरि अ० आनन्तर्यमां अर्थमां
णव न० पा० (नवन्) नव
णवि अ० वैपरीत्य
णाअ धा० (ज्ञा) जाणवुं समजवुं
णाइअण पु० (ज्ञातिजन) नातिला
णाइ अ० निषेधमां नहि अर्थमां
णाण न० (ज्ञान) ज्ञान
णामहेय न० (नामधेय) नाम
णासव धा० (नश+णि) नाश करावुं
णासिआ स्त्री० (नासिका) नाक
णि उप० (नि) भाग्य नीच
णिउंज धा० (नि+युज) जोडवुं गाडवुं
णिच्च अ० (नित्य) हमेशां सदा
णिज्जरह पु० (निजवध) पो... घात
णिन्दा स्त्री० (निन्दा) निन्दा अपवाद
णियच्छ धा० (नि+यम... ...वु वगर...
णियम पु० (नि...
णिर उप० (नि...
णिरवराह त्रि०... अ...
णिरिक्ख धा०...

णिरिक्खण न० [निरीक्षण]
अवलोकन
णिरुप धा० [नि+रुध्] रोकवुं
णिरुट्ट वि० [नि+वृत्त] निवृत्त
णिव पु० [नृप] राजा
णिसेह पु० [निषेध] ना मना
णीइ स्त्री० [नीति] न्यायमार्ग
नीति
णीरअ वि० [नीरज] रजरहित
निर्मल
णे धा० [नी] लई जवुं ल० जवुं
णेत्त न० [नेत्र] आंख
णेह पु० [स्नेह] प्रेम, प्रीति
ण्हा धा० [स्ना] नहावुं स्नानकरवुं
त स० [तद्] ते
तए स० [त्वया] युष्मद्ना तृतीयानु
एकवचन तें
तडाअ पु० [तडाग] तळाव सरोवर
तत्त न० [तत्त्व] पदार्थ, सार
तप्परिणाम पु० [तत्परिणाम] तेनु
परिणाम
तरणि पु० [तरणि] सूर्य
तरु पु० [तरु] झाड
तरुण वि० [तरुण] जुवान नवु
तव धा० [तप्] तपवुं, प्रकाशवु
तविंघण न० [तपइन्धन] तपस्या-
रूपी इन्धन
तहवि अ० [तथापि] तो पण
तहा अ० [तथा] तेम, तेवीरीते तेज,
त अ० वाक्यापन्यासमा अथमा
ताअ [illegible] पु] जनक, बाप

ताव अ० [तावत्] त्यांसुधी
ति अ० [इति] समाप्ति एवी रीत
ति स० या० [त्रि] त्रण
तित्थअर पु० [तीर्थङ्कर] जैनधर्मना
नायक
तिव्व त्रि० [तीव्र] तीक्ष्ण
तीर धा० [तॄ] तरवु पारपामवु
तुम्मे स० [यूय] तमे
तुम स० [त्व] तुं
तुम्हे स० [युष्मान्] तमने
तेअ न० [तेज] प्रकाश
तेण पु० [स्तेन] चोर लुटारो
ते [तव] युष्मद्ना षष्ठीनु एक वचन,
तारुं
तेरस स० या० [त्रयोदश] तेर
थुण धा० [स्तु] स्तुति करवी
थू अ० तिरस्कारना अथमा
दक्खरस पु० [द्राक्षारस] द्राक्षनो
रस
दया स्त्री० [दया] दया, अनुकम्पा
दर अ० इषत्, थोडु
दरवज्जिअ त्रि० [दे० ] भोगवाएल
दव्व न० [द्रव्य] द्रव्य
दस स० या० [दशन्] दश
दहि न० [दधि] दहीं
दड धा० [दह] दझवु
दस धा० [दृश्+णि] देखाडवुं
दसण न० [दर्शन] दर्शन जोवुं
दाण न० [दान] दान देवुं
दाम न० [दामन्] माला
दाव धा० [दृश्+णि] देखाडवुं

दिट्ठि स्त्री० [दृष्टि] दृष्टि नजर
दिणअ न० [दिन] दिवस
दिपण वि० [दत्त] आपेलु, दीधु
दीण वि० [दीन] गरीब असहाय
दीस धा० [दृश्] जोवु
दुग्गुण पु [दुर्गुण] अवगुण, दोष
दुज्जण पु [दुर्जन] दुर्जन
दुद्दसा स्त्री० [दुर्दशा] दुर्दशा
दुब्भ धा० [दुह] दोहवु
दुर् उप० [दुः] दुर्गत दुः खकर्ता
दुवालस स० धा० [द्वादश] बार
दुह न० [दुःख] कष्ट अशान्ति
दुहिआ स्त्री० [दुःखिता] दुःखी स्त्री
दूरज्झमाण त्रि० [ ] बालतु
दूम धा० [दु+णि] सतापवु दुःखी करवु
दे अ० अनुमीकरण तथा गर्होना आमन्त्रणमा
दे धा० [दा] देवु आपवु
देव पु० न० [देव] देव
देवर पु० [देवर] देर दियर पतिना नानो भाइ
देवी स्त्री० [देवी] देवांगना
देह पु० [देह] शरीर
दो सं० धा० [द्वि] बे
दोवारिअ पु० [दौवारिक] द्वारपाल
दास पुं० [दास] अवगुण
धअ पु० [ध्वज] ध्वजा, पताका
धण न० [धन] द्रव्य, दौलत
धणु न० [धनु] धनुष

धन्न न० [धान्य] अन्न, धान्य
धम्म पु० [धर्म] धर्म आचरण
धम्मणिट्ठ पु० [धर्मनिष्ठ] धर्मनिष्ठ
धर धा० [धृ] धरवु धारण करवु
धिइ स्त्री० [धृति] धीरज
धीर पु० [धीर] धैर्यवान पुरुष
धीवर पु० [धीवर] माछी
धुण धा० [धू] धुणवु कंपवु
धुत्त पु० [धूर्त] धुतारा, ठग
धुय धा० [धु] धुयवु, धोवु
धुव अ० [ध्रुव] निश्चय
धूया स्त्री० [दुहितृ] दीकरी
नयण पु० न० [नयन] आंख
नह न० [नभस्] आकाश
निअ धा० [दृश्] जोवु
निकिट्ठ त्रि० [निकृष्ट] अधम
निवास पु० [निवास] रहेठाण
णिसाद्पण्ण त्रि० [निशातप्रज्ञ] कुशाग्रबुद्धिवाला
निहि पु० स्त्री० [निधि] भण्डार
पअ न० [पद] पगलु, पग
पआस पु० [प्रकाश] अजवालु
पइ पु० [पति] धणी, स्वामी
प उप० [प्र] आगल, प्रारंभ, उत्
पउत्तव्व त्रि० [प्रयोक्तव्य] योग्य
पऊढ न० (दे०) घर, मकान
पच्चज पुं० (पत्तन्) पाखे
पक्खि पु० (पक्षिन्) पक्षी
पाक्खिअ त्रि० (पाक्षिक) पाखी

पच्चूह पु० [दे०] सूर्य
पच्छा अ० [पश्चात्] पछी
पट्टइल पु० [दे०] गामनो मुखी, पटेल
पड धा० [पत्] पडवुं
पडि उप० [प्रति] सामे उलटुं
पडिसमय न० [प्रतिसमय] दरेक क्षणे
Class copy
पडुय पु० [दे०] पाडा, भेंसो
पढ धा० [पठ्] भणवुं पाठ करवो
पणव धा० [प्र+नम्] नमवुं
पणीअ न० [प्रणीत] रसम
पत्त न० [पात्र] पातरुं, लायकातनुं ठाम
पत्त न० [पात्र] योग्य, अधिकारी, वासण
पत्तड त्रि० [दे०] सुन्दर
पत्तेअ अ० प्रत्येक, दरेक, एकेक
पत्थाव पु० [प्रस्ताव] अवसर
पद्धर त्रि० [दे०] पाधरुं, सिधुं
पन्नत्त त्रि० [प्रज्ञप्त] परूपेल
पन्नरस स० वा० [पञ्चदश] पंदर
पभाअ न० [प्रभात] प्रात काल
पमाअ पु० [प्रमाद] आलस्य, बदरकारी
पमोअ धा० [प्र+मुद्] खुशी थवुं,
पमोअ पु [प्रमोद] खुशाली
पय न० [पद] पद
पयट्ट त्रि० [प्रवृत्त] प्रवृत्त थएल
पयडि स्त्री० [दे०] मार्ग, रस्ता
पयत् धा० [प्र+यत्] प्रयत्न करवो
पया धा० [प्र+या] प्रयाण करवुं
पर वि० [पर] अन्य, बीजुं

परएस पु० [परदेश] देशावर
परज्झ त्रि० [दे०] पराधीन
परभव पु० [परभव] आवतो भव, बीजो भव
Last birth
परमत्थ पु० [परमार्थ] परोपकार
परलोअ पु० [परलोक] आवतो भव
परा उप० [परा] उलटापणुं, पाछुं
पराअ पु० [पराग] फूलना रजकणो
पराजय धा० [परा+जि] पराजय करवो
परिक्खा स्त्री० [परीक्षा] परीक्षा
परित्थी स्त्री० [परस्त्री] पारकी स्त्री
परिभस धा० [परि+भ्रंश्] भ्रष्ट थवुं
परिहर धा० [परि+हृ] परहरवुं, तजवुं, दूर करवुं
परोप्पर अ० [परस्पर] माहोमांहे
पलाय दे० चोर
पल्लव पु० [पल्लव] पत्रनी टोची
पवड्ढ धा० [दे०] सुवुं, शयन
पवण पु० [पवन] पवन २ ते नामनो एक राजा
पवत्त धा० [प्र+वृत्] वर्तवुं, प्रवृत्ति करवी
पव्वअ न० [पर्वत] पहाड
पवाह पु० [प्रवाह] प्रवाह, पोर
पसंग पु० [प्रसंग] प्रस्ताव
पसत्थ वि० [प्रशस्त] श्रेष्ठ, प्रशंसा पात्र
पसविर त्रि० [प्रसवशील] उत्पादक
पसाअ पुं० [प्रसाद] महेरबानी, कृपा
पसारि धा० [प्र+सृ+णि] पसारवुं, तांणुं करवुं
पसु पुं० [पशु] पशु,

पह पु [पथ] रस्तो माग पथ
पहाव पु० [प्रभाव] प्रनाप
पहिअ त्रि० [पथिक] मुसाफर
पहु पु० [प्रभु] समथ
पङ्कय न० [पङ्कज] कमन
पहुडिआ स्त्री० [दे०] पारा
पच्च स० धा [पचन्] पाच
पडिअ पु० [पडित] विद्वान
पाअ पु० [पाद] पग
पाअ पु० [पाद] पग, चरण
पाउरण दे कनन
पाउस पु [प्रावृट्] चोमामु
पाडिपक्क अ० प्रत्यक दरक हरक
पाडिक्क अ० प्रत्यक दरक एकक
पाढग पु० [पाठक] भणावनार
पाण पु० [प्राण] प्राण जीवन
पायस न० [पायस] दुधपाक
पाजक वि० ना म्क धरनो वरी, एक
पापा ब्राह्मण
पास धा० [दृश्] जोवु
पासाअ पु० [प्रासाद] हवेला मकान
पिंगला वि०ना० मनहरिनी स्त्री
पिंजर न० [पिंजर] पाजर
पि अ पण
पिअ धा० [पा] पीवु
पिअर पु० [पित] पिता बाप
पिउ पु० [पितृ] पिता बाप
पिउन्या स्त्री० [पितृस्वसा] फाइ
पिउसिआ स्त्री० [पितृस्वसा] फोइ
पिव अ० इवार्थक तुल्य माफ्य पठे

पिवासा स्त्री० [पिपासा] पाणना
तरस तृषा
पीइ स्त्री० [प्रीति] प्रेम
पीड धा० [पीड्] पीड्बु, दु ख देवु
पौणिमा स्त्री० [पौनन्द] नागड
पुष्ता
पुच्छ धा० [पृच्छ्] पुछवु, प्रश्न करवा
पुण धा० [पू] पवित्र करवु
पुण अ० [पुन] फरीने
पुणरुत्त अ० फरीथाजा प्रथमा
पुराण वि० [पूर्ण] पूर पुरु
पुत्त पु० [पुत्र] छोकरा
पुप्फरस पु [पुष्परस] फूलनु म:
पुरा अ० आगल, पहला
पुरिल्ल वि० [पूर्य] शरी
पुरिम पु० [पुरुष] आगाम
पुलइअ त्रि० [पुलकित] रोमाचित
थाग्ल
पुव्वकम्म न० [पूर्वकर्म] पूर्व भवना
कम
पुव्वरत्तावरत्त न० [पूर्वरात्र्यपर-
रात्र] मध्यगत
पुव्वि अ० [पूर्व] पहल
पूस धा [पुष] पापनु पामवु
पूस पु० [पूषन्] सूर्य
पूसाण पु० [पूषन] सूर्य
फल न० [फल] फल
बज्झ धा० [बन्ध] बाधवुं
बन्धु पु० [बन्धु] बान्धव
बम्हण पु [ब्राह्मण] ब्राह्मण
बल [बल] न० सैन्य बल, शक्ति

बले अ० निर्धारण तथा निश्चयना
अत्रमा

बहिं अ० [बहिस्] बहार

बहु वि० [बहु] घणु

बारस स० वा० [द्वादश] बार

बाल पु० [बाल] बालक, अज्ञाना

बाला स्त्री० [बाला] बालिका,
छोकरी

बाहिं अ० बहार अथमा

बाहिर अ० बहार अथमा

बीभन्छ वि० [बीभत्स] निन्द्य

बीह धा० [भी] डरवुं, बीवुं

बुज्झ धा० [बुध्] जाणवु समजवु

बुद्धि स्त्री० [बुद्धि] मति

बोह पु० [बोध] उपदेश

भअ न० [भय] बाक भीति

भक्खण न० [भक्षण] खावुं

भगिणि स्त्री० [भगिनी] बहेन

भण धा० [भण] भणवुं, बोलवुं

भत्त न० [भक्त] टेक

भत्त पु० [भक्त] सेवक, अनुचर

भत्तहरि त्रि० ना० भर्तृहरि नामना
गभा

भत्तार पु [भर्तृ] पति, धणी

भत्ति स्त्री० [भक्ति] भक्ति, बहुमान

भत्तिज्ज पु० [भ्रातृज] भत्रिजा

भत्तु पु० [भर्तृ] पति धणी

भम धा० [भ्रम्] भमवु फरवु

भमर प० [भ्रमर] भमरो
[भ्रम्+णि] भमाडवु
रखडाववु

भमिर त्रि० [भ्रमिणु] भमवाना
स्वभाववाला

भयअर वि० [भयकर] भयभीत

भर पु० [भर] जथ्था

भव धा० [भू] थवु, थवु

भव पु० [भव] जन्म, ससार

भविअजण पु० [भव्यजन] लायक
माणस

भविय वि० [भव्य] भव्य

भसल पु० [    ] भमरा

भा धा० [भी] डरवु, बीवु

भाअर पु० [भ्रातृ] भाइ

भाउ पु० [भ्रातृ] भाइ

भाउजाया स्त्री० [भ्रातृजाया]
भाभाइ

भाउज्जा स्त्री० [भ्रातृजाया]
भाभी

भाणु पु० [भानु] सूर्य

भिन्द धा० [भिद्] भेदवु, फाडवु

भुज्ज धा० [भुज्] खावु, उपभोगमा
लवु

भुञ्ज धा० [भुज] खावु, भोगववुं

भूवइ पु० [भूपति] राजा

भोअ पु० [भोग] इन्द्रियविषय

भोअण न० [भोजन] जमण

मस न० [मांस] मास

मइरा स्त्री [मदिरा] दारू, मद्य

मए [मया] (अस्मद् तृतीयानु एक
वचन) में

मग्ग पु० [मार्ग] रस्तो

मच्चु पु० [मृत्यु]

मज्झे अ० [मध्ये] मांही
मण धा० (मन्) मानवु वखूत स्मवु
मण न० [मनस्] मन अंत करण हृदय
मणिअ अ० [मनाक्]थोडुं
मणे अ० विचार करवाना अथमा
मणोरह पु० [मनोरथ] विचारणा
मत्त वि० [मात्र] मात्र
ममभाव पु० [ममभाव] ममत्व
मयण पु० [मदन] मदन काम
विकार
महव्वय न० [महाव्रत] साधुनां
पंचमहाव्रत
महापुरिस पु० [महापुरुष] महात्मा
पुरुष
महावीर वि० ना० चोवीसमा
तीर्थंकरनु नाम
महिम पुं० स्त्री० [महिमन्] गौरव
महिला स्त्री० [महिला] स्त्री
महुर वि० [मधुर] मीठुं
मा अ० निषेधमा नहि ए अथमा
मा अ० [मा] नहि निषेध
माअरा स्त्री० [मातृ] माता देवी
माआ स्त्री० [मातृ] माता जननी
माआपिअर पुं० [मातापितर] मा
बाप
माइ स्त्री० [मातृ] माता जननी
माइ अ० निषेधमा नहि ए अथमा
माउ स्त्री० [मातृ] माता जननी
माण न० [मान] अभिमान
माणुस्स न० [मानुष्य] मनुष्य
सम्बन्धी, मनुष्यपणु

मामि अ० सखीना आमंत्रणमां
माया स्त्री [माया] कपट
मारि धा० (मृ+णि) मरावबु
मालारी स्त्री०[मालाकारी] मालण
माला स्त्री० [माला] फूलनी माला,
नवकारवाली
मास पु० [मास] महीना
माहप्प पु० न० [माहात्म्य] म
हात्म्य
मिअ वि० [मित] परिमित
मिउ वि० [मृदु] कोमल
मियावइ वि० ना० [मृगावती]
उदायन राजानी माता
मिलाण वि० [म्लान] करमाइ गएल
मिव अ० इवार्थक तुल्य सा श्य, पर
मिहुण न० [मिथुन] संयोग
मुअ धा० [मुच्] मुकवु छोडवु
मुक्ख पु० [मोक्ष] मुक्ति
मुणि पु [मुनि] मौनव्रतधारी साधु,यति
मुत्त वि० [मुक्त] छुटो, मुक्त
मुत्ति स्त्री० [मुक्ति] मोक्ष कल्याण
मुद्दिआ स्त्री० (मुद्रिका) महोर
मुद्ध पु० [मूर्धन्] मस्तक
मुद्धाण पु० [मूर्धन्] मस्तक
मुसा स्त्री० [मृषा] जुठुं
मुह न० [मुख] मुख
मूल पु० [मूल] आद्यभाग, आदि
कारण
मेत्ती स्त्री० [मैत्री] मित्रता प्रेम
मेह पु० [मेघ] वादल वरसाद
मोअअ पु० [मोदक] लाडवो

ोक्ख (मोक्ष) पु० मुक्ति
ोरउल्ला अ० वृथा, मुधा अथर्मा
ंत्तणा स्त्री० (यत्रणा) पीलवानुं यन्त्र
ग न० (जगत्) दुनिया
। स० (यद्) ज
ंज धा० (रज्) रक्त थवुं रजन करवु
ः अ० पादपूरणमा
ंअ न० (रजस्) रता, धूल रजकण
क्ख धा० (रक्ष्) रक्षण करवु पालनुं सभाल करवी
ज्ज न० (राज्य) राज्य
ज्जु स्त्री० (रज्जु) दोरडी
ंत्तिआ स्त्री० (रात्रि) रात
मे धा० (रम्) रति पामवी क्रीडा करवी, रमवु
म्म वि० (रम्य) रमणीक
ंस पु (रस) स्वाद, २ स्वादयुक्त प्रवाही पदार्थ
रसाल वि० (रसाल) रसयुक्त
रह पु० (रथ) रथ
रहस्स न० (रहस्य) गुप्ततत्व
राअ पु० (राजन्) भूपति राजा
माण पु० (राजन) भूपति, राजा
ाईसर पु० (राजेश्वर) महाराज
ाम वि० ना० रामचंद्र सुयवशना प्रसिद्ध राजा
ंज धा० (रज्+णि) रंजन करवु
ावण वि० ना० लंकाना राजा
ीसि पु० (ऋषि) धमगुरु साधु

रीइ स्त्री० (रीति) रस्तो, प्रकार, आचार
रुंभ धा० (रुध्) रोकवुं अटकाववुं
रुय धा० (रुद्) रोवु
रुप्पग न० (रूप्यक्) रूपीआ
रुव्व धा० (रुद्) रोवु आसु खरवा
रे अ० सबोधन, कलह
रोव धा० (रुद्) रोवुं
लग्ग धा० (लग्) लागु करवु नीचे करवु
लक्ख स० वा० (लक्ष) लाख
लक्खमण वि० ना० रामचद्रजीना नाना भाइ
लच्छी स्त्री० (लक्ष्मी) लक्ष्मी
लज्जा स्त्री० (लज्जा) लाज, शरम
लब्भ धा० (लभ्) मेलववु पामवुं
लय पु० (लय) साम्यावस्था
लवली स्त्री० (लवली) लताविशेष
लह धा० (लभ) पामवुं मेलववुं
लहिद वि० (रहित) शिवाय
लहु वि (लघु) न्हाना
लाच पु (राजन्) राजा
लिम्भ धा० (लिह्) चाटवुं
लुण धा० (लू) लणवुं कापवु, छेदवुं
लुम्बी स्त्री० ( ) द्राक्ष विगेर फलनी लुम
लेस पु० (लेश) थाडु अश
लोअ पु० (लोक) दुनिया
लोह पु० (लाभ) लाभ वगुणाइ
व अ० इवार्थक तुल्य, सादृश्य, पट

वच्छ पु० (वृक्ष) झाड
वच्छर पु० (वत्सर) वरस
वट्ट धा० (वृत्) वरतवु रहवु
वड्ढ धा० (वृध्) वधवु
वण न० (वन) जगल
वणप्फइ पु० (वनस्पति) लीलोतरी औषधि
वणिआ स्त्री० (वनिता) स्त्री रामा
वणे अ० निश्चय विकल्प तथा अनुकम्पाना अर्थमां
वत्थ न० (वस्त्र) कपडुं
वय धा० (वद्) बोलवु कहेवु
वय न० (वयस्) उम्मर
वयण न० (वचन) वाणी
वयण पु० न० (वचन) वचन
वर वि० (वर) प्रधान श्रेष्ठ
वरिस न० (वर्ष) वरस, सवत्सर
वल धा० (वल्) पाछा आववु, वळवु
वलग्ग धा० (आ+रुह्) चढवु, उपर बेसवु
वल्लह वि० (वल्लभ) प्रिय वत्सल
वव्वर वि० (बर्बर) जगली मूर्ख
वस धा० (वस्) वसवु रहेवु
वह धा० (वह्) उपाडी जवु
व्व अ० स्वार्थक तुल्य साम्य पर
वांछ धा० (वाञ्छ्) इच्छवु
वा अ० अथवा
वाउ पु० (वायु) वायरो
वागरण न० (व्याकरण) व्याकरण, भाषाशास्त्र
वाणिअ पु०(वणिज)वेपारी,वाणीओ

वावार पु० (व्यापार) उद्योग
वास न० (वर्ष) वरस
वि अ० (अपि) पण
वि अ० पण
वि उप० (उप) विशेष विरह, वि
विअ अ० इवार्थक, तुल्य, साम्य
वि+अस धा० (वि+कस्) वि पामवु
विआर पु० विकार, विकृति
विआर पु० (विचार) मनोभाव
विउल त्रि० (विपुल) घणुं
विकअ वि० (विरत) विकारपा
विघट्टण न० (विघट्टन) अलग
विजअ पु० (विजय) विजय
विज्जा स्त्री० (विद्या) ज्ञान, भ
विढव धा० (अर्ज्) एकठु करवु
विणय पु० (विनय) नम्रता, वि
विणा अ० (विना) वगर
विणेअ पु० (विनेय) विनीत शि
वित्त न० (वित्त) धन,लक्ष्मी
वित्थर पु० (विस्तार) खुलासा
विभाअ पु (विभाग) जुदा जुदा
विरह पु० (विरह) वियोग
विरूव त्रि० (विरूप) विपरीत
विलया स्त्री० (वनिता) स्त्री
विव अ० इवार्थक तुल्य, साम्य
विवज्जियदंसणाअ त्रि० (विवर्जितदर्शनाय) आधादि रहित
विवाह पु० (विवाह) लग्न प्र
विविह वि० (विविध) नानाप्र

सफल वि० (सफल) सार्थक
सभा स्त्री० (सभा) पषदा, सभा
समतुस धा० (सम्+तुष्) संतोष पामवु
समण पु० (श्रमण) साधु
समणोवासग्र पु० (श्रमणोपासक) साधुनी उपासना करनार, श्रावक
समत्थ वि०(समर्थ) शक्त पहोंचवाला
समप्पणीय वि०(समर्पनीय) सोंपवा लायक
समय न० (स्वमत) पोताना मत
समस्त वि० (समस्त) सघलुं, बधु
सम्म न० (शर्मन्) सुख
समिद्धि स्त्री०(समृद्धि) वैभव, ऋद्धि
समूह न० (समूह) जत्था, समुदाय
सय अ० (स्वय) पोते
सय अ०स्वय पोते पाताना जाते
सया अ० (सदा) हमेशा
सयाणीय वि० ना० (शतानीक) उदायनना पिता
सर न० (सरस्) तलाव
सर पु० (शर) बाण
सरअ पु० (शरत्) शरदऋतु
सरल वि० (सरल) निष्कपट, भोला
सवण न० (श्रवण) श्रवण, सांभलवु
सव्व स० (सर्व) बधा, समस्त
सव्वघाइ वि०(सर्वघातिन्) सर्वनो घात करनार
सह अ० (सह) साथ
[illegible]) सहन करवु

सहस्स स० वा० (स[illegible]
सहस्साणीय वि० ना० (सहस्र[illegible]नीक) उदायनना दादा
सहिस्त्तण पु० (सहिष्णुता) [illegible] शालता
साण पु० (श्वन्) कुतरो.
सामाइअ न० (सामायिक) सामयिक
[illegible]मि पु० (स्वामिन्) मालिक [illegible]
सारहि [illegible] (सारथि) रथ हाक[illegible]
साला स्त्री० ([illegible]ला) निशा[illegible] [illegible]शाल
सावज्ज वि० (सावद्य, [illegible]
सावज्झ वि० (सावद्य) दो[illegible]
सावराह वि० (सापराध) [illegible] सहित
साह धा० (साध) साधवु
साहज्ज न० (साहाय्य) [illegible]
साहु पु (साधु) आत्मिक [illegible]
सिक्ख धा० (शिक्ष) [illegible]
सिक्खा स्त्री० (शिक्षा) शिक्षा
सिक्खावइय त्रि० (शिक्षा[illegible] शिक्षाव्रतयुक्त
सिग्घ अ० (शीघ्र) उतावलथी
सिज्झ धा० (सिध्) सिद्धथवु
सिणाण न० (स्नान) न्हावु
सिप्प धा० (सिच्) सिंचवु
सिप्प धा० (स्निह्) स्ने[illegible] [illegible]